बापू ने कहा था

बापू की अंतिम झांकी नाटक रूप में

श्री शंभूदयाल सकसेना

नवयुग ग्रंथ कुटीर
बीकानेर

प्रकाशक
वीरेन्द्रकुमार बी. ए.,
नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर

प्रथम मुद्रण

मूल्य
३०० न पै.

मुद्रक
शेखर बी. ए,
एजूकेशनल प्रेस, बीकानेर

आभार और क्षमा याचना

गांधी-साहित्य के कई ग्रंथों से इस नाटक की सामग्री ली गई है। उनके लेखकों के प्रति विनम्रतापूर्वक आभार प्रदर्शित किया जाता है। तथ्यों की भूमि पर कल्पना का भवन-निर्माण करते समय पात्रों के मुंह में जो संवाद कहलाये गये हैं वे निर्दोष हृदय के उद्गार हैं। संभव है किसी पात्र के साथ न्याय न हो पाया, हो, तो उसे लेखक की असावधानी मान-कर क्षमा किया जाय। दरअसल समसामयिक व्यक्तियों को नाटक के पात्र के रूप में लेना और उनको उनके अनुरूप बनाये रखना कठिन ही होता है। कल्पित पात्रों के संबंध में काफी छूट रहती है।

सेनानी कार्यालय, बीकानेर — शंभूदयाल सक्सेना

अभिनय के लिए सुझाव

इस नाटक का अभिनय करना हो तो लबे सवाद आसानी से सक्षिप्त किये जा सकते है, पात्रो की सख्या घटाई जा सकती है और बीच के एक दो दृश्यो को छोडा जा सकता है। नाटक को एक बार पढ़ जाने से निर्देशक के लिए ऐसा करना कुछ कठिन न होना चाहिए।

—लेखक

बापू ने कहा था

(रचनाकाल सितबर १९५८)

'हम इन्सानो की किस्मत मे यही वदा है कि अपराधी के पापों का फल निरपराध को भोगना पडे। यही ठीक भी है। निरपराधियो के मुसीवतें सहने की वजह से ही दुनियां ऊपर उठती और वेहतर वनती है।'

—गांधी जी
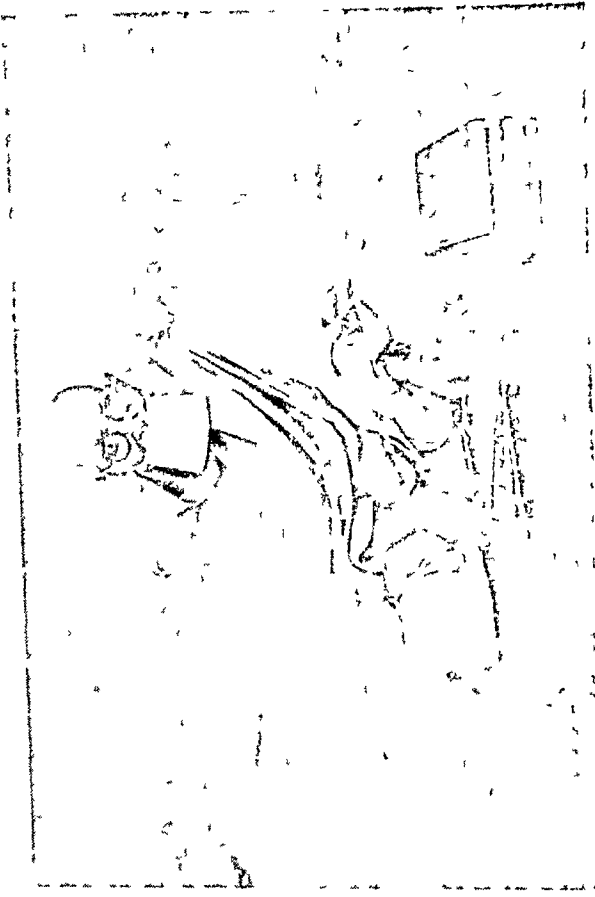
श्री भैरोदान सेठिया ९३ वर्ष की अवस्था मे

समर्पण

इस मरुस्थली को ज्ञान-दीप्त रखने में
जो एक युग पर्यन्त कारण रहे हैं
उन परम श्रद्धेय श्री भैंरोदान सेठिया को
उनकी ६३वीं वर्षगांठ पर सादर समर्पित

बापू ने कहा था

नाटक

नाटक के प्रधान पात्र

पुरुष

बापू (महात्मा गांधी)	भारत के राष्ट्रपिता
सरदार वल्लभ भाई पटेल	भारत के उप-प्रधान मंत्री, कांग्रेसी नेता
जवाहरलाल नेहरू	भारत के प्रधान मंत्री, कांग्रेसी नेता
डॉ० जाकिर हुसेन	जामिया मिलिया के अध्यक्ष
आचार्य कृपलानी डॉ० राजेन्द्र प्रसाद	कांग्रेस के हिन्दू नेता
मौलाना अब्दुल कलाम आजाद	कांग्रेसी मुस्लिम नेता, मन्त्रिमंडल के सदस्य
बाबा बचित्तर सिंघ	सिक्ख नेता
शेख अब्दुल्ला	काश्मीर के प्रधान मंत्री
गणेशदत्त गोस्वामी	हिन्दू महासभा के नेता
इमाम साहब	महरौली की दरगाह के इमाम
ब्रजकिशन प्यारेलाल	बापू के सहायक और मंत्री
रामदीन हरलाल	दिल्ली के नागरिक

ठाकुरदत्त शर्मा	
गुरादित्ता	
ध्यानसिंह	
मेलाराम	
जेठामल	हिन्दू-सिक्ख शरणार्थी नेता
ब्रजकिशोर	
देवराज	
अमीचंद	
नाथूराम विनायक गोडसे	बापू का हत्यारा

स्त्री

राजकुमारी अमृतकौर	प्रसिद्ध नेत्री, कार्यकर्ती और मंत्रिमंडल की सदस्या
मनुबहन गांधी	बापू की संबंधी लड़कियां, जिन्हें
आभा गांधी	बापू ने बेटी बना लिया था
सुचेता कृपलानी	आचार्य कृपलानी की पत्नी और कार्यकर्ती
मीरा बहन	बापू की अंग्रेज शिष्या (मिस स्लेड)
डॉ० सुशीला नैयर	बापू की शिष्या

हिन्दू-सिक्ख शरणार्थी, मुसलमान, ईसाई, पत्रकार, नेता और विदेशी राजदूत आदि आदि

को पढ लेते हैं। मनु गाधी और आभा गाधी के कधों पर दोनों हाथ रखकर वे कापते से उठते और खुले द्वार पर खडे हो जाते हैं।)

बापू सरदार !

सरदार . आइये।

(आगे बढकर साभिवादन हाथ बढा दते हैं और सहारा देकर बापू को उतारते हैं। बापू नीचे उतर कर एक एक से मिलते है। सब हाथ जोडकर मौन अभिवादन करते है। कोई किसी तरह से शातिभग नही करता।)

बापू ईश्वर न जाने कौन सी परीक्षा लेना चाहता है। कलकत्ता से दिल्ली वह ले आया है। सदा प्रसन्न दिखाई देने वाली दिल्ली आज मुर्दो के नगर की तरह उदास लग रही है। स्टेशन पर से ही उसकी शोचनीय दशा का अनुमान हो रहा है। सरदार, कुछ बोलते क्यो नही हो ? क्या यही हमारी आजादी है ?

सरदार ऐसी ही बात है। दिल्ली मे भी दगा भडक उठा है। (दुख से सिर झुका लेते हैं।) चलिए।

बापू चलो, यहा ठहरे रहने के लिए थोडे ही आया हूँ। मेरा भगवान आगे आगे मेरे लिए काम तैयार रखता है। नोआखाली जाना था, लेकिन कलकत्ते से आगे कहाँ बढ पाया ? कलकत्ते की तूफानी घटनाओ ने मुझे वही जकड लिया।

(सब धीरे धीरे प्लेटफार्म से बाहर की ओर बढ़ते हैं।)

सरदार : कलकत्ते मे तो अब शाति है ?

बापू : यह कैसे कह सकते है पर हाँ नेताओ ने जैसा आश्वासन

सिखाया है उससे तो शांति की आशा कर सकते हैं। अगर इन्सान हैवान न हो जाय, अगर नेता सत्याचरण करें तो

सरदार . यही तो, नेता लोग जनता को गुमराह न करें तो गुण्डों की भला चल सकती है ?

बापू सत्ता के लोभी गुण्डों से लाभ उठाते हैं। गुण्डों के भी हृदय होता है। वे उतने बुरे नहीं होते। कलकत्ते में गुण्डों ने ही चमत्कार दिखाया। उनके दल के दल मेरे पास आये। अपराध स्वीकार किया। ढेर के ढेर हथियार लाकर समर्पित कर दिये। नगर की शांति का जिम्मा लिया। मेरा उपवास भंग कराने में उनका बड़ा हाथ है। यदि वे न चाहते तो मैं क्या यह दिन देख सकता ? तब शायद तुम्हें और जवाहरलाल को मैं देखने को भी नहीं मिलता।

सरदार · गुण्डों को धन्यवाद है परन्तु यह स्थिति

बापू भयावह है। दिल्ली हो या कलकत्ता, हिन्दुस्तान हो या पाकिस्तान, सब जगह के अगुआ लोगों को ईमानदार होना चाहिए। आजादी का मीठा फल तभी चखा जा सकता है जब हम आचरण में ईमानदारी बरतें।

सरदार यही आकाश कुसुम लगता है। अगुआ लोगों का हृदय आप बदल सकें तो मैं मानूं।

बापू · हूं। (सोच में पड जाते हैं।)

राजकुमारी · (सरदार से) बापू, दोनों लडकियां और आप एक गाड़ी में चलेंगे। बाकी लोग मेरे साथ आ रहे हैं।

(सरदार मोटर का द्वार खोलकर बापू और मनु बहन व आभा बहन को बिठाते हैं। आप आगे ड्राइवर के बराबर जा बैठते हैं।)

सरदार (धीरे से ड्राइवर से) बिड़लाभवन। (गाड़ी चल पड़ती है।)

बापू भंगी-बस्ती मे नही ?

सरदार · नही दिल्ली मे कही जगह नही है। भंगी-बस्ती शरणार्थियो मे भरी पड़ी है।

बापू मेरी सुरक्षा के डर से तो नही ?

सरदार नही उसका प्रबंध तो हो सकता है। आपका वहीं के लिए आग्रह हो तो

बापू नही। बिड़ला-भवन मे भी पहुँच कर मुझे खुशी ही होगी। वहा तो अक्सर पहले मैं ठहरा करता था। मैं भंगी-बस्ती के वाल्मीकि भाइयो के बीच ठहरूँ या बिड़लाभवन मे दोनो जगह बिड़ला-बन्धुओ का ही मेहमान बनता हूं। उनके आदमी ही भंगी-बस्ती मे भी मेरी सार-सभाल करते हैं। शरणार्थी भाइयो को मेरे लिए असुविधा हो इससे तो यह प्रबंध ठीक ही है। परन्तु सरदार बिड़ला-भवन तो फर्नीचर से भरा है। मेरे कमरे मे वह सब हटा देना होगा।

सरदार · और आपसे मिलने लोग आवेंगे वे कहा बैठेंगे ?

बापू मैं धरती पर बैठूँगा, वे भी धरती पर बैठेंगे।

सरदार · अच्छी बात है। यह सब आप जैसे महात्मा को ही

शोभा देता है।

(मोटर रुकती है। शोफर द्वार खोलता है। सब बिडला भवन मे प्रवेश करते हैं।)

परदा बदलता है

दृश्य दूसरा

हुमायूँ का मकबरा, मेवों की छावनी

उसी दिन का दोपहर

(अलवर और भरतपुर की रियासतों से निकाले हुए मेव हजारों की सख्या मे वहाँ पडे हैं। स्त्री-बच्चे, बूढ़े-जवान सभी हैं। भागते समय जो कुछ ला सके हैं वही उनके साथ है। बहुत से लोग खाली हाथ ही भागे हैं। अधिकाश पुरुष केवल सूथन पहने हैं। स्त्रिया सूथन और ओढनी या घाघरा और ओढनी पहने हैं। परन्तु सबके कपडे फटे-पुराने और बेहद मैले हो रहे हैं। कई स्त्री, पुरुष और बच्चे घायल हैं। कुछ पडे हैं, कुछ बैठे हैं परन्तु सब खोये खोये से और दुखी व अभाव-ग्रस्त हैं। चिता, त्रास और दुःख उनके चेहरों पर छाया हुआ है। कहीं किसी के आने की आहट होती है तो सब के सब चौकन्ने होकर देखने लगते हैं। बुझी हुई आग की तरह

यह मानव समुदाय हुमायूँ के मकबरे मे शरण ग्रहण किये हुए है। महात्मा गाधी की मोटर का शब्द सुनकर वे खडे होकर देखने लग जाते हैं। मोटर मकबरे के पास आकर रुकती है। मनु बहन के कधे पर हाथ देकर महात्मा जी उतरते है। उनका चेहरा गभीर और तमतमाया हुआ है। डॉ० जाकिर हुसेन और राजकुमारी पैर बढाकर साथ-साथ चलने लगते हैं। कुछ मेव आगे बढ़कर उनसे मिलते और वे छावनी मे प्रविष्ट होते हैं।)

बापू (जाकिर हुसेन से) अफसोस है आजाद भारत मे मैं यह सब देखने के लिए जिदा हू।

जाकिर हुसेन आदमी की जहालत का नमूना !

राजकुमारी इन्सान आज हैवान से बदतर हो गया है।

बापू ईश्वर सबका भला करे। मैं क्या देख रहा हू ? भाई भाई को राह का भिखारी बना दे इससे बडा पाप इस दुनिया मे और क्या हो सकता है ?

(सब धीरे धीरे लोगों के बीच मे से होकर आगे बढते हैं। स्त्रिया और बच्चे रोते बिलखते हैं।)

जाकिर हुसेन सब्र रखो भाइयो। बापू हमारे दुख-दर्द को सुनने के लिये आ गये है।

बापू : मै देख रहा हू तुम्हारे साथ बहुत बुरा सलूक हुआ है, पर इस तरह रोने से काम नही चलेगा। ईश्वर के रहम और उसके इन्साफ पर भरोसा रखने से बडे से बडा दुख सहनेलायक हो जाता है।

एक मेव : (दीनतापूर्वक) हमे उबारिये। आप ही हमे बचा सकते है।

बापू . मै एक दुर्बल इन्सान हू। तुम्हारी ही तरह बेबस हू। मेरे पास किसी तरह का बल नही है। एक ईश्वर पर यकीन रखता हू। तुम सब से भी यही कहता हू कि तुम भी उस पर भरोसा रक्खो। उसी मे यह ताकत है कि वह दोनो सरकारो को, रहनुमाओ को और अधिकारियो को अपना फर्ज अदा करने की सन्मति दे सकता है।

दूसरा मेव : हमारा घर-बार छूट गया, हमारे ढोर और खेती छिन गई, हमारी धन-दौलत चली गई, हमारे सगे-सबधी मौत के घाट उतार दिये गये, हमारी औरतो की बेइज्जती हुई, हमारे बच्चो का कत्लेआम हुआ और अब हम रास्ते मे भूख-प्यास मे तडपते पडे है। मुसलमान दोस्तो ने जो कुछ भेज दिया है उसके सिवा हमारे पास खाने की कोई चीज नही है।

बापू . यह सब देखकर मेरा सिर शर्म मे झुक जाता है। एक हिन्दू होने के नाते मै अपने को गुनहगार महसूस करता हू। बँटवारे से पहले कायदे आजम, लियाकत अली ने नेहरू और पटेल के साथ ऐलान किया था कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान मे अकलियत को अकसरियत की तरह ही सारे हक हासिल होगे। उन पर किसी तरह का जुल्म न किया जा सकेगा। उन्हे आज देखना है कि क्या हो रहा है। उनका, लाचारी दिखाकर' यह कहने से काम नही चलेगा कि यह तो गुण्डो का काम है। सारी जिम्मेदारी दोनो ओर के

अधिकारियो को अपने सिर लेनी होगी ।

पहला मेव हमे सरकारो मे कोई उम्मेद नही है ।

बापू उम्मेद रखनी चाहिए । दोनो देशो की सरकारो का यह फर्ज है कि वे जान की बाजी लगाकर शरणार्थी-समस्या को रोके। पश्चिमी पजाब की दर्द भरी कहानिया सुनने और पढने वालो के दिलो को मथ डालती हैं । कोटा, नवाबशाह और कराची के हत्याकाड दिल दहलानेवाले है । इसे गुण्डो की करतूत कह कर दरगुजर नही किया जा सकता ।

दूसरा मेव : तो आप हमे क्या करने को कहते हैं ?

बापू जो इस देश को अपना वतन समझते है उनके लिए मेरी एक ही सलाह है कि वे मर मिटें पर अपना घर न छोडे ।

दूसरा मेव हमारा घर अब रहा कहा है ? हम लौटकर जाये तो हमे वहा कौन टिकने देगा ?

बापू मै नही कहता कि आज ही लौट जाओ । उसके लिए हालात पैदा करने होगे । सरकारो को अपना काम करने दो । हिन्दू और सिक्ख अपने अपने घरो को लौटेंगे । तुम्हारे खेत और घर खाली करा कर तुम्हे दिये जायेगे । ऐसा नही हो सकता कि दोनो देशो मे कानून-कायदा रहे ही नही ।

पहला मेव आप कहते है तो हमे मजूर है पर कुछ लोग ऐसे है जो यहा रहना नही चाहते ।

बापू वे खुशी से जा सकते हैं । उन्हे सलामती से पहुचाने का प्रबध किया जायगा । अचानक सैलाब आ जाने से सरकार को भी कुछ

करते धरते नहीं बनता। फिर आज हमारी हालत भी खराब है। देश मे न अन्न है, न कपड़ा। हम भूखे नगे लोगो ने आजादी जैसी कीमती सपदा पाई है। उसे बुद्धिमानी से सहेजकर रखना है। यदि ऐसे समय हमने गफलत की तो आई हुई आजादी चली जायगी। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनो गुलाम के गुलाम रह जायेंगे।

ज़ाकिर हुसेन भाइयो, महात्मा जी हिन्दू और मुसलमान दोनो के एक से खैरख्वाह है। जो जहा आफत-जदा है उनकी हिमायत करना और उन्हे उबारना इनका काम है। ये हमारे लिए कलकत्ते से दौडकर आ गये है और सबसे पहले तुम्हारे पास आये है। इन्होने हमे गले लगा लिया है तब कोई ताकत नहो जो हमारा बाल बाका कर सके। तुम धीरज रखो और कोई काम ऐसा न करो जो सरकार की मुश्किलो को बढानेवाला हो। इस कठिन वक्त मे जैसा भी मिले उस पर गुजर करो। कहर के बादल फट गये है। खुदा के रहम की किरणे तुम्हारे ऊपर पडनेवाली है।

बापू एक बात और। हम चाहते है कि तुम मुसीबत मे भी इन्सानो की तरह रहो। जहा हो, उस जगह की सफाई पर उतना ही ध्यान दो जैसा अपने घरो पर देते। अपने रहन-सहन मे भी किसी तरह की गन्दगी इसलिए मत आने दो कि खाने-पहरने की तगी है। मेवो को जरायमपेशा बनकर नही बल्कि भारत के स्वतन्त्र व सम्मानित नागरिक होकर रहना है।

सब—ऐसा ही होगा। हम आपके एहसानमद हैं।

परदा बदलता है

दृश्य तीसरा

प्रार्थना सभा स्थल

उसी दिन का सायंकाल

(बापू अपने आसन पर विराजमान। मनु बहन और आभा गांधी प्रार्थना-संगीत के उपरांत अपने अपने स्थान पर जा बैठी हैं। कुछ नेता लोग भी सभा मे उपस्थित है। बापू के चेहरे पर थकावट और परेशानी के बावजूद एक तरह का प्रकाश है। उनके तप-तेज से सभा मे शांति है। जनता थोडी है और उनके मुँह से प्रवचन सुनने के लिए उत्कंठित है।)

बापू यह दिल्ली की सभा है। दिल्ली को आज किसी की बात सुनने की गरज नही है।

एक भाई · (धीरे से) शहर मे कर्फ्यू लगा है। ~

बापू कर्फ्यू के हालात तो हम दिल्लीवालो ने ही पैदा किये है। हिन्दू-सिक्ख शरणार्थी भी तो आज दिल्लीवाले ही है। आज दिल्लीवालो ने कानून-कायदा अपने हाथो मे ले लिया है। आज उन्हे अपने मंत्रियो पर भरोसा नही। अमलदरामद करनेवाले अधिकारियो के प्रबंध की जरूरत नही। पाकिस्तान मे निरपराध सिक्ख और हिन्दुओ पर जुल्म हो रहे है, उन्हे वहा से निकाला जा

रहा है, कत्ल किया जा रहा है तो उसका बदला दिल्लीवाले यहा के मुसलमानो को मार कर लेंगे। उन्हे या तो उसी तरह नेस्तनाबूद कर दिया जायगा या देश से बाहर खदेड दिया जायगा। ऐसा करने मे यह देखने की भी जरूरत नही कि वे अपराधी है या निरापराध।

एक श्रोता तो हम क्या करे ? चुपचाप बैठे अपने भाइयो का कत्ल देखते रहे ?

बापू मै जामिया मिल्लिया मे ठहराये गये शरणार्थियो से मिला। मैने दीवान हॉल, वेवल कैंटीन और किंग्सवे की शरणार्थी छावनिया भी देखी। उनमे रह रहे हजारो हिन्दू-सिक्ख शरणार्थियो की दर्द भरी कहानियाँ सुनी। मेरा हृदय और मन आहत हो गया। फिर भी मैंने उनसे उलट कर पूछा पाकिस्तान का यह काम क्या घृणित से घृणित पाप नही है ? सबने इसे माना, तब मैने कहा हिन्दुस्तान मे भी हम वही करे तब भी तो वह पाप ही रहेगा ? उनके जिस काम को हम बुरा कहते है उसी को खुद करेंगे तो भला कैसे बन जायगा ?

एक सिक्ख सरदार आप की तरह पाकिस्तान का कोई नेता महात्मा नही है।

बापू वहाँ कई गुस्से भरे चेहरो ने मुझे बहुत कुछ बुरा-भला सुनने को मिला। उन्होने रोष के साथ मुझे कहा—'हम लोगो की तरह आपने मुसीबतें नही सही है। हमारी तरह आपके भाई-बेटे और सगे-सबधी मारे नही गये है। हमारे जैसे आप दर दर के

भिखारी नही बनाये गये हैं। आप हिन्दुस्तान की राजधानी मे शाति और अमन रखने के लिए हमे यह सब भूल जाने की सलाह किस तरह देते है ?' यह बात सही है कि मेरे भाई-बेटे मारे नही गये है पर जो हिन्दू, मुसलमान या सिक्ख इस पागलपन मे मारे गये है उनके लिए क्या मुझे दुःख नही है ? पर मरे हुए लोगो को वापस लाना नामुमकिन है और बदला लेना तो किसी तरह सही नही है। मुझे पक्का विश्वास है कि बुराई का बदला बुराई से चुकाने से कोई फायदा नही होता। भलाई के बदले भलाई करना भी कोई बडी बात नही है। बुराई का बदला भलाई से चुकाना ही सच्चा रास्ता है।

एक श्रोता हम दिल्ली मे अमन और शाति रखना चाहते है, आपने जो रास्ता बताया है उस पर चलना चाहते हैं, पर यहा के मुसलमानो के पास खतरनाक हथियार है। उनके पास गुप्त बारूद-खाने हैं। हम शरणार्थी तो क्या वे यहा की फौज और पुलिस से मोर्चा लेने की स्थिति मे है। क्या यह बात आपको मालूम है ?

बापू मैंने सुना है कि कुछ मुसलमानो द्वारा मशीनगनो और बदूको से गोलीबार करने के कारण सब्जीमडी मे शाक-भाजी मिलना बन्द हो गया है। मैं जहाँ रहता हू उस मकान मे शाक-सब्जी नही मिलती। इसके लिए मुसलमानो को मेरी सलाह है कि वे अपने हथियार तुरन्त यहा की सरकार को सौप दें। हिन्दू और सिक्ख भी अपने अपने हथियार जमा करा दे। किसी के पास बिना लाइसेन्स का हथियार न रहे। पश्चिमी पजाब की सरकार वहाँ के मुसलमानों

को हथियार बाट रही है, अगर यह सच भी हो तो भी यहाँ के नागरिक अपनी सुरक्षा का सवाल सरकार के हाथो मे सौपकर एक मिसाल कायम करे।

एक भाई (खडे होकर) हम प्रार्थना-सभा मे है। क्या यह चर्चा उसी का एक अग है?

बापू : मैं जो कहता हू, जो वहन करता हू, वह भी प्रार्थना ही है। इस सकटकाल मे हमारे मुँह से मनुष्य की भलाई के विचारो के सिवा और क्या प्रकट हो सकता है? उसके एक एक शब्द को आप लोग प्रार्थना-प्रवचन मानकर ही ग्रहण करे।

(सभा मे शाति छाई रहती है।)

वही भाई : वही होगा।

बापू : मैं जल्दी से जल्दी पूर्वी और पश्चिमी पजाब जाना चाहता हू। आप दिल्ली वालो, मेरे काम को सरल करो। आप यहा ऐसे हालात पैदा कर दो कि लोग कहने लगे कि दिल्लीवालो के दिल पर चोट लगने से वे पागल हो उठे थे पर वे अब चेत गये है। यहा अब सब फिरको के लोग पूरी हिफाजत से रहने लगे है। जिस दिन इस तरह की स्थिति का मुझे इतमीनान हो जायगा उसी दिन मैं अपने मिशन पर चल पडूँगा। इतनी बडी आबादी के परिवर्तन की बात इस दुनिया मे कभी सभव नही है। इससे बडा हृदयहीन विचार कोई दूसरा नही हो सकता। यदि दुर्भाग्य से इस पर ही अमल करना पडा तो वह दिन देखने के लिये मैं जिन्दा नही रहना चाहता।

सिक्ख सरदार · दिल्ली से ज्यादा इस समय पश्चिम पजाब को आपकी जरूरत है, क्या यह आप मानते है ?

बापू . पर मै दिल्ली को जलते हुए छोड कर नही जा सकता। यहा आप पटेल और नेहरू को गर्व से सिर ऊँचा करने लायक स्थिति मे ला दे। हिन्दू, मसलमान और सिक्ख कही भी आते जाते अपने को सुरक्षित समझ सके। किसी को किसी तरह का साम्प्रदायिक खटका न रहे तो फिर देखो मैं कितनी जल्दी पूर्वी और पश्चिमी पजाब पहुच जाता हू । इसलिए यह दिल्लीवासियो पर है कि वे मुझे यहा मे जाने देते है या नही ?

परदा बदलता है

दृश्य चौथा

प्रार्थना-सभा का मैदान

१७ सितम्बर १९४७ का तीसरा पहर

(कुछ लोग प्रार्थना आरभ होने से पहले ही आ गये हैं। दो सिक्ख है, तीन हिन्दू शरणार्थी हैं, दो दिल्ली वासी हैं। वे सब आगे पीछे आये हैं। किसी की पूर्व पहचान नही जान पडती। वे एक दूसरे से वही परिचय करते हैं। सिक्ख सरदार ध्यान

सिंह और गुरादित्ता लाहौर और गुजरांवाला के हैं। हिन्दू लाला मेलाराम रावलपिंडी से, जेठामल कराची से और ब्रजकिशोर मुलतान से भाग कर आये हैं। दिल्ली वाले हरलाल, और रामदीन अलग अलग राजनैतिक विचारों के हैं। सब पास पास बैठे कि उनमे चर्चा चल पड़ी।)

गुरादित्ता . ये जोहरा बेगम कौन है जिनकी बापू उस दिन चर्चा कर रहे थे ?

रामदीन ' डाक्टर अन्सारी की पुत्री।

गुरादित्ता डा० अन्सारी कौन ?

हरलाल : डा० अन्सारी और हकीम अजमल खाँ दिल्ली के नामी कांग्रेसी नेता थे।

रामदीन इन्ही दो हस्तियो की बदौलत दिल्ली मे कांग्रेस को मुसलमानो का समर्थन मिला।

हरलाल मौलाना आजाद और आसफअली भी यहा के बडे नेताओ मे रहे हैं।

गुरादित्ता : बेगम जोहरा और उनके पति को हिंदुओ और सिक्खो के डर से घर छोडकर होटल मे शरण तो मिल गई यही गनीमत है।

ध्यानसिंह : पश्चिमी पजाब मे हिन्दू और सिक्ख नेताओ की कितनी लडकिया गुण्डो के कब्जे मे चली गई हैं ? वहाँ तो मदिरो और गुरुद्वारो मे भी पनाह नही मिल सकती।

जेठामल : यह बापू को कौन बताये ?

मेलाराम कोई बताये भी तो वे क्या कर सकते है ? वे यहा हमे रोक सकते है । हमसे मस्जिदे खाली करा सकते है। जामिया मिलिया से हमे निकल जाने का आदेश दे सकते है । हमसे मुसलमानो की जायदादे और सपत्ति वापस कर देने को कह सकते ह । मुसलमानो की लडकियो और औरतो को लौटा देने का उपदेश दे सकते है । लेकिन पाकिस्तान मे हिन्दू और सिक्खो के कत्लेग्राम को वे नही रोक सकते । वहा हमारी बहू-बेटियो पर होनेवाले रात दिन के बलात्कार से उनकी रक्षा वे नही कर सकते । वहा उनका महात्मापन कोई नही पूछता ।

ध्यानसिह उन्हे तो बुराई का बदला भलाई से देने की बाते सूझती है ।

गुरादित्ता हम उन्हे साफ साफ कह दे कि हमारी हजारो बेगम जोहराओ की इज्जत पाकिस्तान की सडको पर सरेआम लूटी जा रही है उसे आप नही रोक सकते तो हम भी आपकी बाते नही सुनेगे ।

मेलाराम और आप अपने उपदेश अपने पास ही रहने दे । हमे मत रोके । हमारे दुखी और सताये हुये दिलो को अपने जी की निकाल लेने दे ।

जेठामल आज उनके आने पर हम ऐसा ही कहेगे ।

व्रजकिशोर . पर हम कहते कहाँ है ? महात्मा के सामने तो हम लोग बोलते तक नही । चुपचाप बैठे सिर हिलाते रहते हैं ।

रामदीन : महात्मा जादूगर है।

हरलाल : बिल्कुल अंग्रेजी राज्य को जादू के जोर से ही खत्म कर देनेवाले जादूगर और किसी नेता ने कभी कल्पना भी की थी कि अंग्रेज इस तरह भारत छोड़कर चले जायँगे ?

व्रजकिशोर : इसमें केवल महात्मा को ही श्रेय नहीं है। राष्ट्रीयस्वयंसेवक-संघ और हिन्दू महासभा ने क्या कम योग दिया है ? कांग्रेस और महात्मा की अहिंसा से अंग्रेज कभी डरनेवाले नहीं थे। आज सत्ता पा जाने से कांग्रेस और महात्मा इन दलों को, जिनमें साम्यवादी भी शामिल हैं, राष्ट्रद्रोही भले ही कहें पर हिन्दू और सिक्ख भली भांति समझते हैं कि उनके बिना अंग्रेज टस से मस नहीं होनेवाले थे।

गुरांदित्ता : महात्मा को भारत के साढ़े चार करोड़ मुसलमानों की ज्यादा चिन्ता है।

ध्यानसिंह : बत्तीस करोड़ हिन्दुओं से भी ज्यादा। मन्दिर और गुरुद्वारे तोड़े फोड़े जाते रहें पर मस्जिदों में कोई हाथ न लगाये, यही चाहते हैं न महात्मा ?

गुरांदित्ता : (व्यंग से) तभी तो महात्मा को दुनिया की सबसे सुन्दर मस्जिद, जामा मस्जिद, में अपने मुस्लिम भाई-बहनों की मुसीबत का ख्याल ज्यादा परेशान करता है। उनके लिए वे रोजाना हिन्दुओं और सिक्खों को लानत-मलामत करते हैं। उनकी हिफाजत के लिए वे किसी दिन भी आमरण अनशन का भूत खड़ा करके हिन्दू और सिक्खों को दबा सकते हैं। कलकत्ते में

परस्माल सीधी कार्रवाई के नाम पर मुसलमानो ने हिन्दुओ का कैसा कत्लेआम किया था, हिन्दू औरतो की कैसी बेइज्जती की थी ? और नोआखाली मे क्या हुआ ? इस बार हिन्दुओ ने थोडा हाथ दिखाया तो महात्मा से देखा न गया । उन्होने हिन्दुओ को दबाने के लिए क्या नही किया ?

ध्यानसिंह : फिर भी हम महात्मा का उपदेश सुनने दौडे आते है । प्रार्थना मे कुरान की आयते जोड देना क्या बताता है ?

जेठाराम हाँ, हिन्दू-प्रार्थना मे कुरान की आयतो का क्या काम ?

मेलाराम महात्मा का ख्याल है कि वे मुसलमानो को खुशामद से राजी कर सकते है ।

जेठाराम उनकी खुशामद ने ही पाकिस्तान बनाया है । वे हमेशा जिन्ना और मुस्लिम लीग को कोरा कागज देने की बात कह कर हमारे भाग्य के साथ खिलवाड करते रहे है ।

गुरादित्ता कही मुस्लिम लीग को कोरा कागज मिल जाता और आज वह सारे देश की सत्ता हथियाये होती तो हिन्दू और सिक्खो का नाम शेष हो गया होता । कत्लेआम से जो बचते उन्हे इस्लाम मे जबरदस्ती दीक्षित कर लिया गया होता ।

ध्यानसिंह · जो औरगजेब नही कर पाया था वह महात्मा ने करा दिया होता ।

मेलाराम : फिर भी ऐसे आदमी को हमने राष्ट्रपिता मान रक्खा है !

जेठाराम : किसने मान रक्खा है ? वोटों से कांग्रेसियों के कहने से क्या महात्मा गांधी राष्ट्र भर के बापू कहलाने लगेंगे ? हम लोग तो मरते दम तक उन्हें महात्मा ही कहेंगे, पाखंडी महात्मा !

रामदीन : बस, बहुत हो चुका । बापू के प्रति हमारी जो अटल श्रद्धा है वह ये शब्द सुनना गवारा नहीं कर सकती ।

(उठकर चला जाता है ।)

हरलाल : तो आप लोगों का विचार है हमें भी मुस्लिम लीग की तरह घृणा का प्रचार करना चाहिए, मुसलमानों से बदला लेना चाहिए और उन्हें भारत से बाहर निकाल देना चाहिए ?

गुरादित्ता जरूर ।

हरलाल घृणा की खेती से आप कौन सा अमृतफल पाने की आशा करते हैं ?

ध्यानसिंह : हम शरणार्थी तो अमृतफल की आशा छोड़ चुके हैं । हमारा रहा ही कौन है जिसके लिए हम सुनहरी दुनिया के सपने देखें ? बीवी-बच्चे, भाई-बिरादर, धनदौलत आग की भेंट करके भी हम दुश्मनों के खून की होली न खेल पायें तो हमारा जीना धिक्कार है ।

हरलाल : बीवी-बच्चे नहीं, भाई बिरादर नहीं, धन दौलत नहीं पर देश तो तुम्हारा है । क्या वह उन सब से बड़ा नहीं है ? क्या देश-प्रेम की महानता तुम्हें गौरव नहीं दे सकती ?

इतने देश भक्तों ने क्या अपने लिए ही फांसी खाई है? क्या वे अपने परिवार के लिए ही शहीद हुए हैं? जरा सोचो तो सही। बापू हमारे देश-प्रेम के प्रतीक हैं। वे इन्सानियत के प्रतीक हैं। उनकी बातों को सुनो। उनके उपदेशों को समझो। उनका जैसा राष्ट्र निर्माता भारत भूमि ने अब तक पैदा नहीं किया है, और शायद दुनिया की धरती ने भी नहीं किया होगा।

(सब स्तब्ध और चकित से सुनते रहते हैं। बापू अपनी मंडली के साथ मैदान में आते दिखाई देते हैं।)

परदा बदलता है

दृश्य पाँचवाँ

प्रार्थना-सभा का मैदान

सायंकाल सितम्बर का वही दिन

(आज सभा में उपस्थिति कुछ अधिक है। बापू कुछ भरे भरे से हैं। दिल्ली में अब तक वांछित परिस्थिति उत्पन्न नहीं कर पाये हैं। कम से कम से कम उन्हें प्रगति से सन्तोष नहीं है। पश्चिमी पाकिस्तान से जो समाचार प्रतिदिन आ रहे हैं उनकी प्रतिक्रिया दिल्ली में व देश के अन्य भागों में शान्ति का वातावरण नहीं बनने देती है। हिन्दू और मुसलमान नेता बड़ी

संख्या मे उनसे मिलते और परामर्श करते रहते हैं। भारत सरकार के मत्रीगण भी बापू से मत्रणा करते है। परन्तु जो तूफान आया है उसकी गंभीरता कम नहीं हो रही है। दिल्ली मे हिन्दू और सिक्ख शरणार्थियों की वाढ आ गई है। वह किसी तरह कम नहीं हो रही है। प्रति दिन नया प्रवाह उसमे जुडता जा रहा है। नगर की सब तरह की व्यवस्था भग हो गई है। मर्यादा का ऐसा विनाश दिल्ली के इतिहास ने शायद ही कभी देखा हो। लोगों की उत्सुकता देखकर बापू का प्रवचन आरभ होता है। स्त्री-पुरुषों मे शाति छा जाती है। बहुत धीमे स्वर मे बापू बोलते हैं।)

बापू . मैंने इधर पुराने किले और ईदगाह के सामनेवाले दो शरणार्थी कैंपो को देखा है। मुझे लगा कि इन्सान और इन्सानियत को हमने दांव पर हार दिया है। पाकिस्तान ने तो हमसे भी भारी दांव हारने का कौल कर रखा है। जब दो देश बुराई मे एक दूसरे से होड करने लगें तो उन्हे सत्पथ पर कौन ला सकता है? मैने उन कपो मे शान्त और मायूस चेहरे देखे है। मैंने क्रोध से दहकनेवाली आँखें भी देखी हैं। उन्हे मैंने साफ साफ कह दिया कि इन्सान ने जिसे बिगाड दिया है उसे भगवान ही सुधारेगा। अपनी तरफ से तो मैं इतना ही कह सकता हू कि जब तक दिल्ली मे वैसी ही शाति कायम नही हो जाती, जैसी दोनो फिरको के बहुत से आदमियो के पागल हो उठने से पहले थी, तब तक मैं चैन न लूंगा।

गुरादित्ता : आपको दिल्ली की इतनी चिन्ता क्यो है ?

बापू क्योकि मैं दिल्ली को प्यार करता हूँ। मै जानता हूँ कि दिल्ली के शान्त हो जाने से सारे देश की आग बुझ जायगी।

गुरादित्ता और सीमा के उस पार क्या होगा ?

बापू वहा भी उसका असर पडेगा। सीमा के उस पार तूफान उठता है उससे हम अछूते नही रहते तो यहा जब अमन कायम होगा तो वहा उसकी प्रतिक्रिया क्यो नही होगी ? आखिर वहा भी तो इन्सान बसते है।

ध्यानसिंह वहा के महापुरुष कायदे आजम ने हिन्दुस्तान से गये हुए मुस्लिम शरणार्थियो की मदद के लिए फण्ड इकट्ठा करने के बारे मे एक अपील निकाली है उसे आपने देखा है ?

बापू . देखा है। उसमे उन्होने पाकिस्तान मे मुसलमानो द्वारा किये जाने वाले बुरे कामो का जिक्र तक नही किया है ? यह बददयानती है। मैं चाहता हूँ कि दोनो देशो की सरकारे खुले तौर पर और साहस के साथ अपने यहा की अकसरियत के पागलपन के कामो को मञ्जूर करे और उनकी निंदा करे।

ध्यानसिंह : लेकिन क्या वे ऐसा करेगे ?

बापू : हमे आशा करनी चाहिए कि वे करेगे। घृणा का विषवृक्ष रोपने की भूल करके वे अपने अस्तित्व को खतरे मे डालना नही चाहेगे।—इतनी बातचीत के बाद मैं समझता हू कि मुझे अपने विषय पर आना चाहिए। मैंने जो मुस्लिम शरणार्थी कैप देखे उनकी सफाई की दशा बडी शोचनीय है। कैप मे रहने-

वालो के जी मे यह क्यो नही आता कि इन्सान के बनाये हुए इस नरक को रहने लायक कैसे बना लिया जाय ? गदगी रखना इस देश का स्वाभाविक दुर्गुण बन गया है । हम मे सफाई की भावना नही है । हिन्दू-सिक्ख-मुसलमान गदगी को तो सह लेते हैं पर इन्सान से नफरत करते हैं ।

हरलाल : मौसम ने कैंपो की गदगी को और अधिक बढा दिया है ।

बापू : हा, रात मे मैने जब पानी बरसने की आवाज सुनी तो मेरा जी खुश नही हुआ । मेरा ध्यान तुरन्त शरणार्थी कैंपो की ओर चला गया । मैने सोचा, मै आराम से बरामदे मे सो रहा हूँ जबकि दिल्ली की खुली छावनियो मे हजारो भाई पडे हैं । अगर इन्सान बेरहम बनकर अपने भाई पर जुल्म न करता तो आज ये हजारो मर्द, औरतें और मासूम बच्चे बेआसरा क्यो भीगते होते ? इस विचार ने मुझे प्रेरणा दी है कि मै हिन्दुओ और सिक्खो से कहू कि वे नफरत की बाढ को रोकने वाले इन्सान बनें । मै मुसलमानो से भी कहू कि वे ईश्वर पर भरोसा रखकर अपने सारे हथियार सरकार को सौंप दें ताकि हिन्दुओ और सिक्खो का सदेह निकल जाय । शरणार्थी-समस्या को हल करने का एक ही रास्ता है जो लोग जहा से भागे है उन्हे वही आदर के साथ ले जाया जाय । दोनो राज्य उनकी हिफाजत का जिम्मा ले ।

(माइक्रोफोन खराब होने से बापू की आवाज दूर

बैठे लोगो तक नही पहुँचती है। लोग एक दूसरे से पूछने लगते हैं कि उसने क्या सुना ? दूसरी मशीन लाकर लगाई जाती है, तब तक सभा मे काफी अव्यवस्था फैल जाती है।)

रामदीन . (खडे होकर) बापू से एक भाई ने सवाल किया है कि इस तूफान को उठानेवाला उनकी नजरो मे अपराधी भी है या नही ?

बापू . कुछ भी हो अब अपराधी एक पक्ष नही रहा। दोनो ओर से अपराध किये गये हैं। उनको सोने की तराजू मे तौल कर मापा नही जा सकता। अब तो एक ही रास्ता है कि जो कुछ हो चुका है उसको राज्य के हाथो मे सौप दिया जाय। लोकशाही मे हर आदमी को समाजी यानी राज्य की इच्छा के अनुसार चलना होता है। उसी के मुताबिक अपनी इच्छाओ की हद बाँधनी होती है। हर आदमी कानून चलाने लगे तो राज रहे ही नही। वह तो अराजकता हो जायगी। इसलिए मै कहता हू कि गुस्से पर काबू पाओ और राज्य को न्याय पाने के लिए कुछ करने दो। मुझे तो इसमे शक नही कि ऐसा होने पर हिंदू और सिक्ख सलामती से घर लौट सकेगे। पाकिस्तान को भी दुनिया मे रहना और व्यवहार करना है। सबसे बडी ईश्वरीय अदालत की बात हम छोड दे तो भी वह अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के सामने खडा होकर सफाई देने से अवश्य डरेगा। मेरी पूछो तो मेरा भगवान पर ही भरोसा है। मैं तो लगातार उसी से प्रार्थना किया करता हू कि हे भगवान हमारी इस पवित्र और

सुन्दर धरती पर इस तरह का कोई संकट आये, उससे पहले ही तू मुझे यहा से उठा ले। आप सब मेरी प्रार्थना के साथ हो तो उसे कितना बल मिले। बस आज इतना ही कहूगा। इससे आपको सोचने का मौका मिले तो रोशनी भी मिलेगी, जरूर मिलेगी, जिसने मेरे हृदय मे इतना प्रकाश भर दिया है।

परदा बदलता है

दृश्य छठा

प्रार्थना-सभा-स्थल · बिडला भवन का अहाता

सायकाल, १८ सितम्बर १९४७

(बापू अपने आसन पर बैठे हैं। उनकी प्रार्थना पर कुछ श्रोताओं ने एतराज उठाया था कि प्रार्थना मे कुरान की आयतें क्यों पढी जाती हैं? इससे बापू को भारी सदमा पहुँचा है। उन्होंने बराबर दो दिन तक इस आपत्ति पर चिन्तन किया है। यह सवाल उनके मन मे बराबर तैरता रहा है। भारी कार्य-व्यस्तता के बीच भी वे उसे भुला नहीं सके हैं। यद्यपि विरोध की आवाज उठाने वाले एक ही दो हैं, पर प्रार्थना जैसी पवित्र चीज का विरोध क्यों हो और उसका हल किस तरह निकाला जाय, यही वे सोचते रहे हैं। प्रार्थना-सभा मे अपने आसन पर बैठे इस नई समस्या का समाधान खोजते हुए आखिर उन्होंने

इस तरह बोलना आरभ किया ।)

बापू . मेरे अनुभव ने तय कर लिया है कि जब तक सभा का एक एक जन प्रार्थना के लिए राजी न हो तब तक आम प्रार्थना स्थगित रहे । मै प्रार्थना जैसी अध्यात्मिक चीज भी किसी पर बलात् लादना नही चाहता । प्रार्थना करने की आवाज सब के अन्तर से उठनी चाहिए । मेरा मुँह देखकर इच्छा के विरुद्ध उसे स्वीकार न किया जाय ।

रामदीन इतनी बडी सभा मे एक दो आदमियो की भिन्न राय क्या वजन रखती है ?

बापू मेरी प्रार्थना की शर्त यही है कि उसका जो भाग किसी को आपत्तिजनक लगे उसे छोडने की मुझमे आशा न रखी जाय । प्रार्थना का मकसद किसी की भावनाओ को चोट पहुँचाना नही है । बडे सोच विचार के बाद मैंने जिस प्रार्थना का चयन किया है उसका कोई भाग मैं छोड नही सकता । आप अपने हाथ उठाकर बताये कि प्रार्थना करूँ या नही ?

(कोई विरोध मे हाथ नही उठाता है ।)

हरलाल ज्यो की त्यो प्रार्थना करने मे किसी को एतराज नही है ।

बापू · रोटी जैसे शरीर का भोजन है उसी प्रकार प्रार्थना आत्मा का भोजन है । मुझे यह देखकर खुशी हो रही है आप उसकी कीमत जानते है । हिन्दुस्तान की गजेन्द्र-बुद्धि को जगलीपन के ग्राह ने ग्रस लिया है । उसके पजे से उसका उद्धार करना

मेरा काम है। यह भारी काम भगवान की दया से ही पूरा होनेवाला है। भजन के आशय को हमने इस तरह घटाया है, पता नहीं कहाँ तक आप सबको वह पसन्द है ?

मेलाराम : (खड़े होकर) हम चाहते है आपका सपना सच्चा हो।

बापू : मैं दरियागंज मे मुसलमान दोस्तो से मिला था। मैंने उनसे एक सवाल पूछा। मैने कहा, अगर कोई मुसलमान दिल्ली या हिन्दुस्तान मे नहीं रह सका और कोई सिक्ख पाकिस्तान मे नही रह सका तो हिन्दुस्तान की सब से बड़ी जामा मस्जिद और उधर ननकाना साहब या पंजा साहब का क्या होगा ? क्या इन पवित्र स्थानो मे दूसरे काम होने लगेगे ?—वे उत्तर नहीं दे सके तब मैंने ही कहा, ऐसा कभी नही हो सकता, ऐसा कभी नही होगा।

मेलाराम : आपकी बातो से आशा जरूर होती है। दो दिन के पागलपन का गुबार निकल जाने के बाद आसमान साफ होगा, ऐसा लगता है।

बापू : जरूर होगा। हिन्दू मुसलमान पीढियो से साथ रहते आये है। इस देश मे ऐसी कौन सी चीज है जिसे हिन्दू-मुसलमानो ने मिलकर नही बनाया है। कला, साहित्य, भाषा, शिल्प, नगर, गाँव, संस्था, कारखाना एक भी चीज तो नहीं है जिसमे दोनो के हाथ न लगे हो। दिल्ली के गौरव स्वर्गीय हकीम अजमल खाँ की जामिया मिलिया को ही ले लो। इसमे हिन्दू-मुसलमान दोनो का ही प्रसाद

है। आज उनके अस्तित्व के सबब मे डॉ० जाकिर हुसैन को बेचैन होना पडे तो हम सबके लिए शर्म की बात है। यह मत समझो कि पाकिस्तान मे ईश्वर से डरने वाले लोग नही है। यह भी मत समझो कि हिन्दू और सिक्खो की मदद के बिना पाकिस्तान खडा रह जायगा। बवडर कभी खडा नही रहता। वह आधी के वेग मे आता है और तूफान के वेग मे चला जाता है। शात और सौम्य मौसम ही कुछ देर अपनी शोभा के साथ टिकता है।

रामदीन : आपने कूचा ताराचद मे हिन्दू लत्ता देखा था ?

बापू : देखा था, वह चारो तरफ से मुसलमानो से घिरा हुआ है। कहते है कि लत्ते के सारे मुसलमान लीगी है और हिन्दुओ के खिलाफ उन्होने भयकर आन्दोलन चला रक्खा है। उस जगह से सारे मुसलमानो के हटाने की माँग इस दलील के साथ पेश की गई कि पाकिस्तान के मुसलमान वहाँ ऐसा ही कर रहे है।—मैने उन्हे कहा कि दो गलत काम मिलकर एक सही काम नही बना सकते। इसलिए यह गैरवाजिब माँग है। मै चाहता हू कि आप उनके बीच निधडक रहे। इसी तरह पाटौदी हाउस पर पडोसी मुसलमानो ने गोलीबार किया था। उससे एक अनाथ बच्चा मर गया था। मैंने अनाथालय के कार्यकर्त्ताओ को सलाह दी कि वे अनाथो को वही लाकर रक्खें। मौलाना अहमद सईद व अन्य साथी मुसलमान दोस्तो ने इसे पसन्द किया और विश्वास दिलाया कि किसी का कुछ बिगाड न होगा। मै जितना कर सकता हूँ करता हू, पर आग बुझाने का काम सबको मिलकर करना चाहिए। हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख सब शाति लाने

को कमर कस ले तो कल हवा वदल जाय।

(बापू मौन धारण कर लेते हैं।)

परदा बदलता है

दृश्य सातवा

बिडला भवन, बापू का कमरा

दिन का तीसरा पहर, सितम्बर महीने का अतिम सप्ताह

(जवाहरलाल नेहरू बहुत देर तक बापू से परामर्श करते रहे हैं। सीमा-प्रान्त और पश्चिमी पजाब से बहुत खराब समाचार आरहे हैं। बन्नू, कोहाट, पेशवर, डेरा इस्माइलखाँ सब जगह पश्चिमी पजाब जैसे तूफान का भय हो रहा है। मुसलमानो के गिरोह हिन्दुओं को भयभीत कर रहे हैं। कहते हैं कि अगर समय रहते हिन्दुओं को वहा से हटाया न गया तो हालत बेकाबू हो जायगी।)

बापू : मेरी समझ मे नही आता कि जो लोग कल तक भाई भाई की तरह रहे है वे आज इस तरह का आचरण क्यो कर रहे है ?

जवाहरलाल जैसे उनके कोई इन्सानी फरायज ही न हो।

बापू जलियावाला बाग के हत्याकाड मे जिनका एक साथ खून बहा है आज वे एक दूसरे का गला काटने पर उतारु हो रहे है।

जवाहरलाल : हमने जिस सचाई के साथ पाकिस्तान मजूर किया था अगर उन्होने भी उसे उसी तरह लिया होता ।

बापू आजादी की लडाई मे जितनी कीमत नही चुकानी पडी उतनी हमे उसको कायम रखने मे चुकानी पडेगी । बरसात के इस मौसम मे, जब एक धार्मिक आदमी अपने अवाछित किरायेदार से भी मकान खाली कराते डरता है आज लाखो लोगो को बेघर और बेआसरा करके सडको पर निकाल देने मे उन्हे हिचक नही होरही है । यह किस शिक्षा का प्रभाव है ? कोई धर्म भी तो ऐसा नही सिखाता ।

जवाहरलाल : मै तो हैरान हो गया जब मैने यह सुना कि पश्चिमी पजाब मे हिन्दुओ और सिक्खो का ५७ मील लबा काफिला हिन्दुस्तान मे शरण लेने आरहा है ! उसके खयाल मात्र से मेरा सिर चक्कर खाने लगता है । मैं सोचता हूँ, क्या ऐसा भी हो सकता है ?

बापू दुनिया के इतिहास मे इसके जोड की कोई घटना मुझे याद नही आती । हिन्दू और मुसलमान दोनो ही धर्मप्राण जातिया है । खुदाई खौफ से वे बच्चो की तरह डरनेवाली है । आज, आजादी के सुनहरे मौके पर, उन्हे हो क्या गया है ?

जवाहरलाल : बापू, आज इस मौके पर इतनी बडी जिम्मेदारी मेरे कधो पर है और हालत यह है कि मै समझ नही पा रहा हूँ । मुझे रास्ता दिखाई नही दे रहा है । चारो तरफ अधेरा ही अधेरा नजर आता है ।

बापू (कुछ देर मौन रहने के बाद) इसान आज शैतान के

हाथो मे खेल रहा है पर ईश्वरीय प्रकाश के सामने वह प्रभाव ज्यादा देर तक टिक नही सकता। रात का व्यापक अंधेरा तभी तक ठहरता है जब तक प्रभात की किरणे सोई रहती है। ईश्वर और उसकी सर्वशक्तिमत्ता पर जिसको विश्वास है वह कभी हताश नही होगा। भारी जिम्मेदारियाँ उठाने वालो के सामने ही कठिन परिक्षाए आती हैं। इसलिए मायूस होने का कोई कारण नही है। हमे मन शुद्ध रखकर काम करते जाना है। रास्ता ईश्वर आप निकालेगा। आखिर इन्सान को इन्सान बनाये रखने की जिम्मेदारी तो उसी की है। उसके चरणो मे पूरे विश्वास के साथ की गई प्रार्थनाओ का जरूर अच्छा फल निकलेगा।

जवाहरलाल . हमारे दिल मे किसी तरह का पाप नही है। बस, हम इतना ही जानते है।

बापू · ईश्वर हिन्दुस्तान की नौका को किनारे लगायेगा। हिन्दू मुसलमान दोनो ही पर आँच नही आयेगी।

जवाहरलाल : समय होगया। मैं चलता हूँ। (उठ खडे होते हैं।)

बापू : (हँसकर) हम लोग इतिहास के बडे महत्वपूर्ण अध्याय का निर्माण कर रहे है, यह न भूल जाना चाहिए।

जवाहरलाल (चलते चलते अभिवादन करके) यह कैसे भूल सकता हूँ।

[प्रस्थान

बापू : मेरी साधना का मूर्तरूप जवाहर ! मैं न रहू तो भी

मेरे काम को वह आगे बढा सकता है।

(संतोष की सास लेते हैं। मनु बहन सरदार पटेल के आगमन की सूचना देती है। पीछे पीछे सरदार प्रवेश करते हैं।)

सरदार . (अभिवादन करके बापू के सामने बैठते हुए) आपके पजाब जाने के मुहूर्त मे देर होती ही जा रही है।

बापू . 'नर चीती कब होत है '।

सरदार वही तो देख रहा हूं।

बापू : कलकत्ते गया था नोग्राखाली जाने के लिए, बिल्कुल दृढ निश्चय के साथ। एक बात हा बस नही सोची थी कि कोई सर्वशक्तिमान भी ऊपर है, जो निर्धारित कार्यक्रम मे मनमाना हेरफेर कर सकता है। उसने रातोरात प्रोग्राम को बदलकर नया नकशा सामने रख दिया। म कलकत्ते से बाहर नही जा सका। फिर पूर्वी और पश्चिमी पजाबो के लिये निकला तो उसने दिल्ली मे रोक दिया। उसकी इच्छा से बधा हुआ हू म।

सरदार . मैं नही चाहता हू कि आप दिल्ली छोडे।

बापू · मेरी जरूरत नही होगी तो मै एक क्षण भी अधिक नही ठहरूँगा। चारो तरफ से पुकारे आती है पर वह पुकार अभी तक सुनाई नही दे रही जिसके सुनते ही मुझे चल पडना है।

सरदार · अभी तो शैतान के नगाडे बज रहे है, और सब आवाजे उसमे डूब गई है।

बापू : परन्तु शैतान के शोर-शराबे के बीच भी मै उसके सुनने को आशा करता हू।

सरदार : हर आनेवाला क्षण नई दिल दहलानेवाली खबरे लेकर आता है। उधर के छोटे मे लेकर बड़े जिम्मेदार लोगो तक के आचरण मे कही भाई-चारे की भावना नही है। मानो उन्होने तय कर लिया है कि पाकिस्तान मे कोई टिक सकता है तो सिर्फ मुसलमान बनकर। इस पागलपन का कोई इलाज है ? वहाँ जो कुछ होता है, उसकी प्रतिक्रिया यहाँ भी होती है। हमारी इतनी सतर्कता के बावजूद दिल्ली मे घटनाए घटती है। कभी कभी हमे लगता है कि हम अपने आखिरी आदमी तक को बचाकर ले आने का बन्दोबस्त करे। आखिर जिन्ना यही तो चाहते है।

बापू · हिन्दुस्तान कई मिलीजुली सभ्यताओ का घर है जहाँ वे साथ साथ पनपी और फलीफूली है। अगर वही आज इस तरह सोचने लगे तो वह अपने ध्येय से हट जायगा और हिन्दुस्तान का इस तरह पथभ्रष्ट होना एशिया की मौत होगी। एशिया ही नही हम तो दुनिया की कुचली हुई जातियो की आशा का केन्द्र उसे बनाना चाहते है। हम कभी इस विचार के आगे सिर नही झुकायेगे कि पाकिस्तान मे गैर-मुस्लिम न रहे या हिन्दुस्तान को मुसलमान खाली कर जाय।

सरदार · परन्तु जिन्ना और मुस्लिम लीग हमारी इस उदार भावना को बेकार करने के लिए तुले बैठे हैं।

बापू . मैं कहता हूँ कि उनकी ताकत खत्म हो जायगी। हम अगर अपने कामो से उन्हे मदद न दें तो वे कितने लोगो को बहका सकते हैं ? दोनो तरफ समझदार आदमी है। वे कभी ऐसे हिन्दुस्तान

या पाकिस्तान मे रहना पसन्द न करेगे जहाँ की धरती को करोडो स्त्री बच्चो के आसुओ से गीला कर दिया गया हो।

सरदार हम अब तक इसी रास्ते पर चल रहे है।

बापू आगे भी हमारा यही रास्ता होगा। कोई दूसरा रास्ता हो ही नही सकता।

सरदार . इन विगडते हुए हालात मे हम क्या करे ?

बापू ' हम वही करे जो करते आ रहे हैं।

सरदार . यानी ?

बापू हम मुसलमानो की यहा पूरी हिफाजत करे। उन्हे प्यार से गले लगाये रहे।

सरदार चाहे उधर हिन्दुओ के साथ कुछ भी हो ?

बापू हा तब भी हम राहे-रास्त न छोडे। जो सही रास्ता है, वही सही रास्ता है। हम उनके गलत रास्ते पर चल पडे तो वह सही रास्ता नही बन जायगा। आप अपनी पुलिस और सेना को समझाइये कि वे अपना फर्ज अदा करते समय जातीय पक्षपात बिल्कुल न करें। मुझे यह सुनकर निहायत कष्ट होता है कि हिंदुस्तान की पुलिस और फौज सबके साथ एक सा सलूक नही करती। समझ मे नही आता कि पाकिस्तान की जिन जिन बुराइयो की हम आलोचना करते हैं उन्ही को खुद क्यो करना चाहते हैं ? क्या ऐसी दशा मे हमे आलोचना का अधिकार रह जाता है ?

सरदार : (विनोद से) मैं आज हिन्दुस्तान का गृहमन्त्री हू। हिन्दुस्तान की जनता की राय से मुझे काम करना चाहिए।

बापू · (**हँस कर**) मैं भी हिन्दुस्तान की कोटि कोटि जनता का प्रवक्ता हूँ। जो कुछ भी कहता हूँ वह उन्ही के सौंपे हुए अधिकार से कहता हूँ। मैं विश्वास दिला सकता हूँ कि उस सबध मे जनमत मेरे ही अनुकूल होगा। (**इसी समय मनु बहिन कमरे मे आती है।**) लो, प्रार्थना का समय हो गया है। (सरदार से) गृह मत्री हो जाने से प्रार्थना से भी वचित होना पड़ता है।

सरदार मैं प्रार्थना मे ही चल रहा हूँ। जनता का गृह मत्री हूँ परन्तु महात्मा का तो श्रद्धालु अनुयायी ही रहूँगा।

(सब लोग कमरे से बाहर आ जाते है।)

परदा बदलता है

दृश्य आठवाँ

प्रार्थना-सभा का मैदान

सितम्बर २५, १९४७ का सायंकाल

(अन्य दिनों की अपेक्षा आज बापू कुछ शान्त हैं। चेहरे पर थकावट और परेशानी की जगह बच्चों की सी सरलता प्रकट हो रही है। बरसात के बाद आज आसमान भी कुछ साफ हो गया है। सायकाल हो जाने पर भी प्रकाश की उज्ज्वलता मौजूद है।)

बापू . अभी हम कोई अच्छी खबर सुनने की आशा न करे पर इतना अच्छा जरूर है कि सब की जबान पर आज एक ही चर्चा

है। मै गवर्नर जनरल से मिला। सारी जातियो के खास खास कार्य-कर्ताओ से मिला। कांग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक मे गया। सबके सामने एक ही विचार है कि नफरत और बदले की लपटो को कैसे बुझाया जाय? जब कोई विचार इस तरह व्यापक हो जाता है तो उस पर अमल भी होता है।

गुरादित्ता जब तक हम उस पर अमल करने की तैयारी करेगे तब तक बहुत कुछ हो चुकेगा।

बापू हमारा एक एक पल बेचैनी से बीतता है। उधर कुछ होता है तो हमे उतनी ही चोट लगती है जितनी इधर होने पर लगती है। रावलपिंडी मे १८ हजार और वाह छावनी मे ३० हजार हिन्दू और सिक्ख बचे हुए है। उन्हे बारबार मेरी यही सलाह है कि अपना घर-बार छोडने के बजाय आखिरी आदमी तक मर मिटने के लिए तैयार रहे। इज्जत और बहादुरी से मरने की कला के लिए भगवान मे जीती जागती श्रद्धा के सिवा किसी खास तालीम की जरूरत नही है।

गुरादित्ता : यह कहना जितना आसान है करना भी क्या वैसा ही आप समझते है?

बापू दिल्ली मेरी सुने, और मैं कहता हूँ वैसे हालात पैदा कर दे, तो मै पाकिस्तान के सब हिस्सो मे पुलिस या फौज की मदद के बिना जाना चाहता हूँ। वहाँ एक भगवान ही मेरा रक्षक होगा। मैं हिन्दुओ और सिक्खो की तरह वहाँ मुसलमानो का दोस्त बनकर जाऊँगा। मेरी जिन्दगी उन्ही के हाथ मे होगी। कोई मेरी जान

लेना चाहेगा तो मैं खुशी से उसके हाथ मरूँगा।

गुरादित्ता गुस्ताखी माफ करे। आप तो महात्मा है। एक औसत आदमी क्या इस तरह निडर रह सकता है ? उससे हम ऐसी आशा नही कर सकते।

बापू : मैंने कभी महात्मा होने का दावा नही किया। मैं एक बहुत कमजोर आदमी हूँ। मै बिल्कुल आप सब की तरह ही एक मामूली इन्सान हूँ। मुझमे और दूसरो मे सिर्फ इतना ही फर्क हो सकता है कि दूसरो की बनिस्बत भगवान पर मेरा भरोसा ज्यादा पक्का है। भगवान पर अडिग आस्था रखने मे कोई भी इन्सान डर से छूट सकता है।

(बापू चुप हो जाते हैं। सभा मे शाति रहती है। कोई बोलता नहीं है।)

रामदीन (खडे होकर) मेरी जिज्ञासा है कि एक आदमी प्रार्थना मे 'अलफातेहा' पढने पर एतराज उठाता है बाकी सभा नही उठाती है तो प्रार्थना रोक देना क्या ठीक है ?

बापू : इस प्रश्न को मैं खुद ही उठाना चाहता था। मेरा विश्वास है कि प्रार्थना मे एतराज उठानेवाले एक भी आदमी के सामने झुकने मे और प्रार्थना रोक देने मे मैंने अकलमदी दिखाई है। परन्तु यह न भूलना चाहिए कि हमारी प्रार्थना आम लोगो के लिए खुली इसी अर्थ मे है कि जनता के किसी भी आदमी को उसमे शामिल होने की मनाई नही है। प्रार्थना खानगी मकान के अहाते मे की जाती है। उचित तो यही है कि सिर्फ वही लोग उसमे आयें

जिन्हे पूरी प्रार्थना मे, जैसी वह है, सच्चे दिल मे श्रद्धा हो। सभ्यता का तकाजा है कि जिन्हे उसके किसी अग का विरोध हो वे उसमे शामिल न हो। अगर मरजी के खिलाफ होनेवाले हर काम मे दस्तन्दाजी करना आम बात हो जाय, तो पूजा-उपासना की आजादी, यहाँ तक कि सार्वजनिक भाषण की आजादी भी मजाक बन जायगी। सभ्य समाज मे उस बुनियादी हक को काम मे लेने के लिए सगीनो का सहारा लेने की आवश्यकता न होनी चाहिए। सब लोगो को यह हक स्वीकार करना चाहिए और उसका आदर करना चाहिए। हमने ऐसी परपरा को डाला और निभाया है। काग्रेस के सालाना जल्सो मे उसके प्रदर्शनी-मैदान मे अलग अलग धर्म-सम्प्रदायो और राज-नैतिक दलो की सभाएँ पास पास होती रही है। इन सभाओ मे अलग अलग मत के और एक दूसरे के बिल्कुल विरोधी विचार प्रकट किये जाते रहे है लेकिन न किसी को कभी एतराज हुआ न इसमे रुकावट डाली गई, न किसी को सताया गया और न पुलिस की सहायता की आवश्यकता पडी। आज तो हम आजाद हैं। आज तो हमे इस भावना की और अधिक कद्र करनी चाहिए।

ध्यानसिंह मैं एक और ही बात पूछ लू तो हर्ज तो न होगी?

बापू : क्या पूछना है?

ध्यानसिंह भारतीय मुसलमानो को हिन्द के प्रति वफादारी का सबूत तो पेश करना चाहिए।

बापू : इससे अधिक वफादारी का सबूत क्या होगा कि वे

भारतीय मुसलमान है। कोई रहे भारत मे और वफादार पाकिस्तान का हो, तो उसे पाकिस्तान मे ही क्यो न चला जाना चाहिए ? भारत के चार करोड मुसलमानो मे कोई भारत के प्रति वफादार नही, यह एक ऐसा कथन है जिसके गलत होने मे सन्देह नही। फिर व्यक्ति की राज्य के प्रति वफादारी का सवाल उसके देशद्रोही होने पर उठता है और राज्य ऐसे आदमी को दड देता ही है। राज्य का काम हम राज्य को करने दें अपना काम हम करे। देशद्रोहियो की निगरानी रखने और उन्हे दड देने के लिए एक सुव्यवस्थित विभाग काम कर रहा है। हर आदमी अगर यह दायित्व अपने ऊपर ले ले तो हमारा विभाग क्या करेगा ?

ध्यानसिंह . पाकिस्तान मे

बापू (कुछ खीझकर) पाकिस्तान मे क्या होता है उसकी नकल हमे नही करनी है। कायदे आजम और माउन्ट वेटन मे फर्क है, लियाकत अली और जवाहरलाल मे फर्क है। पाकिस्तान और हिन्दुस्तान मे भी फर्क रहेगा, नीति का, पालिसी का, तरीको का। हमारी आजादी कुल एक महीना और दस दिन की बच्ची है। हम कोई काम ऐसा नही कर सकते जो असमय मे ही उसे मौत के मुँह मे ले जाकर डाल दे। हमारे पागलपन पर हमे क्या प्रमाणपत्र मिलेगा, यही न कि हिन्दुस्तान आजादी के अयोग्य है।

(सारी सभा मे सन्नाटा छा जाता है)

परदा बदलता है

दृश्य नवां

विडला भवन, वापू के कमरे का दालान

रात्रि का प्रथम प्रहर, सितम्बर १६४७

(मनु बहन और आभा गाधी वापू को कमरे मे पहुँचा कर इधर आ बैठी है। कोई वात उन्हें अस्तव्यस्त कर रही है। एकान्त पाकर दोनों कुछ आश्वस्त हो रही है।)

मनु बहन . आज तो खैर नही हे।

आभा यही मुझे लगता हे।

मनु बहन वापू और सब दरगुजर कर सकते है, पर प्रार्थना—

आभा पता ही नही मेरा ध्यान कहा चला गया था ?

मनु बहन : और मै तो ध्यान रखती ही कैसे ? तुम्हारे पीछे ही पीछे तो चलती हू।

आभा मै तो तुम्हे हाथ पकडकर ले चलती हूँ न ?

मनु बहन · विल्कुल। अकेली होती हू तो मुझे ध्यान रहता है।

आभा और साथ होती हो तो ?

मनु बहन : तो वेफिक्र हो जाती हू।

आभा : सो किसलिए ?

मनु बहन : सगीत मे निपुण नही हू इसलिए।

आभा : मुझे निपुणता का प्रमाणपत्र देकर सारी जिम्मेदारी मेरे ऊपर डाल रही हो ?

मनु बहन : मेरे डालने से क्या होगा ?

आभा . तो ?

मनु बहन : सजा दोनो को बराबर मिलेगी।

आभा : यह तो मैं भी जानती हू।

मनुबहन · किसी भी क्षण बापू वह विषय छेड सकते है।

आभा · तो चलो यहा ठहरने से क्या लाभ ? जो होना है जल्दी ही हो जाय।

मनु बहन : थोडा साहस बटोर लेने दो। कही ऐसा न हो कि हम अपने को उस चर्चा के लिए तैयार भी न कर पायें और बापू उसे छेड दे।

आभा : तो क्या होगा ?

मनु बहन : उत्तर देते न बन पडेगा।

आभा क्या उत्तर सोचा है ?

मनु बहन सोचा हुआ उत्तर बापू के सामने नही चल सकता।

आभा . तो आत्मसमर्पण कर दोगी ?

मनु बहन : यही उचित होगा। सच्ची सच्ची बात कहकर क्षमा याचना कर लूगी।

आभा : सीधी तरह भूल मान लेने से बापू कुछ न कहेगे ?

मनु बहन : पता नही क्या दडविधान हो।

आभा और न हो तो ?

मनु बहन . तो आत्मदंड की व्यवस्था करनी होगी।

आभा वह और भी कठिन होगी।

मनु बहन इसमें क्या संदेह।

आभा कम से कम तीन दिन का उपवास ?

मनु बहन . अधिक भी हो सकता है।

आभा : पर मेरी शक्ति देखकर निर्णय करना होगा।

(अचानक बापू पीछे से बोल पडते हैं।)

बापू मुझ बूढे को कमरे में बन्द करके तुम दोनो बेफिक्री के साथ कौन सा निर्णय करने बैठी हो ?

(दोनों उठकर खडी हो जाती हैं)

मनु बहन . बेफिक्री का कोई निर्णय नही है बापू !

बापू तो फिर बूढे की खोज खबर कैसे भूल गई ? तुमने सोचा होगा, यहा आने से कुछ देर बच जाओगी, लेकिन मुझे तो सेवा लेनी है, सो मे ही दौडा चला आया।

मनु बहन : भूल हुई बापू।

आभा प्रार्थना मे भी आज हम दोनो ने प्रमाद किया।

बापू . ओह, अब समझा। प्रार्थना के समय भजन गाते गाते लय चूक जाने से तुम दोनो हँस पडी थी। वह तो सचमुच बडी गभीर बात थी।

मनु बहन उसके लिए हमे दुख है।

आभा : उसके लिए हमे दुख है।

बापू : इससे जाहिर होता है कि तुम भजन तो गाती हो पर प्रार्थना के महत्व को नही समझती। प्रार्थना मे समग्र हृदय से भाग लेनेवाला इस तरह नही कर सकता।

मनु बहन : मैं अपने प्रमाद के लिए क्षमा माँगती हू।

आभा बापू, मैं भी क्षमा माँगती हू। बडी भूल मेरी है, जो मैं लय से दूर जा पडी।

बापू . मैं तुमसे नाराज नही हूँ। तुम्हारे क्षमा माँगने की जरूरत नही है। जब तुमने इस तरह असावधानी की तो मैं उल्टे अपने पर नाराज हुआ। मेरी देखरेख मे तुम दोनो की शिक्षा हुई है फिर भी मैं तुम्हारे दिल मे यह बात नही बैठा सका कि प्रार्थना करते समय अपने आपको भगवान मे लीन कर देना चाहिए। अब तुम दोनो पछता रही हो, तो मुझे कुछ नही कहना है। पर तुम दोनो को मेरी एक सलाह है कि अपनी गलती को आम सभा मे कबूल करो। बोलो, करोगी ?

मनु बहन · मुझे स्वीकार है।

आभा मुझे भी स्वीकार है।

बापू मैंने तुमसे यह इसलिए कहा कि मेरा विश्वास है कि ईमानदारी से खुलेआम अपनी गलती कबूल करने से गलती करने-वाला पवित्र बनता है और दुबारा गलती करने से बचता है, पर यह तो बताओ कि तुम दोनो क्या इसी सबध मे निर्णय करने जा रही थी।

आभा . हा।

बापू : भला क्या निर्णय करती ?

मनु बहन . आत्मदडविधान ।

बापू उसका स्वरूप क्या होता ?

आभा : तीन दिन का उपवास ।

बापू उपवास !

मनु बहन हा, यही सोचा था ।

बापू तब तो तुम दोनो बूढे कमजोर बापू को भारी परीक्षा मे डालने की तैयारी कर रही थी । मै तुम दोनो की सेवा पर निर्भर हू और तीन दिन निराहार रहकर मुझे तुम दोनो की देखरेख करनी होती ।

मनु बहन (**विस्फारित नेत्रों से**) ऐ, बापू !

आभा : (**सन्न होकर**) यह तो मैने सोचा ही न था ।

बापू कोई हर्ज नही भगवान ने हम तीनो को बचा लिया । आओ चले ।

(बापू आगे आगे और वे दोनों पीछे पीछे जाती हैं)

परदा बदलता है

दृश्य दसवा

विड़ला भवन, बापू का कमरा

सितम्बर १९४७ के अंतिम सप्ताह का कोई दिन

(बापू बैठे चरखा कात रहे हैं। उनका एक हाथ तेजी से चरखा घुमा रहा है। दूसरे हाथ से सूत निकल रहा है। ब्रजकिशन को पास बिठा रखा है। सूत कातते कातते उन्हें जरूरी पत्र लिखाते जाते हैं। लाहौर के पंडित ठाकुरदत्त के आने की सूचना मिलती है।)

बापू . उन्हे आने दो।

ठाकुरदत्त · (प्रवेश करके अभिवादन के बाद) बापू, मैं ठाकुरदत्त हूँ।

बापू . (सकेत से) बैठो।

ठाकुरदत्त मैं अपनी कहानी आपको क्या सुनाऊँ ? लाहौर के सारे सिखो और हिन्दुओ की एक सी कहानी है। किसी का कुछ नही रहा। जो जान बचाकर भाग पाया वही बच गया। लूट, कत्ल, आग, बलात्कार के सिवा लाहौर मे इस समय कुछ नही है। मैंने बिल्कुल लाचारी मे लाहौर छोड़ा है। आपने पाकिस्तान मे अपनी जगह पर मर जाने मगर गुण्डो से घबड़ाकर न भागने की जो सलाह दी, उसे मैं पूरी तरह मानता हूँ। मगर उस पर अमल करने की ताकत मुझमे नही थी। अब मैं चाहता हूँ वापस लाहौर जाऊँ और मौत का सामना करूँ।

बापू (कातते कातते) आप सबके लिए मैं हृदय मे दुखी हू पर यहा की हालत भी बेहतर नही है। आप तो देख ही रहे हैं। कैसी आग जल रही है ! कोई वहशी बन गया है तो कोई दहशत मे पागल है।

ठाकुरदत्त लेकिन यहा सल्तनत की ओर से उकसाहट नही है। वहा सल्तनत यदि इसी तरह पाक-साफ होती तो यह सब नही होता। इतना तो कहा जा सकता है।

बापू यह मै सुनता हू। इसके लिए मेरे पास एक ही जवाब है कि ऐसी सल्तनत नेस्तनाबूद हो जायगी।

ठाकुरदत्त आपको मालूम है मेरे द्वारा हिन्दू-मुसलमानो की एक सी सेवा हुई है। मेरे मुसलमान दोस्तो और मरीजो मे सैकडो ही मेरे कृतज्ञ है।

बापू यह मै जानता हू। इस समय मै आपको यह सलाह नही दे सकता कि आप लाहौर लौट जाय। अभी तो आप और दूसरे सिक्ख दोस्त यहा दिल्ली मे फिर से सच्ची शान्ति कायम करने मे मुझे मदद दे। यह हो जाने पर मैं खुद पश्चिम पजाब की ओर बढूगा। म लाहौर, शेखूपुरा, रावलपिंडी सब जगह जाऊँगा। मैं सरहदी सूबे और सिंध मे भी जाऊँगा। मैं सबका सेवक और भला चाहने वाला हूँ। मे समझता हू मुझे कोई रोकेगा नही।

ठाकुरदत्त . मेरी सेवाए दिल्ली के लिए अर्पित है।—किसी भी समझौते पर अमल न करने की सूरत मे आपने पाकिस्तान से लडाई की बात कही थी उसके सबब मे

बापू कई लोगो ने शक किया है कि क्या मैं अहिंसा पर से विश्वास उठा रहा हू ? सब जानते है मैं सदा से लडाई के खिलाफ हूँ, फिर भी मैं कहता हू यदि पाकिस्तान से इन्साफ पाने का कोई दूसरा रास्ता नही रह जायगा और पाकिस्तान की जो गलतियाँ

साबित हो चुकी है उनसे वह मुकरता रहेगा और उन्हें हमेशा कम करके बताने का तरीका जारी रक्खेगा, तो भारत सरकार को उसके खिलाफ लडाई छेडनी ही पडेगी। अन्याय को सहने की सलाह मैं किसी को नही दे सकता। अगर किसी इन्साफ की बात पर सारे हिन्दू नष्ट हो जाएँ तो मैं परवाह नही करूँगा। वह सचाई के लिए की गई पवित्र कुरबानी होगी।

ठाकुरदत्त : दिल्ली अगर आपकी बात मान ले, तो बहुत सा काम हृदय परिवर्तन से हो जायगा।

बापू : (कुछ दुःख के साथ) एक समय था जब सारा हिन्दुस्तान मेरी बात सुनता था। आज म दकियानूसी माना जाता हूँ। मुझसे कहते है कि नई व्यवस्था मे मेरे लिए कोई स्थान नही है। नई व्यवस्था मे लोग मशीने, जलसेना, हवाई सेना और न जाने क्या क्या चाहते हैं। इसमे मैं कहा समाता हू ? अगर लोगो मे यह कहने का साहस हो कि जिस शक्ति के द्वारा उन्होने आजादी पाई है, उसी की मदद से उसे बनाये भी रहेगे, तो मैं उनका साथ दे सकता हूँ। तब मेरे शरीर की कमजोरी और उदासी पलक मारते दूर हो जायगी।

ठाकुरदत्त . मैं अब चलता हू। आपका बहुत वक्त ले लिया। आज इसी क्षण से मैं दिल्ली मे शाति स्थापित करने का भरसक यत्न आरभ करता हू। लाहौर लौट जाने का अभी इरादा छोडता हू।

बापू : ईश्वर तुम्हारे काम को सरल करे।

(ठाकुरदत्त अभिवादन करके निकलते हैं और राजकुमारी

अमृतकौर प्रवेश करती हैं।)

अमृतकौर : (हाथ जोडकर प्रणाम करते हुए) बिना सूचना के आ गई हूँ, बापू !

बापू जिस अधिकार से बिना सूचना के आ सकती हो वह बहुत बडा है। काम मे कोई बाधा तो नही आ रही है ?

अमृतकौर जब सब यथावत चलता हो तब कौन बापू के पास फटकता है ?

बापू इस बात से मेरी चिन्ता के साथ रक्तचाप भी बढ सकता है, यह भी सोच लिया है ?

(विनोद के बावजूद चिंतित मुद्रा मे निहारते रहते है।)

अमृतकौर : छावनियो की सफाई का काम तो चल ही रहा है पर मुस्लिम छावनियो की देखभाल करने के अपराध मे हम पर कोप-दृष्टि बढ रही है।

बापू · ऐसा ! कितने नादान और बेसमझ लोग हैं। कुशल तो है ?

अमृतकौर उनके डराने धमकाने का असर तो हुआ ही है। कई ईसाई अपने अपने घर छोडकर चले गये है।

बापू . यह तो भयानक बात है। इसे कैसे सहा जा सकता है ?

अमृतकौर : लेकिन इतना अच्छा है कि बहुत से हिन्दुओ ने इसे बुरा माना है। उन्होने निरीह ईसाइयो की रक्षा का वचन दिया है। मुझे आशा है जो लोग घर छोड गये है उन्हे वापस लाया जा

सकेगा। उन्हे शान्ति से दुखी और बीमार इन्सानो की सेवा करने दी जायगी।

बापू : जरूरी सरकारी काम न हो तो मैं मौके पर चलकर हालात को देखना चाहता हूँ।

अमृतकौर यह भी तो जरूरी काम है और सरकारी भी। आप चलें तो मैं खुशी से ले चलती हूँ।

बापू · (चरखा एक ओर रखकर) मैं भी तैयार बैठा हू। (व्रजकिशन से) शेष पत्र रात को पूरे कर डालने है।

(चलने के लिए उठकर खडे होते हैं। आभा और मनु इधर उधर हो जाती हैं। बापू उनके कधों का सहारा ले लेते हैं।)

अमृतकौर · **(मुस्कराती हुई चलती हैं।)**

बापू . तुम्हारे हँसने से इन पर कोई असर नही होने का। इन लडकियो को भगवान ने ही इस बूढे की लाठी बना कर भेजा है।

(खिलखिलाकर हँसते है। उस हँसी मे सभी योग देते हैं।)

परदा बदलता है

दृश्य ग्यारहवाँ

बिड़ला भवन, बापू का कमरा

दोपहर से कुछ पूर्व, सितम्बर १९४७ का अंतिम सप्ताह

(बापू के मुँह से निकली हुई 'रक्तचाप' की बात न जाने कैसे हवा मे तैर गई। जनता मे पहुँच गई। डाक्टरों तक पहुँच गई। अखबारों मे उसके आधार पर बापू की अस्वस्थता का समाचार छप गया। अनेक लोग टेलीफोन पर बापू की तबियत का हाल पूछने लगे। कई दोस्त मिलने को दौड पडे। भीड भाड, आना जाना यों ही सँभालना कठिन था। इस घटना से परेशानी और बढ गई है। एक प्रसिद्ध स्थानीय डाक्टर अपनी मोटर पर बिड़ला-भवन आ पहुँचे है। बापू उन्हे अपने पास बुला लेते हैं।)

बापू . आपने बेकार ही कष्ट किया डाक्टर साहब !

डाक्टर · यह मेरा कर्तव्य था, और सौभाग्य भी

बापू · आपका सौभाग्य मेरी बीमारी का इन्तजार कर रहा था ? (खिलखिलाकर हँसना)

डाक्टर (कुंठित होकर) नही, मैं आपके किसी काम आऊँ तो यह मेरा सौभाग्य होगा।

बापू · मेरा सबसे बडा काम है दिल्ली का पागलपन दूर करना, उसे शान्त करना। बोलिये, उस काम मे आप हमे कितनी मदद दे सकते हे ?

डाक्टर . अपनी शक्तिभर, परन्तु इस समय आपका रक्तचाप देखना जरूरी हे। कई साल पहले भंगी बस्ती मे आपकी परीक्षा मैंने की थी।

बापू : (झुँझलाकर) डाक्टर साहब, इस समय मै बीमार नही हूँ। आपकी दिल्ली बीमार है। सारे देश का रक्तचाप बढ गया

है। आप मुझे तंग मत करो। मैं तो इस समय अपना काम करना चाहता हूँ। अपने रक्तचाप के बारे में जानने की मेरी कतई इच्छा नही है।

डाक्टर : (अप्रतिभ होकर) जाने दीजिये। आपका आदेश सिरमाथे लेकर मैं दिल्ली के रक्तचाप को ठीक करने जा रहा हूँ।

(शीघ्रता से प्रस्थान)

बापू : यह ठीक है।

मनु बहन : (प्रवेश करके) टब गर्म पानी मे भर दिया है।

बापू : कुछ देर उसमे लेटना ठीक रहेगा।

मनु बहन : परन्तु बापू, आज कल जिस कदर काम बढ गया है उस कदर आपका भोजन घट गया है। यह कैसे चलेगा ?

बापू . पर मैं स्वस्थ तो हूँ, देख रही हो ? मेरा यह गुर है कि बूते से अधिक काम करना पडे तो कम खाओ।

मनु बहन . हम लोग यह नियम पालन करने लगे तो मुश्किल पड जाय।

बापू (हँसकर) पर यह तन्दुरस्ती का अचूक नियम है।

(अपना गमछा कंधे पर डालकर बापू का स्नानघर की ओर जाना और आभा गांधी का आना।)

मनु बहन : बापू अद्भुत है।

आभा : क्यो, तुम्हे आज पता चला ?

मनु हर समय नई बात का पता चलता है।

आभा : क्या कहा भला ?

मनु मैने चेताया कि आजकल आपकी खुराक कम हो रही है तो कहा, काम बूते से बाहर हो तो खुराक कम कर देना चाहिए।

आभा (खिलखिलाकर) पर इतना अच्छा है कि बापू प्रयोग अपने पर ही करते है।

मनु · (उसी तरह खिलखिलाती हुई) हा, कही हम दोनो पर करने लग जाय ?

आभा तब तो बडी आफत हो।

मनु · आफत क्या, क्षय रोग दोनो को धर दबाये।

(दोनो खिलखिलाकर हँस रही होती हैं और बापू प्रवेश करते है।)

बापू · मैं जानता हूँ तुम दोनो बूढे की बातो पर हँस रही हो पर मेरी जितनी उमर होने पर तुम्हे ये बाते याद आयेगी।

आभा फोन पर किसी ने खबर दी थी कि ओखला मे जामिया मिलिया पर खतरा बढ रहा है।

बापू · तो मुझे वहा जाना चाहिए।

मनु · कब चलेगे ?

बापू : इसी समय। खतरा तो अब बढ रहा है। मैं जानता हूँ, क्रोधित हिंदुओ और सिक्खो का समुद्र उसके चारो ओर लहरे मार रहा है। सारी मुस्लिम चीजे, आदमी हो या इमारत, वे नष्ट कर देना चाहते है। अध्यापको और छात्रो के साथ डॉ० जाकिर हुसेन वहा मौजूद है। उनकी हिम्मत टूटने से पहले ही हमे वहाँ पहुचना चाहिए।

मनु : गाडी तैयार खडी है ।

बापू : तो चलो, हमे कुछ साथ तो लेना नही है ।

(दोनों लड़कियां बापू को सहारा देकर ले चलती हैं)

पटाक्षेप

अंक दूसरा

दृश्य पहला

प्रार्थना सभा, बिड़ला भवन का अहाता
२८ सितम्बर १९४७ का सायकाल

(सभा मे हमेशा से अधिक लोग आये हैं। लोग जैसे जैसे आते हैं वैसे वैसे बैठते जा रहे हैं। पहले जैसी अव्यवस्था अब नहीं है। लगता है इतने दिनों मे लोगों ने सभा मे अपना कर्तव्य समझ लिया है। ठीक समय पर बापू, मनु बहन और आभा गाधी के कधों पर हाथ रखे बहुत धीरे धीरे अहाते मे प्रवेश करते हैं। उनके मच तक जाने के लिए जो रास्ता छोडा हुआ है उससे होकर वे आते हैं। लोग खडे होकर अभिवादन करते हैं। कुछ पास पास के लोग पैर छूने का यत्न करते हैं। बापू उन्हे मना करते जाते हैं। इस तरह आकर वे अपने आसन पर बैठ जाते हैं।)

बापू : (सभा को सबोधन करके) आप लोगो मे कोई ऐसा आदमी है जिसे कुरान की खास आयतें पढने पर एतराज हो ?

एक युवक (खडे होकर) मुझे एतराज है।

एक अधेड (खडे होकर) मैं भी एतराज करता हूँ।

बापू : मे आपके विरोध की कदर करूँगा यद्यपि मे जानता

हू कि प्रार्थना न करने से वाकी लोगो को निराशा होगी। अहिंसा मे पक्का विश्वास रखने के कारण मै इसके सिवा और कुछ कर ही नही सकता, फिर भी मैं यह कहे विना नही रह सकता कि आपको इतने वडे मजमे की इच्छाओ का अनादर नही करना चाहिए। आपका यह वरताव हर तरह से अनुचित है।

युवक आप मुझे अपनी आत्मा के विपरीत करने को कहते हैं ?

बापू : तुम्हारी आत्मा किसी के वहकावे मे है। यह सच्ची ईश्वरीय आवाज नही है। गुस्से और चिढ की आवाज सारे देश मे छायी है। उसका वाहर क्या असर हुआ है ? आज अखवारो मे रूटर द्वारा भेजा हुआ मि० चर्चिल के भाषण का सार छपा है। कइयो ने उसे देखा होगा।

कई आवाजें देखा हे। वह शरारत से भरा है। वह इगलैण्ड की जनता को मजदूर सरकार के विरुद्ध भडकाने के लिए है।

बापू : मैं सबकी जानकारी के लिए उसे यहा दोहरा देता हू। उन्होंने कहा है, हिन्दुस्तान मे भयकर खूरेजी चल रही है। उससे मुझे कोई अचरज नही होता। अभी तो इन वेरहम हत्याओ और भयकर जुल्मो की शुरुआत ही है। यह राक्षसी खूँरेजी वे जातिया कर रही है, ये जुल्म एक दूसरी पर वे जातिया ढा रही हैं, जिनमे ऊँची से ऊँची सस्कृति और सभ्यता को जन्म देने की शक्ति है और जो ब्रिटिश ताज और ब्रिटिश पार्लमेंट के निष्पक्ष और सहिष्णु शासन मे पीढियो तक साथ साथ पूरी शाति से रही हैं। मुझे डर है कि दुनिया का जो

हिस्सा पिछले साठ-सत्तर वरस से अधिक शात रहा है, उसकी आवादी भविष्य मे सब जगह बहुत ज्यादा घटनेवाली है। और, आवादी घटने के साथ ही उस विशाल देश मे सभ्यता का जो पतन होगा, वह एशिया के लिए सबसे बडी निराशा और दु ख की वात होगी।'

एक आवाज यह झूठ और दुष्ट इरादो का वम है जो चर्चिल ने भारत को वदनाम करने के लिए फेका है।

वापू मि० चर्चिल इगलैण्ड के एक मान्य व्यक्ति है। वही थे जिन्होने दूसरे विश्वयुद्ध के समय ग्रेट व्रिटेन को महान खतरे से वचाया। मि० चर्चिल की तेज वुद्धि और उग्र नीति के विना कौन अमरीका को सहयोग के लिए ला सकता था ? लडाई जीत लेने के वाद युद्ध-जर्जर व्रिटिश द्वीपो को नया जीवन देने के लिए वहा की जनता को चर्चिल-सरकार के स्थान पर मजदूर सरकार को लाना पडा। उस सरकार की प्रेरणा से अग्रेजो ने समय को पहचान कर साम्राज्य को तोड देने और उसकी जगह वाहर से न दिखाई देनेवाला दिलो का ज्यादा मजवूत साम्राज्य कायम करने का फैसला किया। हिन्दुस्तान दो हिस्सो मे वँट गया। फिर भी दोनो हिस्सो ने मरजी से व्रिटिश कामन वेल्थ के सदस्य वने रहने की घोषणा की है।

एक आवाज : चर्चिल मजदूर सरकार के काम को निन्दित ठहरा रहे है।

वापू : उनकी इच्छा है परन्तु भारत को आजाद करने का गौरवभरा कदम पूरे व्रिटिश राष्ट्र की सारी पार्टियो ने उठाया था।

इसमे मि० चर्चिल और उनकी पार्टी के लोग भी शरीक थे। इसलिए उनसे उम्मीद की जाती है कि वे ऐसी कोई बात न कहे जिससे इस काम की कीमत कम होती हो। दुनिया के इतिहास मे यह बेमिसाल बात है। अंग्रेजों के, इच्छा से, सत्ता छोड़ने की तुलना के लिए मुझे कोई घटना ढूंढने पर भी नहीं मिलती। एक प्रियदर्शी अशोक के त्याग की बात याद आती है, पर अशोक आधुनिक इतिहास के व्यक्ति नही हैं। इसलिए चर्चिल के भाषण के सार को पढ़कर, जिसे मैंने सच मान लिया है, मुझे दुःख हुआ है। उनके लिए मैं कहने की जुर्रत करता हूं कि उनके भाषण ने उस देश को हानि पहुचाई है जिसके वे एक बहुत बड़े सेवक है।

एक आवाज इसके सिवा चर्चिल से हम और क्या आशा कर सकते थे?

बापू : (आवाज पर ध्यान दिये बिना) अगर वे यह जानते थे कि अंग्रेजी हुकूमत के जुए से आजाद होने के बाद हिन्दुस्तान की यह दुर्गति होगी तो क्या उन्होंने एक मिनट के लिए यह सोचने की तकलीफ उठाई कि इसका सारा दोष साम्राज्य बनानेवालों के सिर पर है उन जातियों पर नहीं, जिनमे चर्चिल साहब की राय मे 'ऊँची से ऊँची संस्कृति को जन्म देने की ताकत है'? मि० चर्चिल ने अपने भाषण मे सारे हिन्दुस्तान को एक साथ समेट लेने मे बेहद जल्दबाजी की है। हिन्दुस्तान मे करोड़ो की तादाद मे लोग बसते है। उनमे से कुछ लाख ने जगलीपन का काम किया है, जिनकी करोड़ो मे कोई गिनती नही है। मि० चर्चिल को मैं भारत आकर यहा की हालत

देखने की दावत देता हू बशर्ते वे पक्षपात का चश्मा उतार कर एक निष्पक्ष अंग्रेज की हैसियत मे आये । हिन्दुस्तान के बँटवारे ने अनजाने उसके दो हिस्सो को आपस मे लडने का न्योता दिया । दोनो हिस्सो को अलग अलग स्वराज देना, आजादी के इस दान पर धब्बे जैसा है । इस बात को कभी भूला नही जायगा ।

एक आवाज और चर्चिल ने आपके शांति-प्रयत्नो की कोई चर्चा नही की ।

बापू मेरे शान्ति-प्रयत्न केवल भगवान का प्रसाद पाने के लिए है । परन्तु आप लोगो मे से बहुतो ने मि० चर्चिल को ऐसा कहने का मौका दिया है । अभी भी आपके लिए अपने तरीको को सुधारने और मि० चर्चिल की भविष्यवाणी को झूठी साबित करने के लिए समय है । मैं जानता हूँ कि मेरी बात आज कोई नही सुनता । अगर ऐसा न होता और लोग उसी तरह मेरी बातो को मानते होते, जिस तरह आजादी की चर्चा शुरु होने से पहले मानते थे, तो जिस जगलीपन का वर्णन मि० चर्चिल ने बडा रस लेते हुए खूब बढाचढाकर किया है, वह कभी सभव न हो पाता और आप लोग अपनी माली व दूसरी घरेलू मुश्किलो को सुलझाने के ठीक रास्ते पर होते ।

(इतना कहने के बाद बापू थके हुए, परिश्रान्त दिखाई देते है । सभा विसर्जन की सूचना दी जाती है । लोग उठकर चलने लगते हैं ।)

परदा बदलता है

दृश्य दूसरा

दिल्ली की उपबस्ती ओखला मे जामिया मिलिया
लगभग आधी रात का समय

(सस्था के अध्यापक और छात्र छोटे छोटे दल बनाकर काली अंधेरी रात मे पहरा दे रहे हैं। उस अंधियारी मे चारों ओर के गाँवों मे मुसलमानों के घर जल रहे हैं। उनकी लपटों से एक दहशत सी उठती है। पागल हिन्दुओं और सिक्खों का घेरा-बद्ध हमला चल रहा है ताकि कोई निकल कर न जाने पाये। घेरा धीरे धीरे छोटा हो रहा है और नजदीक से नजदीक आता जा रहा है। अध्यापक और छात्र मुस्तैदी से अपने काम पर तैनात हैं और थोडी थोडी देर की खबर सस्था के अध्यक्ष डा० ज़ाकिर हुसेन को पहुँचाते हैं। डाक्टर साहब भी बेचैन हैं। सस्था के बचाव की सारी आशाएँ धूमिल-सी हो गई हैं। डा० साहब के थोडी थोडी देर बाद टेलीफोन उठाने और मित्रों व हितैषियों को सूचित करने का यत्न करने पर भी इस वक्त कहीं से उत्तर नहीं आ रहा है।)

डा० हुसेन : इस वक्त भला कौन जाग रहा होगा ? अब तो जो कुछ करना है खुद ही करना होगा।

एक छात्र . (घबडाया सा प्रवेश करके) डा० साहब !

डा० हुसेन कहो, कहो, खैर तो है ?

छात्र एक जीप तेजी से इधर आ रही है।

डा० हुसेन : (उठकर चलते हुए) कहा, कैसी जीप, चलकर देखे तो सही, और तुम सब होशियार तो हो ?

छात्र · (पीछे दौडते दौडते) हा जी, हम सब तैयार है।

(दोनों निकलकर मैदान मे आ जाते हैं। तब तक जीप फाटक पर आकर रुक जाती है। डा० हुसेन आगे बढकर फाटक पर जाते हैं।)

डा० हुसेन कौन ?

बाहर से आवाज . जवाहरलाल।

डा० हुसेन . (हक्के बक्के होकर) एँ, जवाहरलाल नेहरू ! इस अधेरी रात मे !

(छात्र दौडकर फाटक खोलता है। जीप अहाते मे आकर खडी होती है। जवाहरलाल उतरकर डा० हुसेन के गले लगते हैं।)

जवाहरलाल . इस तूफानी रात मे क्या मैं सो सकता था ?

डा० हुसेन (आखें सजल हो जाती हैं।) बापू ठीक ही कहते है, तुम भारत के सच्चे जवाहर हो, पर दिल्ली को घेरनेवाले दीवानो के घेरे मे से होकर यहा अकेले किस तरह पहुँचे यही हैरत होती है !

जवाहरलाल : तुम्हारी आखो मे भी तो नीद नही है डाक्टर। ये आग की लपटे क्या तुम्हे सोने देती है ?

(हाथ उठाकर अग्निकाडों की ओर सकेत करते हैं।)

डा० हुसेन जिम्मेदारी बहुत बडी चीज है।

जवाहरलाल , भारत के प्रधानमत्री की जिम्मेदारी फिर

खयाल करो कितनी बड़ी होगी ? तो बोलो क्या कुछ करना है ? यह तूफान तो बढ़ता ही जा रहा है।

डा० हुसेन : बापू के चरण जहां पड़ चुके, वह संस्था कभी मर नहीं सकती। पूरे एक घंटे रहकर बापू ने यहां की हवा को बदल दिया है। मैं तो उसी वक्त से संस्था को महफूज समझने लगा हूं।

जवाहरलाल : हूं तो बापू यहां आ चुके हैं।

डा० हुसेन : फिर भी आज शाम से छात्रों और अध्यापकों में घबराहट थी। जैसे जैसे आग लगाने और लूट व कत्ल की वारदातें बढ़ रही थीं, बेचैनी का वातावरण घना हो रहा था। मैं उन्हें समझाता जरूर था पर दिल तो डगमगाता ही था।

जवाहरलाल : अभी भी संकट तो टला नहीं है।

डा० हुसेन : लेकिन भारत के प्रधानमंत्री को अपने बीच पाकर अब डरने का कोई कारण नहीं है। बापू का आशीर्वाद और आपका हाथ, फिर हमें डर किसका हो ? गुस्से में पागल बने लोग भी तो आखिर इन्सान हैं। वे खुद समझ जायेंगे।

जवाहरलाल : आपको भरोसा है ?

डा० हुसेन : पूरी तरह।

जवाहरलाल : फिर भी मैं बता देना चाहता हूं कि सरकार की ओर से संस्था की रक्षा इस समय हो सकती थी उतनी व्यवस्था कर दी गई है।

डा० हुसेन : सरकार के एहसान के लिए हम सब ममनून हैं, पर सबसे बड़ी रक्षा की व्यवस्था तो भारत के प्रधानमंत्री की

उपस्थिति है।

जवाहरलाल : यहा अहाते मे खडे रहने की बनिस्बत क्या यह अच्छा न होगा कि हम चलकर छात्रो और अध्यापको के साथ पहरा दे।

डा० हुसेन . यह भी ठीक है। भारत के इतिहास मे बडे गौरव के साथ इसका उल्लेख किया जायगा।

जवाहरलाल (ठहाका मारकर) अरे, सचमुच हम सब भारत के इतिहास का निर्माण कर रहे है।

(दोनों व्यक्ति जीप को वहीं छोडकर अधेरे मे गायब हो जाते हैं।)

परदा बदलता है

दृश्य तीसरा

राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ की एक सभा

३० सितम्बर १६४७ का तीसरा पहर

(बापू विशेष निमत्रित के रूप मे सभा मे उपस्थित हैं। उनसे कुछ बोलने का आग्रह किया जाता है। वे स्वीकार कर लेते हैं।)

बापू मैं आपके सघ मे अपरिचित नही हूँ। जमनालालजी वर्धा मे सघ के एक कैंप मे मुझे ले गये थे। उस कैंप को देखकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ था। वहा बडा अनुशासन था। सादगी थी और सवर्ण असवर्ण सब समान थे। मैं तो सदा से यह मानता आया हूँ

कि जिस सस्था मे सच्चा त्यागभाव रहता है उसकी ताकत बढती ही है। यदि त्यागभाव के साथ शुद्ध भावना भी रहे तो वह सस्था जगत के लिए कल्याणकारी होती है। परन्तु इधर मेरे पास सघ के विरुद्ध काफी शिकायते आई है अत मै आप लोगो को खुश करने के बजाय नाराज करना पसन्द करूँगा, परन्तु कहूगा सच सच। आप पहले बताइये कि अपनी आलोचना सुनने के लिए तैयार है ?

कई आवाजें : हाँ हैं, आप कहिए।

बापू : यह बडी अच्छी बात है कि आप आलोचना सुनने को तैयार है। जिस मच से आप अपनी रीति नीति के प्रवचन सुनते रहे हैं उससे शायद पहली बार मै आलोचना सुनाने की बात कह रहा हू। आपकी सहिष्णुता की मैं कद्र करता हूँ। मेरा खयाल है कि इसका अच्छा ही फल होगा। कबीरदास बडे सत हुए हैं, उन्होने कहा है 'निदक नियरे राखिये आगन कुटी छवाय'। आपने सत की उस अमूल्य वाणी को सच कर दिखाया है। खैर, आप जानते है कि मैं सत्य और अहिंसा का पुजारी हू। मै इस बात मे कतई विश्वास नही रखता कि हिंसा का जवाब हिंसा हो। इस तरह तो राष्ट्रो के जीवन मे कभी शाति को स्थान ही नही होगा। राष्ट्र सहिष्णुता की नीति पर चलने से बनते है। भिन्न भिन्न जातियो के मेलमिलाप से उनकी रचना होती है। बहुसख्यको के त्याग और प्रेम का सबल न मिले तो अल्पसख्यको का सहारा क्या है ? मेरा आग्रह है कि आप जाकर इन बातो पर सोचें और अपनी आत्मा से इसका उत्तर मागे।

एक आवाज : क्या यही आलोचना है ?

बापू . मैं आपके गुरुजी से मिला तो मैंने उनसे पूछा था, मैंने सुना है कि आपकी इस संस्था के हाथ भी खून से सने हुए हैं। उन्होंने मुझे भरोसा दिलाया कि यह सब झूठ है। उनकी संस्था किसी की दुश्मन नहीं है। उसका मकसद मुसलमानों को मारना नहीं है। वह तो अपनी ताकत भर हिन्दू धर्म की रक्षा करना चाहती है। उसका मन्शा शान्ति बनाये रखना है। जो हो, मैं कहता हूँ यह ठीक है पर यदि संघ ने दूसरा रास्ता अपनाया, अपने आपको धोखा दिया, तो वह अपनी असहिष्णुता से हिन्दू-धर्म की हत्या कर डालेगा।

एक युवक . (खड़े होकर) मैं कुछ पूछ सकता हूँ ?

बापू मैं तुम्हारी बात का उत्तर दूँगा।

युवक . क्या हिन्दूधर्म अत्याचारी को मारने की अनुमति देता है ?

बापू एक अत्याचारी दूसरे अत्याचारी को सजा नहीं दे सकता। सजा देना सरकार का काम है, जनता का नहीं। हम लोक-तन्त्र के नागरिक हैं। हमें तन्त्र की मर्यादा के बाहर होकर कुछ नहीं करना चाहिए। हम सरकार से मांग करें परन्तु निर्णय उसे ही करने दें। यही सही तरीका है। हिन्दू धर्म इसके विपरीत किसी को अनुमति नहीं देता।

युवक . आप कहते हैं कि आपकी बात कोई नहीं सुनता, तो क्या आप अपने को निरुत्साहित अनुभव करते हैं ?

बापू : मैं ईश्वर पर अनन्य श्रद्धा रखनेवाला हूँ। उसी सर्व-समावेशक शक्ति से मैं सहायता की याचना करता हूँ कि वह मुझे

इस आँसुओं की घाटी से उठा ले तो बेहतर होगा, बजाय इसके कि वहशी बने हुए इन्सान के कसाईपन का मुझे निरुपाय दर्शक बनाये।

(धन्यवाद का शिष्टाचार दिखाने के बाद सभा समाप्त होती है। लोग बापू को उनकी मोटर तक पहुँचाते और विदा करते हैं।)

परदा बदलता है

दृश्य चौथा

बिड़ला भवन, बापू का निवास-स्थान

२ अक्टूबर १९४७, प्रातःकाल ३-३० बजे

(बापू की मंडली के सब लोग हाथ मुँह धोकर प्रार्थना के लिए इकट्ठे होते हैं। बिड़ला-भवन के और भी कई लोग आ पहुँचते हैं। सब प्रार्थना के बाद बारी बारी से बापू के चरणों का स्पर्श और वंदन करते हैं। बापू के पैर छूते समय मनु बहन हँसकर विनोद सहित बापू से करती हैं।)

मनु : बापू, यह क्या बात है कि हमारे जन्म दिन पर तो हम सब के पैर छूती हैं और आपके जन्म दिन पर उल्टे हमें आपके पैर छूने पड़ रहे हैं?

बापू : (उसी तरह विनोदपूर्वक) हाँ, महात्माओं के लिए उलटा ही नियम रहता है। तुम सबने मुझे महात्मा बना दिया है न? फिर मैं झूठा महात्मा ही क्यों न होऊँ! लेकिन हमारा नियम

यह है कि 'महात्मा' शब्द आया कि सब हो गया। उसका सच्चा झूठापन देखने की जरूरत नहीं।

(इसके बाद बापू रोज की डाक और 'हरिजन' पत्रो के लिए लेख लिखने लगते हैं, परन्तु खासी बेतरह आ रही है। खांसी के कारण दर्द से वे बेचैन हो उठते हैं, पर उधर ध्यान न देकर काम मे लगे रहते हैं।)

डाक्टर : बापू, इतनी तकलीफ है। पेनिसिलिन ले लो तो सब ठीक हो जायगा।

बापू : मेरा राम नाम कहा गया ? अगर राम नाम हृदय मे उतर जाय तो उसमे इतनी शक्ति है कि खासी कल चली जाय। और तीन हफ्ते टिक जाय तो ससार के सामने घोषणा करने को तैयार हू कि मेरा राम नाम झूठा है।

डाक्टर : वह सब ठीक है लेकिन विज्ञान ने इतनी खोज की है उसे आप गलत कैसे कह सकते हैं ? आप चाहे जितने दिल मे राम नाम लेनेवाले लाइये मैं उनमे कॉलरा फैला सकता हू।

बापू : यह गर्वोक्ति है। विज्ञान को अभी बहुत खोज करनी बाकी है। अभी तो सिर्फ उसकी शुरुआत ही हुई है। लेकिन अगर राम नाम श्रद्धा से लिया जाय तो दुनिया मे कोई बीमार ही न हो। दुनिया के लोग निष्पक्ष और निष्पाप बन जाय तो बीमारी का काम ही क्या ? और अपने हिन्दुस्तान की हालत तो देखो, यहा कुदरत सब कुछ देती है पर हम हर चीज के लिए बाहर के मोहताज रहते हैं। मैंने इस देश के लिए बहुत कुछ किया। अब तो यही जी चाहता

है कि इस दुनिया मे राम राम करता हुआ चला जाऊँ। डाक्टर लोग जैसे विज्ञान की खोज करते है वैसे ही मैं 'राम नाम' की खोज करता हू। आप सब आज मुझे जन्म दिन के निमित्त प्रणाम करने के लिए आये है और मुझे समझा रहे हैं, यह आपके प्रेम की निशानी है। लेकिन अब मैं तो चाहता हूँ कि अगली चरखा जयती पर मैं यह आग देखने के लिए जिन्दा न होऊँगा या हिन्दुस्तान बदल गया होगा। इसलिए मेरी लबी उम्र के लिए कामना करने के बजाय, मैं जैसी प्रार्थना करता हूँ वैसी ही आप भी कीजिये।

(कृपलानी जी, सुचेता कृपलानी और अन्य कितने ही लोगों का आना। सब बापू के चरण छूते और दीर्घायु की कामना प्रकट करते हैं।)

मनु : बापू, आज हम सबने तो उपवास किया है पर आप क्यो उपवास कर रहे है ?

बापू : आज ही तो परोपकारी देव चरखे का जन्म हुआ है। उसके जन्मदिन पर उपवास करके और पवित्र होकर हम प्रार्थना करें कि हे चरखा देवता, हमे अपनी शरण मे रखना। इसलिए मेरा उपवास नही है कि आज मेरा जन्मदिन है और उसे मैं महत्व का समझ रहा हू।

(सब खिलखिलाकर हँस पडते हैं और बापू भी उनकी हँसी मे योग देते हैं। इसके बाद सब जाते हैं। बापू भी स्नान के लिए प्रस्थान करते हैं। मीरा बहन फूल लेकर आती हैं और बापू की बैठक के आगे फूलों से ॐ, हे राम और क्रास अंकित करती हैं।

बापू स्नान करके आते हैं तो सब उन्हे सूत के हार पहनाती हैं। उनके पैर छूती हैं।)

बापू आज इस समय सब धर्मों की प्रार्थना होनी चाहिए।

(सब लोग प्रार्थना की मुद्रा मे खड़े होते हैं उसी समय जवाहरलाल, इन्दिरा गांधी, घनश्यामदास बिड़ला, कन्हैयालाल मुंशी, सी एच भाभा, डा० जीवराज मेहता, वल्लभ भाई आदि कितने ही विशिष्ट लोग आते और प्रार्थना मे शामिल होते हैं। प्रार्थना के बाद सब बापू को प्रणाम करते और बधाई देकर जाते हैं। बापू को फिर खांसी शुरू होती है।)

एक भाई बापूजी, आपकी खासी अभी नही मिटी ?

बापू राम होगा तो मिटेगी, नही तो मुझे इस खासी के साथ जाना अच्छा लगेगा। अब मैं १२५ साल जीना नही चाहता। आपको भी आज यही प्रार्थना करनी चाहिए कि हे भगवान, या तो इस बूढे को इस दावानल से उठा ले या फिर हिन्दुस्तान को अच्छी बुद्धि दे। अंग्रेजो के साथ लंबे संघर्ष मे मै कभी निराश न हुआ था लेकिन घर की बातें किसे कहे ? भाई भाई को मारना चाहता है। यह देखने के लिए मैं जीना नही चाहता।

(इसके बाद बापू को प्रणाम करने के लिए काका गाडगिल, डा० भटनागर, आर्थरमूर, वल्लभ भाई पटेल, मणि बहन, गणेशदत्त गोस्वामी, प्रो० अब्दुल मजीद, बर्मा के हाई कमिश्नर, चीन के हाई कमिश्नर का अपने प्रधान मंत्रियों के बधाई-संदेश और फल लेकर आना। फिर हुमायूं कबीर, लेडी माउन्ट बेटन और मोशिए लॉजियरे

श्रौर उनकी पत्नी का आगमन। बापू के पैरों के पास रुपये और गहनों का ढेर लगा है। एक हजार से भी अधिक देशी-विदेशी तार आये पड़े है। डॉ० राजेन्द्र प्रसाद का आना। सब बापू को बधाई देते हैं।)

ब्रजकिशन : (सूचित करते हैं) मुसलमानो के प्रतिनिधि आये है।

बापू : आने दो।

(सब आकर मुबारकबाद देते हैं। बापू मुस्करा कर उन्हें बैठने का इशारा करते हैं।)

ब्रजकिशन : शरणार्थियो के प्रतिनिधि।

बापू : उन्हे भी आने दो।

(वे आकर बापू को फूल भेंट करते हैं।)

ब्रजकिशन : व्योपारियो के प्रतिनिधि।

बापू : वे भी आयें।

(वे प्रवेश करके रुपयों की थैली बापू के चरणो मे रखते हैं।)

राजेन्द्र प्रसाद : बापू, सब लोग आपको बधाई देते और आपके १२५ वर्ष जीने की कामना करते है।

बापू : आप सब लोग मुझे बधाई देने आये हैं। देश विदेश से बधाई के सैकडो तार प्राप्त हुए है। शरणार्थी भाइयो ने मुझे फूल भेंट किये हैं। सदिच्छाओ के रूप मे पैसे और तरह तरह के उपहार दिये गये हैं। पर मैं अपने मन मे पूछता हूँ कि क्या इन्हे बधाई कहूँ? क्या इन्हे मातमपुर्सी कहना ज्यादा ठीक न होगा? आज मेरे दिल मे

दुःख और सताप के सिवा कुछ नही है। एक समय था जब जनसमूह पूरी तरह मेरे कहने के अनुसार चलता था। आज मेरी आवाज अरण्यरोदन हो गई है। आज तो लोगो के मुँह से एक ही बात सुनाई पडती है कि हिन्दुस्तान मे मुसलमानो को नही रहने देंगे। लेकिन आज अगर मुसलमानो के खिलाफ उनकी आवाज है तो कल पारसियो, ईसाइयो और यूरोपियनो पर क्या बीतेगी, यह कौन कह सकता है? बहुत से दोस्तो ने यह कामना प्रकट की है कि मै १२५ साल तक जिन्दा रहूँ, पर मैंने अब यह इच्छा छोड दी है। जब नफरत और खूरेजी वातावरण को गन्दा बना रहो हो तब मैं जिन्दा नही रहना चाहता। आप अपने को न बदल सके तो दीर्घायु के स्थान पर मेरी मौत की कामना करे। मैं आपका आभार मानूगा। अधिक क्या कहूँ।

(सबको हाथ जोड लेते है। सब प्रभावित हो जाते और एक एक कर अभिवादन करते और चले जाते है। दर्शनार्थियों की भीड़ तो बराबर ही आती जाती रहती है।)

ब्रजकिशन . (सबके चले जाने के बाद) बापू, आप इतना कहते है पर असर नही होता। आदमी को सद्बुद्धि कभी आयेगी भी या नही ?

बापू आदमी पर से मेरा विश्वास डिगा नही है। वह पूरी तरह कायम है। मानवता एक महासागर है। यदि महासागर की कुछ बूदे गँदली हो जाय तो सारा महासागर गँदला नही होता। इसीलिए मेरी आशा कायम है।

व्रजकिशन · आप जिस आदमी पर विश्वास करते है वह वही है न जो आपके चरणों की धूल को माथे पर लगाता है, आपको श्रद्धाजलिया अर्पित करता है परन्तु आपके उपदेशो को ठुकराता है ? वह वही आदमी है न जो आपके शरीर को पावन मानता है पर आपके विचारो को अपावन ? वह आप मे विश्वास करता है आपके सिद्धातो मे नही।

बापू : फिर भी वह विश्वास के योग्य है। वह पुण्यपथ पर लाया जा सकता है। मेरे जीवन मे हुई अनुभवो की परपरा ने मुझे बताया है कि मे आदमी पर विश्वास रक्खू। उसके प्रति आशावादी रहूँ। ईश्वर पर मैं अटल श्रद्धा रख सकता हूँ तो आदमी पर क्यो न रक्खू ?

व्रजकिशन . पर आज का आदमी अपने असली रूप मे है कहाँ ?

बापू तभी तो मैं दर्पण लिए उसके पीछे पीछे फिरता हू। वह अपना चेहरा देख लेगा तो जरूर अपने असली रूप मे लोट आयेगा।

(मनु बहन का आना)

मनु : (व्रजकिशन से) मैं याद दिलाने आई हूँ कि बापू का तो आज उपवास है।

व्रजकिशन : और हम लोग खुशी मे आज ज्यादा खायेंगे।

मनु . मैंने आज सबसे पहले बापू को जन्म-दिन की बधाई दी है।

बापू . ब्रजकिशन, इस लड़की को भी मेरे उत्तर का सार बता देना, भाई। यह वंचित क्यों रह जाय ?

ब्रजकिशन (मनु से) चलो, सबको ही एक साथ सुना देता हूं।

(दोनों जाते हैं। अकेले बापू बैठे चरखा कातते रहते हैं।)

परदा बदलता है

दृश्य पाँचवाँ

दिल्ली की सेन्ट्रल जेल का अहाता

अक्टूबर १६४७ के किसी दिन का तीसरा पहर

(जेल के तीन हजार कैदी उपस्थित हैं। सब बापू के साथ प्रार्थना करने और उनका उपदेश सुनने आये हैं। भारी उत्कंठा और चहलपहल है। बापू उन कैदियों के बीच मंच पर बैठे हैं। सब खड़े होकर सम्मिलित स्वर से प्रार्थना का भजन गाते हैं।)

भजन

सुने री मैंने निरबल के बल राम।
पिछली साख भरू संतन की अड़े संवारे काम।
जब लग गज बल अपनो बरत्यो नेकु सरो नहि काम।
निरबल ह्वै बल राम पुकारयो आये आधे नाम।

द्रुपद-सुता निरबल भइ ता दिन गह लाये निज धाम।
दुःशासन की भुजा थकित भई वसन रूप भये श्याम।
अप-बल, तप-बल और बाहु-बल चौथो है बल दाम।
सूर किसोर कृपा से सब बल हारे को हरिनाम।

(सब बैठ जाते हैं)

बापू : (हँसते हुए) मैं तो एक पुराना अभ्यस्त कैदी हूँ। आप सब मुझे अपने से भिन्न न समझें। मेरे जीवन का बडा हिस्सा जेलो मे ही बीता है। भारत और दक्षिण अफ्रीका की भिन्न भिन्न जेलो मे मै बरसो रहा हूँ। कैदी भाइयो की तरह जेलो के साथ भी मेरा मोह हो गया है। वही मुझे आज यहा खीच लाया है। आजाद हिन्दुस्तान के आज के वजीर और गवर्नर भी मेरी तरह जेलो मे बडे हुए है। जेलो मे हमने बहुत कुछ देखा और सीखा है। लेकिन हम जब जेलो मे थे तब यहाँ की सरकार विदेशी थी। अब देश आजाद हो गया है। अब हमारी अपनी सरकार बन गई है। उस समय जेलो मे रहते हुए हम आजाद भारत की जेलो के बारे मे खूब सोचा करते थे। हम सोचते थे कि आजाद भारत की जेलो मे अपराधियो के साथ रोगी जैसा व्यवहार होगा और वे अस्पताल का काम करेगी। उनमे इलाज और सेहत के लिए कैदी दाखिल होगे। आज भगवान ने हमे वह मौका दे दिया है कि हम जेलो मे आवश्यक सुधार करें। उन्हे इन्सानो के रहने लायक बनायें। कोई जेल मे आये तो हँसता हुआ आये। वह यही विचार लेकर आये कि वह अपने रोग का इलाज कराने आ रहा है और जब जेल से बाहर निकले तो बिल्कुल स्वस्थ

ग्रौर जिम्मेदार नागरिक वनकर निकले । जेल के अधिकारियो से भी मैं दो शब्द कहना चाहूँगा । वे भी अपने पुराने तौर तरीको को वदल दे और कैदियो को किसी तरह महसूस न होने दे कि उनमे किसी किस्म का वदला लिया जा रहा है ।

एक कैदी . जेल के नियमो मे कव सुधार होगा ?

वापू . आशा करनी चाहिए कि जल्दी ही होगा । पर सुधार हो या न हो कैदियो को जेल के नियमो का पूरी तरह पालन करना चाहिए । मैं जेल मे सदा एक अच्छा कैदी वनकर रहा । आपको भी अच्छा कैदी वनकर रहना चाहिए ।—भजन से आज की सभा का आरभ हुआ है, मेरा सुझाव है कि भजन से ही उसकी समाप्ति हो ।

सव ठीक है ।

(प्रार्थना करनेवाला दल तथा सब कैदी खडे होकर गाते है ।)

भजन

प्रभु, मोरे अवगुण चित न धरो ।
समदरसी है नाम तिहारो, चाहे तो पार करो ।
इक नदिया इक नार कहावत मैलोहि नीर भरो ।
जब मिलकर सव एक वरन भये सुरसरि नाम परो ।
इक लोहा पूजा मे राखत, इक घर वधिक परो ।
पारस गुन ग्रौगुन नहि जानत, कचन करत खरो ।
यह माया भ्रम-जाल कहावत सूरदास सगरो ।
अवकी वेर मोहि पार उतारो नहि प्रन जात टरो ।

(बापू को प्रणाम करके सब अपने अपने स्थान पर जाते हैं। जेल के अधिकारी बापू का आभार मानते और उन्हे विदा करते हैं।)

परदा बदलता है

दृश्य छठा

बापू का निवास, बिडला भवन

अक्टूबर '४७ के पहले सप्ताह का कोई दिन

(बापू और डॉ० राजेन्द्र प्रसाद बैठे परामर्श कर रहे हैं। इन दो महापुरुषों की मंत्रणा तभी होती है जब सार्वजनिक संकट का कोई बड़ा सवाल खडा होता है। डॉ० प्रसाद बापू के अनन्य अनुयायी हैं। बापू के हर विचार मे वे उनके साथ एकमत होते हैं। बापू के वचनों पर अश्रद्धा का विचार ही उनके सामने नहीं उठता। वे जब मंत्रणा मे व्यस्त हैं तो अवश्य कोई विचारणीय विषय सन्मुख है।)

बापू : हमारा देश एक छोटा मोटा महाद्वीप है। उसमे बडी बडी नदिया, किस्म किस्म की उपजाऊ जमीनें और कभी न चुकने-वाला पशुधन है।

डॉ० प्रसाद . फिर भी हमे भोजन के लिए विदेशों का मुँह ताकना पडता है।

बापू हमारी मशीन मे कहीं न कहीं खराबी है।

डॉ० प्रसाद उसी को पकडने के लिए भोजन विशेषज्ञ इकट्ठे

हो रहे है।

बापू · कुदरती अकाल की बात तो समझ मे आती है। उसके सामने हम अपने को लाचार पाते है, पर इन्सान के पैदा किये हुए अकाल को तो असभव बनाना ही होगा।

डॉ० प्रसाद आज तो अनाज की तगी घटने के बजाय बढती जान पडती है। हमारे सामने दो प्रश्न हैं एक तात्कालिक आवश्यकता की पूर्ति, दूसरा भविष्य के लिए देश को आत्मनिर्भर बनाना।

बापू मेरा विश्वास है कि पिछली कुछ सदियो मे अगर हमारे देश की ओर दुर्लक्ष्य न किया गया होता तो आज इसका अन्न सिर्फ उसी के लिए काफी नही होता बल्कि महायुद्ध के कारण भोजन की तगी भोगती हुई दुनिया को भी कुछ अनाज यहा से मिल सकता।

डा० प्रसाद हमारे सामने अन्नोत्पादन की सभावनाए तो काफी है, पर वे सब समय-साध्य के साथ साथ व्यय-साध्य भी हैं।

बापू तात्कालिक आवश्यकता के लिए देखे तो दूसरे देशो से हमे कितनी मदद मिल सकती है ? मुझे विशेपज्ञो से मालूम हुआ है कि ऐसी मदद हमारी जरूरतो के तीन प्रतिशत से अधिक नही होगी।

डॉ० प्रसाद · ऐसा ही बताते है।

बापू · तब तो बाहरी मदद पर भरोसा करना बेकार है। हमारे देश मे खेती के लायक जो भूमि है उसके एक एक इच मे हम, ज्यादा पैसे दिलानेवाली चीजो के बजाय, रोज काम आनेवाले अनाज पैदा

करें। बाहरी मदद पर निर्भर रहने मे हो सकता है, कि देश के भीतर का जरूरत अनाज पैदा करने के हमारे उत्कट प्रयत्न मद पड जाय।

डॉ० प्रसाद : हा, इन सब बातो पर विचार करना होगा।

बापू : एक बात और, खाने पीने की चीजो को एक जगह जमा करके वहा से सारे देश मे पहुँचाने का तरीका तो बडा ही अनुचित है। विकेन्द्रीकरण ही एक रास्ता है जिससे काले बाजार को खत्म किया जा सकता है। चीजो को एक जगह जमा करके फिर इधर उधर लाने-ले जाने मे अनावश्यक खर्च बढता है। उनकी छीजत और कभी कभी बरबादी भी बडी मात्रा मे होती है। लोग एक एक छटाक अन्न के लिए तरसते है और इधर करोडो का नुकसान हो जाता है।

डॉ० प्रसाद : जिस देश मे सचार-साधन पूरी तरह विकसित न हुए हो वहा केन्द्रीकरण खतरनाक ही होता है। फिर छीजत, बरबादी और खर्चे का भी सवाल उपेक्षणीय नही है।

बापू : राशनिंग और कंट्रोल नियमित अर्थतंत्र की नियामतें हैं। जनतंत्र मे उन्हे लादने का उलटा असर होता है। जनता मे असुरक्षा की भावना बाजार को अस्थिर कर देती है।

डॉ० प्रसाद : अन्न पर से कन्ट्रोल हटाने की इच्छा होती है पर विशेषज्ञो द्वारा भय का भूत खडा कर दिया जाता है। उस समय सभी झिझक जाते हैं।

बापू : विशेषज्ञो के आकडो पर मुझे तो बहुत थोडी आस्था

है। आखिर युद्ध से पहले हम सब अन्न ही खाते थे। अनाज के राशनिंग का कोई उपयोग था भी तो वह कभी का खत्म हो गया। उसे अब जारी रखना भ्रष्टाचार को प्रश्रय देना है।

डॉ० प्रसाद बेशक, यह भी हमारी चर्चा का विषय है।

बापू . मेरी अगर कोई सुने तो मैं उपवास की बात भी रक्खूं। मुसलमान हिन्दू दोनों ही तो उपवास करते हैं। उनसे देश के करोड़ों भूखे लोगों के नाम पर पखवारे में एक दिन अन्न छोड़ देने को कहा जाय तो वे मान लेंगे। विदेशों से प्राप्त होनेवाली तीन फीसदी मदद से अधिक हम इस तरह बचा सकते हैं।

डॉ० प्रसाद मैं आशा करता हूँ कि हमारी कमेटी तबतक बैठकें करती रहेगी, जब तक वह देश के मौजूदा अन्न-संकट का कोई व्यावहारिक हल नहीं ढूंढ लेगी। उसकी प्रगति से मैं आपको अवगत करता रहूँगा।

बापू हां, इस सवाल ने बीच ही में मेरे ध्यान को बँटा लिया है। देश के भिन्न भिन्न भागों से इस संबंध में बहुत चिंताजनक खबरें आ रही थीं। तभी मैंने सोचा कि तुम आकर मेरे विचार सुन जाओ। अब तुम जाओ। तुम्हारी कमेटी आज ही बैठ रही है?

डॉ० प्रसाद आज ही।

बापू तो जाओ देर न करो।

(डा० प्रसाद प्रणाम करके जाते हैं।)

परदा बदलता है

दृश्य सातवाँ

बिड़ला भवन, बापू का कमरा
दिन के दो बजे का समय

(कांग्रेस के अध्यक्ष आचार्य कृपलानी का आगमन। आते ही चरखा कातते हुए तन्मय बापू के चरणों में श्रद्धावनत होकर प्रणाम करते हैं। बापू मुस्कराकर आशीर्वाद देकर उन्हें बैठने का आदेश देते हैं।)

बापू : मैं आपकी बात समझ पाया हूँ।

कृपलानी . मेरे लिए इतना ही कहना है। मतभेदों के साथ भी काम किया जा सकता है जहाँ तक गुंजाइश हो।

बापू . व्यक्तिगत मतभेद तो रहते हैं पर उनकी भी सीमा होती है। और जहाँ सिद्धान्त का सवाल उठ खड़ा हो वहाँ तो एक साथ काम करना कठिन ही हो जाता है।

कृपलानी . कांग्रेस-अध्यक्ष की हैसियत से मेरी कुछ जिम्मेदारी मैं समझता हूँ। यद्यपि कांग्रेस-अध्यक्ष सरकार में नहीं है पर आखिर उसका दल ही तो शासन चला रहा है। वह क्या कुछ कर रहा है इसकी जानकारी उसे उपलब्ध न हो तो वह अपने आपको अजीब स्थिति में तो पायेगा ही।

बापू मैं समझता हूँ। शासन-सत्ता में अनेक पेचीदगियाँ रहती हैं और फिर आज का वक्त निहायत नाजुक और खतरों से भरा

है। मैने एक साथ और अलग अलग वल्लभ भाई व जवाहरलाल से बाते की है। उनके और तुम्हारे दृष्टिकोण को समझा है। मैं खुद तो सत्ता से भी वाहर हू और कांग्रेस से भी। जो अनेक काम हुए और हो रहे है वे भी मेरे मन-मुताबिक नही कहे जा सकते। फिर भी मै देखता हूँ कि मेरी राय का जितना फायदा उठाया जाय वही वहुत है। इसीसे चिपटा चल रहा हू।

कृपलानी · पर मैं तो कांग्रेस से वाहर नही हू। मै तो उसके सिर पर हूँ। मुझे जब शीर्षस्थान पर बिठाया है तो उस पद की मर्यादा का मान आवश्यक हो जाता है। मुझे आज के अपने साथियो के व्यवहार से लगता है कि मै अविश्वस्त और अवाछित सा हो रहा हू। सत्ता का दल से सहयोग और समभाव न हो तो वे एक दूसरे के लिए वेगाने हो जाते है। नीति-निर्धारण की जानकारी को हस्तक्षेप समझ लेने से यह स्थिति पैदा हुई है। मैने विना किसी तरह की शिकायत के अपना कर्तव्य निश्चित कर लिया है।

वापू . यही ठीक है। मेरी भी यही सलाह है। एक ही भय हो रहा है कि आज जैसी हालत है उसमे जगह भरनेवाला आदमी मिलना कठिन है। मैंने यह भय सब पर जाहिर कर दिया है। छिपाकर रखने का सवाल भी नही है। तीस साल के तपे हुए सोने की कद्र न हो सके तो भी काम तो चलेगा ही।

कृपलानी : मेरी जगह दूसरा कौन होगा, यह सवाल मेरे सामने तो उठता नही। आपको भी इसकी चिन्ता नही करनी चाहिए। कांग्रेस एक वहुत वड़ी जमात है। उसमे व्यक्तियो का टोटा

कभी रहा नहीं। मैं उसे मझधार मे छोडने जैसी स्थिति समझकर अलग नहीं हो रहा हूँ। मेरा विश्वास है कि संगठन के, मेरे व देश के हित के लिए यह अवसर उपयुक्त है कि मैं अपना पद खाली करके हट जाऊँ। खींचतान करके उनसे चिपटे रहने में सबका अहित है।

बापू : मैं सहमत हूँ। इस समय बाहर आकर काम करने की जरूरत है। तुम्हारे जैसे कार्यकर्ता का जनता के बीच मे ही स्थान है। सत्ता के मोह के लिए तुम कांग्रेस के अध्यक्ष बने हो यह जानता तो मैं तुम्हे इतनी स्पष्ट राय न देता। मेरा आज से नहीं बहुत वरसो से विश्वास है कि कृपलानी कमलपत्र की तरह पानी मे रहकर भी उसमे लिप्त होनेवाला नहीं है।

कृपलानी : तो मैं चलता हूँ। आपका आशीर्वाद मेरे लिए सब से बडा सबल है।

बापू : जाओ। ईश्वर तुम्हारा भला करे। तुम्हारे हाथो देश के करोडो मूक और गरीब लोगों की भलाई हो। कांग्रेस और उसके कर्णधारों को अपना मार्ग खोजने के लिए प्रकाश मिले। बापू के आशीर्वाद तो बिना मांगे ही तुम्हे मिलते रहेगे। जल्दी जल्दी मिलते रहना।

(कृपलानी हाथ जोडकर प्रणाम करने के बाद जाते हैं दूसरे द्वार से मौलाना आजाद प्रवेश करते हैं)

मौ० आजाद : (झुककर) बापू को बदगी अर्ज करता हू।

बापू : आइये आजाद साहब।

मौ० आजाद : हम लोग आपको चैन नही लेने देते। हर

समय मताते रहते है ।

बापू और यह शरीर है किसलिए ? सेवा ही तो इसका धर्म है । सेवा इससे छीन ली जाय तो मैं जिन्दा नही रहना चाहूँगा ।— आप तो कई दिन बाद आये ?

मौ० आजाद कहा, अभी, दो दिन पहले तो प्रार्थना-सभा मे आपके दर्शन किये ही थे ।

बापू . (हँसकर) आज के तूफानी समय मे दिन मे दो चार बार मिलना भी कम है । हम ज्यादा से ज्यादा पास रहना चाहते है, पर मुश्किल तो यह है कि आपके ऊपर सरकार का भी तो भार है ।

मौ० आजाद और फिर कमजोर और अनभ्यस्त कधे है ।

बापू नया काम जरूर है पर सब जिन्दादिल और समझदार लोग हो ।

मौ० आजाद इस समय मे इसलिए हाजिर हुआ हू कि वल्लभ भाई से आप तय कर ले । हम तीनो को कुछ देर साथ बैठना है । मगलवार को कोई समय रख ले तो ठीक होगा । वल्लभ भाई से आप ही कह दीजिये, वे समय की सूचना आपको भेज दे और मुझे भी ।

बापू ठीक है । मै कह दूंगा । इस तरह समय निकाल कर हम थोडी देर साथ बैठ लिया करे तो हमारे कामो मे सामजस्य बना रहे ।

मौ० आजाद · यह अच्छा सुझाव है । जवाहरलाल को बताये तो शायद वे भी पसन्द करे ।

बापू : क्यो नही ?

मौ० आजाद . बस, मैं चला ।

(अभिवादन । बापू आशीर्वादात्मक हाथ उठा देते हैं। मौलाना जाते हैं ।)

परदा बदलता है

दृश्य आठवा

बिडला भवन, बापू के कमरे का बरामदा

रात्रि का प्रथम पहर

(मीरा बहन, मनु बहन, आभा गाधी और ब्रजकिशन सब आस पास, बरामदे मे जहाँ बापू लेटे हैं, बैठे हैं। बापू अपने को कुछ थका हुआ-सा अनुभव कर रहे हैं। आजकल विश्राम नाम मात्र को मिल पाता है। थोडी देर शाति से लेटकर कुछ बोलने की इच्छा हुई तो करवट बदल कर लडकियों की ओर मुँह कर लेते हैं।)

बापू · (मीरा को सामने पाकर) तुम अभी पूरी तरह स्वस्थ नही हुई हो। मैं तुम्हारे स्वास्थ्य की तरफ ध्यान दे सकूंगा यह आशा इस समय मत करना। मैं इस तूफान मे अपने को भूल गया हूँ और अपनो को भी भूल गया हूँ। वल्लभ भाई की वर्षगाठ पर बधाई के दो शब्द कहना भूल गया। ऐसा हो गया हू मैं। इसलिए तुम अपने स्वास्थ्य की चिंता रख लेना। खानपान मे कजूसी मत करना, उसके

विलास का तो तुमसे डर ही नही है।

मीरा मालूम पडता है किसी ने चुगली खाई है।

(हँसने की चेष्टा करती हैं।)

बापू : मान लो ऐसा ही हो या ऐसा क्यो सोचो ? तुम्हारे चेहरे मे ही क्या तुम्हारी दशा प्रकट नही है ? पर मैं तुम्हे चेतावनी देता हूँ कि यह चलेगा नही। बापू को तुम्हारी देखरेख के लिए राष्ट्रीय सकट के जरूरी कामो मे विरत होना पडे यह भी ठीक नही है।

मीरा . आप चिंतित कतई न हो। मलेरिया की अलामत बाकी है। मैं इस बार अच्छी तरह सतर्क हूँ। मैं अब इस काबिल हू कि किसी हल्के काम मे आपकी मदद कर सकू।

बापू : इसकी सलाह मैं अभी नही दे सकता। सुशीला आ गई है, यह अच्छा ही हुआ। उससे परामर्श करना तुम्हारे लिए बुरा न होगा। काम तो बहुत पडे है। तुम चारो को हिन्दुस्तान के भावी निर्माण मे बडा भाग लेना है।

मनु · (विनोद मे) बापू, अभी तक तो हमने कुछ बनाया नही।

बापू : कौन कहता है, नही बनाया है ?

आभा : बनाया होगा उसका तो पता नही।

मनु · पर बिगाडा है, उसका पता है।

बापू : लडकियो, तुम अपने काम को ओछा करके मत आको। तुम बापू के निर्माण मे रात दिन प्रेरक शक्ति बनकर समायी रहती हो। मैं क्या अकेला ही इतना सब कुछ करता हूँ ? मेरा झूठा गर्व

मेरे भगवान को पसन्द नही, इसीलिए मैं विनम्रता से यह स्वीकार करता हूँ। मैं झूठ नही बोलता।

(सब गद्‌गद्‌ हो जाती हैं। कुछ देर शांति रहने के बाद ब्रजकिशन कुछ पत्र सामने रखते हैं।)

ब्रजकिशन इन पर हस्ताक्षर करने हैं।

बापू : (कोहनी का सहारा लेकर हस्ताक्षर करते हुए) वल्लभ भाई को एक रुक्का भेजना जरूरी है। ग्राफ्नारो की शिकायत झूठी थी इसका इतमीनान हो गया है, यह उन्हे बताना है। एक मस्जिद तोडकर मदिर खडा करने की ताजा शिकायत आई है। उसका ब्योरा देना और यह पूछ लेना कि कल उन्हे फुरसत हो सकेगी ? लिख लो तो मेरे पास ले आना।

(ब्रजकिशन का कागज पत्र समेट कर जाना।)

मनु : बापू, कलकत्ता तो शान्त है।

ग्राभा : और दिल्ली ?

बापू . दिल्ली से अभी तक कोई आशा नही पर मैं निराश नही। कोई चमत्कार हो जाय तो ईश्वर जाने। उसे जो कराना मजूर होगा वही होगा।

मनु · कलकत्ते से चलते समय शहीद साहब की आँखें डबडबा आई थी। उस समय मुझे लगा था कि आपके शस्त्र अमोघ है। अपनी अहिंसा और सत्य की प्रेममयी छुरी से आपने सुहरावर्दी जैसे सगदिलो को दयावान बना दिया !

मीरा . इस अमोघ शस्त्र का प्रयोग यहा न करना पडे ऐसी

प्रार्थना हमे करनी चाहिए ।

आभा : और मुझे तो वह लडकी नही भूलती जिसके आरती उतारने पर बापू ने उसे कहा था, 'इस आरती को बुझाकर जितना घी हो किसी गरीब को दे दो । इस तरह मेरे लिए घी बरबाद करना क्या ठीक है ? आज गरीबो को घी का दर्शन भी नही होता ।'

बापू : मैं तो दरिद्रनारायण का उपासक हू और इसका मुझे गर्व है ।—अब तुम सब आराम करो । मैं 'हरिजन' के लिए लेख लिखकर ही शयन करूँगा ।

(सबका प्रस्थान)

परदा बदलता है

दृश्य नवा

बिडला भवन का अहाता प्रार्थना-सभा

अक्टूबर '४७ के किसी दिन का सायकाल

(बापू अपने आसन पर विराजमान हैं । आज किसी ने कुरान की आयतों मे से अल् फातिहा पढे जाने पर आपत्ति नहीं उठाई । इसलिए बापू प्रार्थना को स्वीकृति दे देते हैं । प्रार्थना करनेवाली पार्टी,

जिसमे सुशीला, मीरा, मनु, आभा आदि हैं, सायकालीन प्रार्थना प्रारंभ करती है।

प्रार्थना

त्वमेक शरण्य त्वमेक वरेण्यम्
त्वमेक जगत्-पालक स्वप्रकाशम्।
त्वमेक जगत् कर्तृ-पातृ-प्रहर्तृम्
त्वमेक पर निश्चल निर्विकल्पम्। *

अल् फातिहा

बिस्मिल्लाहिर् रहिमानिर् रहीम।
अल् हम्दुलिल्लाहि रब्बिल् आलमीन।
अर् रहिमानिर् रहीम, मालिकि योमिद्दीन। ‡

---

* तू ही एक शरण लेने योग्य, आश्रयस्थल है। तू ही एक वरण करने योग्य, इच्छा करने लायक है। तू ही एक जगत का पालन करने-वाला है, और अपने ही प्रकाश मे प्रकाशमान है। तू ही एक इस सृष्टि को पैदा करनेवाला पालनेवाला और नष्ट करनेवाला है। तू ही एक परम निश्चल है और तू ही परम निर्विकल्प है।

‡ पहले ही पहल नाम लेता हूँ अल्लाह का, जो निहायत रहमवाला मेहरबान है।
हर तरह की स्तुति भगवान के ही योग्य है।
वह सारे जगत का पालने पोसनेवाला और उद्धारक, परम कृपालु है।

ईयाक नग्रबुदु व ईयाक नस्तईन ।
इह् दिनस् सिरातल् मुस्तकीम ।
सिरातल् लज़ीन अन् अम्त अलैहिम ,
ग़ैरिल् मग़ज़ूबे अलैहिम व लज्जुआल्लीन । ‡
आमीन

राम धुन

रघुपति राघव राजा राम । पतीत पावन सीता राम ।
ईश्वर अल्ला तेरे नाम । सबको सन्मति दे भगवान ।

श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेव ।

बापू (प्रार्थना की तल्लीनता से जागकर) मैने शरणार्थियो के लिए कबलो की अपील की थी, उसका बहुत आशाप्रद फल हुआ है । सारे देश मे लोगो ने कबल और रजाइयाँ देने की उदारता दिखाई है । बहुत से भाइयो ने उनके लिए रुपये भेज दिये हैं । मुझे विश्वास है कि आनेवाली सर्दी मे उनसे लाखो बेआसरा इन्सानो को राहत

---

‡ पाप-पुण्य का वही निर्णायक है ।
हम तेरी ही आराधना करते है और तेरी ही मदद मागते है ।
ले चल हमे सीधी राह, उन लोगो की राह जिस पर तेरा कृपा-प्रसाद उतरा है ।
उनके रास्ते नही, जिन पर तेरी अप्रसन्नता हुई या जो पथभ्रष्ट है ।
तथास्तु

पहुचाई जा सकेगी। आपको यह जानकर खुशी होगी कि दाताओ मे से किसी ने ऐसा नही कहा कि अमुक जाति के लिए हमारा दान है। हिन्दुस्तान की जनता को मै जानता हूँ। वह इन्सान तो क्या पशु-पक्षी और कीट पतगो तक का दुख-दर्द नही देख सकती। उसका हृदय फूल से भी अधिक कोमल है। उसे उभाडा न गया होता तो इतना बडा पाप उसने कभी न होता। आप सब लोग भारत की कोटि कोटि जनता की भावना के प्रतीक बन जाय यही मेरी ईश्वर से प्रार्थना है।

गुरांदित्ता आपकी बात को हमने मान लिया है। उसका फल आप देख रहे होंगे, परन्तु दूसरी ओर के समाचारो मे कोई फर्क नही आया है।

बापू : दूसरी ओर सरकारी स्तर पर एहतिहाती कार्रवाई हो रही है। मैं तो उधर ध्यान तभी दे सकता हूँ जब इधर से सतोष हो जाय। अभी तक मेरे पास शिकायतें आ रही है कि मुसलमानो को बापदादो के मकान छोडने और पाकिस्तान जाने को बाध्य किया जा रहा है। तरह तरह की तरकीबो से उन्हे घर छुडवाकर कैंपो मे लाया जा रहा है ताकि उन्हें पैदल या रेल से उधर भेज दिया जाय। मुझे विश्वास है कि हमारी सरकार की यह नीति नही है। यही बात मैं उनसे कहता हूँ तो वे हँसकर जवाब देते हैं कि या तो मेरी जानकारी गलत है या सरकारी अधिकारी उस नीति पर नही चलते। इस तरह की आम शिकायत होने से मैं सोच मे पड जाता हूँ। अगर सरकारी कर्मचारी, जिन पर अमन और कानून कायम रखने का भार है, इस

तरह फिरकेवाराना ख्याल के हो जाते है जो सुसगठित हुकूमत की जगह बदअमनी का होना लाजमी है। यह देश को बरबादी की तरफ ले जानेवाला है। उच्चाधिकारियो का फर्ज है कि वे इस तरह की गिरावट से ऊपर उठकर निचले दरजे के कर्मचारियो के लिए आदर्श कायम करें।

गुराविता : और काश्मीर की नई मुसीबत उठ खडी हुई है।

बापू . हाँ, काफी गभीर। गवर्नरजनरल और उनकी कैबिनेट ने काश्मीर के महाराजा और उनके वजीर की काश्मीर को भारत सघ मे शामिल करने की इच्छा को मजूर कर लिया है। वहा हवाई जहाजो से फौज भेज दी गई है। काश्मीर पर अफरीदी कबायलियो की फौज ने हमला कर दिया है जिनकी रहनुमाई काबिल अफसर कर रहे है। वह बस्तियो को जलाती और लूटती हुई आगे बढ रही है। उसने श्रीनगर के बिजलीघर को बरबाद कर दिया है। इस बात पर भरोसा नही होता कि पाकिस्तान की सरकार से बढावा पाये बिना यह फौज काश्मीर मे कैसे घुस सकती है? समय पर भारत से सहायता पहुच जाने पर काश्मीर मे आत्म-विश्वास पैदा हो जायगा। नतीजा भगवान के हाथ मे है। आदमी तो केवल कर या मर सकता है। ऐसे मौके पर अगर स्पार्टावालो की तरह हिन्दुस्तान की छोटी सी फौज बहादुरी से काश्मीर की हिफाजत करती हुई बरबाद हो जाय, तो मेरी आखो मे एक आसू भी न आयेगा। और अगर शेख अब्दुल्ला और उनके मुसलमान, हिन्दू व सिक्ख साथी, मर्द औरतें सभी, काश्मीर की रक्षा करते हुए प्राण दे दे तो भी मैं परवाह नही

करूँगा। यह हिन्दुस्तान के लिए एक उदाहरण होगा, हम भूल जायगे कि हिन्दू मुसलमान सिक्ख अलग अलग है। और क्या अजब जो खुद यह उत्सर्ग कबायलियो को भी उनके पागलपन मे विरत कर दे। मैं तो हृदय परिवर्तन पर विश्वास रखता हूँ।

रामदीन . अनाज कट्रोल पर आपकी क्या राय है ?

बापू : मेरी राय जाहिर है। कन्ट्रोल मे धोखेबाजी बढती है। सत्य का गला घोटा जाता है। काला बाजार बढता है। चीजो की बनावटी कमी बनी रहती है। कन्ट्रोल लोगों को कमजोर बनाता, उनके उत्साह को खत्म करता है। लोग अपनी जरूरते खुद पूरी करना भूल जाते हैं। दूसरो का मुँह ताकना सीख जाते है। मैंने अपने दो पीढियो के लबे जीवन मे बहुत से कुदरती अकाल देखे है, लेकिन मुझे याद नही कि कभी राशनिग का खयाल आया हो। हिन्दुस्तान के गावो मे काफी अनाज, दालें और तिलहन है कन्ट्रोल ने उसे जहा का तहा रोक रक्खा है। अनाज की तगी साबित करने के लिए लबे-चौडे आकडे तैयार करना बेकार है। बढी हुई आबादी का भूत खडा करके हमे डराना बेकार है। हमारे मत्री जनता के हैं और जनता मे से हैं। उन्हें इस बात का घमड नही करना चाहिए कि उनका ज्ञान उन अनुभवी लोगो से ज्यादा है, जो मन्त्रियो की कुर्सी पर नही बैठे हैं। लेकिन जिनका विश्वास है कि कन्ट्रोल जितनी जल्दी हटे उतना अच्छा है। लोगो को कानून कायदो की रस्सी मे बांध कर ईमानदार रहना सिखाया जायगा तो लोकतत्र कहाँ रहेगा ?

(प्रवचन समाप्त होता है और लोग उठ खड़े होते हैं।)

परदा बदलता है

दृश्य दसवा

विडला भवन, बापू का कमरा

नवम्बर '४७ का पहला सप्ताह, दो पहर से पहले

(बापू से परामर्श करने मौलाना आजाद आये थे। कुछ मसलों पर बातचीत करके वे चले गये हैं। उन्हे गये पन्द्रह मिनट बीत गये हैं। बापू के स्मृति-पटल से उन मसलों ने अभी छुटकारा नहीं पाया है। वे कुछ कुछ उद्विग्न से आपही आप कहते हैं।)

बापू तिब्बिया कालेज क्या बद ही कर देना पडेगा ? हकीम अजमल खाँ की स्मृति क्या दिल्ली की जमीन से इस तरह मिट जायगी ? क्या उनके वारिसो को हिन्दुस्तान मे जगह नही रहेगी ? और, और मारकाट, लूट खसोट, कत्ल और मनमानी क्या इसी तरह चलती रहेगी। हिन्दुस्तान की आजादी का सवाल तो हल हो गया, पर हिन्दुस्तान मे आजादी का सवाल अभी कसौटी पर ही है। लोगो ने समझदारी से आपही उसे हल न कर लिया तो यह देश के भविष्य को और भी बुरे दिन दिखा सकता है। मेरे सारे प्रयत्नो के बावजूद क्षितिज पर निराशा की घटाएँ उमड रही हैं।

(एक पजाबी हिन्दू शरणार्थी देवराज का आना)

देवराज : (अभिवादन के बाद) मेरे कुछ प्रश्न है। इनका उत्तर आप चाहे तो प्रार्थना-सभा मे दे सकते है।

(एक पर्चा देना चाहता है।)

बापू : आप मुँह से ही बोलिए न, शायद मैं यही उत्तर दे दूँ।

देवराज : क्या आपने यह नही कहा था कि प्रार्थना-सभा मे एक भी आदमी कुरान की आयत पढने पर एतराज उठायेगा, तो आप उसका मान रखेंगे और उस दिन प्रार्थना नही करेंगे ?

बापू : जब मैंने पहले पहल एतराज उठाने पर प्रार्थना बन्द की थी तो मैंने कहा था कि मैं प्रार्थना इस भय से बन्द करता हूँ कि सभा के इतनी बडी तादाद वाले लोग विरोध करनेवाले पर क्रुद्ध होकर उसके साथ दुर्व्यवहार कर सकते है। तब से अब तो बहुत अंतर हो गया है कि वे न तो विरोध करनेवाले के प्रति मन मे गुस्सा लायेंगे और न किसी तरह का वैर। ऐसी सूरत मे मैंने आम प्रार्थना करने की बात मान ली। मैंने जनसेवक के नाते अपनी इतनी जिंदगी मे दिया हुआ वचन तोडने का कभी अपराध नही किया है।

देवराज : आप कुरान की आयतें पढते है तब आप यह भी कहते है कि सब धर्म समान हैं। फिर जपजी और बाइबिल मे से क्यो नही पढते ?

बापू (मुस्कराकर) भाई, शायद आप मेरे उस बयान को नही जानते जिसमे मैंने बताया था कि आश्रम भजनावली किस तरह तैयार हुई। उसमे बाइबिल और ग्रंथ साहब मे से तो काफी भजन

लिए गये है।

देवराज बड़े बड़े कांग्रेसी नेता पश्चिम पाकिस्तान से भाग कर आये हैं वे गरीब शरणार्थियो का साथ उनकी मुसीबतो और कठिनाइयो मे नही देते। वे तो जैसी हवेलिया वहा छोड़ आये हैं उनसे अच्छी यहा पा गये है और मौज करते है। गरीबो के पास न घर हैं न सरदी मे बचने के लिए कपड़े।

बापू : मैंने प्रार्थना-सभा मे ऐसे लोगो की खुद निंदा की है। उन्हे गरीब शरणार्थियो के दुख सुख मे उनके साथ रहना चाहिए। अगर वे ऐसा नही करते तो उनके लिए यह निहायत शर्म की बात है।

देवराज यहा दिल्ली मे आपका क्या काम है ? आप पाकिस्तान जा रहे थे वहा अभी तक गये नही। आप दुखी हिन्दुओ और सिक्खो की मदद के लिए वहा जाने के बजाय अपने मुसलमान दोस्तो की मदद करना क्यो ज्यादा पसन्द करते हैं ?

बापू मैं मानता हूँ कि मैं मुसलमानो और दूसरो का दोस्त हूँ क्योकि मैं हिन्दुओ और सिक्खो का भी वैसा ही दोस्त हू। दिल्ली के हिन्दू और सिक्ख शरणार्थियो को यहा के मुसलमानो के दोस्त बनकर यह साबित कर दिखाना है कि दिल्ली मे मेरे रहने की कोई जरूरत नही है। तब मैं इस विश्वास के साथ पाकिस्तान जा सकूगा कि मेरा वहा का दौरा बेकार नही जायगा।

देवराज . कस्तूरबा-फड को शरणार्थियो के लिए क्यो नही खर्च किया जाता ?

बापू : वह फड एक खास मकसद के लिए है और उसी मे खर्च होता है। शरणार्थियो की राहत के लिए उदारता मे पैसा दिया जा रहा है। अनेक सस्थाए, अनेक व्यक्ति इस कार्य को कर रहे है। सरदार पटेल ने खास अपील निकाली है। उसका उदारता से स्वागत हुआ है। मेरी कबलो की अपील पूरी तरह सफल रही है।

देवराज जब पाकिस्तान मे सूअरो के वध पर रोक लगा दी है तो यहा गोवध क्यो नही बद किया जाता ?

बापू : मै नही जानता कि पाकिस्तान मे सूअरो के वध पर रोक है। अगर है तो मुझे दुख है। मुसलमानो के लिए सूअर का मास खाने की मनाई है लेकिन गैरमुस्लिम को इसके लिए क्यो रोका जाय ? इसी तरह हिन्दुस्तान मे गैरहिन्दुओ पर हिन्दूधर्म के उसूल लागू किये जाय ऐसा नही हो सकता। मै गाय की भक्ति और पूजा मे किसी से पीछे नही हू। मैने कानून की मदद लिए बिना, दूसरे किसी हिन्दू के बनिस्बत, अधिक गायो को कसाई की छुरी से बचाया है।

देवराज आपको मैने कष्ट दिया है, इसके लिए क्षमा चाहता हू। मै सताया हुआ और सर्वस्व वचित शरणार्थी हू। मेरे मन मे, प्राण मे और रोम रोम मे जो आग जल रही है वह धीरे धीरे ही बुझेगी।

बापू : जिस समय आवश्यक हो उस समय सच बोलना ही पडता है, चाहे वह कितना ही नागवार क्यो न हो। अगर पाकिस्तान मे मुसलमानो के कुकृत्यो को रोकना है तो भारत मे हिन्दुओ के

कुकृत्यो का छत पर खडे होकर ऐलान करना होगा ।

देवराज   यह बात सही है । मेरी समझ मे आती है । मैं इसे याद रखने की कोशिश करूँगा ।

(वदना करके जाता है । बापू बैठे उसे दूर तक जाते देखते रहते हैं ।)

पटाक्षेप

अंक तीसरा

दृश्य पहला

कांग्रेस महासमिति का अधिवेशन

१५ नवम्बर १९४७

(सब नेता और प्रतिनिधि उपस्थित हैं। वातावरण गभीर है। बापू भी पहुँच गये हैं। कांग्रेस-अध्यक्ष आचार्य कृपलानी बोलने खडे होते हैं।)

कृपलानी . मैं सभा को सूचित कर देना चाहता हू कि जो परिस्थितिया पैदा हो गई है उनमे रहकर मेरा अपने पद पर कार्य करना उचित नही है। मेरा यह विचार रहा है कि काग्रेस अपने दल की सरकार के प्रति स्वतत्र और आलोचनात्मक दृष्टिकोण रख कर ही, सरकार मे पैदा होनेवाली, सभावित निरकुश प्रवृत्तियो को रोक सकती है। दल केवल रबड की मुहर का काम करके सरकार के कामो का समर्थन करने लगे तो उसका उपयोग कुछ नही रहता। उसका अस्तित्व काल्पनिक बन जाता है, लेकिन मेरी इच्छा काम नही दे सकी। सरकार ने अपने कामो मे न तो कभी परामर्श लिया और न पूरी तरह भेद की बातें ही दल के सामने रक्खी गई। ऐसी सूरत मे त्याग-पत्र देने के अलावा और कोई विकल्प मेरे सामने नही रह

जाता। मैने बापू के सामने सारी परिस्थिति रख दी थी। उनकी राय मे भी इस हालत मे त्याग-पत्र देना उचित है। अत मैं अपने अध्यक्षपद से त्यागपत्र उपस्थित करता हूँ।

(थोडे से विचार के बाद त्यागपत्र स्वीकार कर लिया जाता है और तय होता है कि कार्यसमिति नये अध्यक्ष का सुझाव सभा के सामने रक्खे। महासमिति इतना करके उठ जाती है। प्रतिनिधिगण चले जाते हैं तो कार्यसमिति की बैठक शुरू होती है। उसमे अध्यक्षपद के लिए सदस्यों से नाम मागे जाते है। बापू का मौनदिवस होने से वे अपने उम्मेदवार का नाम परचे पर लिखकर उसे जवाहरलाल को दे देते है। जवाहरलाल नाम पढकर सुनाते है, 'नरेन्द्रदेव'।)

जवाहरलाल मैं इसका समर्थन करता हूँ।

वल्लभ भाई · मै विरोध करता हूँ परन्तु नाम बाद मे सुझाने का हक सुरक्षित रखना चाहता हूँ।

(और भी कई लोग नरेन्द्रदेव के नाम का विरोध करते है इसलिए इस समय प्रस्ताव पर मत नही लिए जाते है और बैठक उठ जाती है। सदस्य परामर्श के लिए इधर उधर बिखर जाते है। केवल बापू चिंतित मुद्रा मे बैठे रहते है। थोडी देर मे राजेन्द्रप्रसाद का प्रवेश।)

राजेन्द्रप्रसाद : बापू, मुझे अध्यक्ष-पद के लिए खडे होने को कहा जा रहा है।

बापू : ऐं!

राजेन्द्रप्रसाद : हां, वल्लभ भाई और जवाहरलाल दोनो का

अनुरोध है कि

वापू यह प्रस्ताव मुझे पसन्द नही है।

राजेन्द्रप्रसाद : आपको पसन्द नही है तो मैं अपना नाम वापस ले लेता हू। आपकी राय विना मैं यह भार नही उठा सकता।

वापू : देख लेना, मैंने तो अपना निश्चय विना झिझक के प्रकट कर दिया है।

राजेन्द्रप्रसाद मैंने भी अपना इरादा वता दिया।

(वापू का प्रस्थान, जवाहरलाल, वल्लभभाई आदि का प्रवेश)

वल्लभभाई : इस समय एक विचारधारा का जुट चाहिए।

जवाहरलाल · हर काम मे रस्साकशी का मतलव होगा शासन ठप। हमे काम करना है न कि अपने विचारो को लेकर अखाडेवाजी मे उतरना।

राजेन्द्रप्रसाद : परन्तु मैं तो अपनी उम्मेदवारी वापस लेने जा रहा हूँ।

वल्लभभाई : क्यो ?

राजेन्द्रप्रसाद . वापू को पसन्द नही है।

वल्लभभाई : किन्तु यह तो ठीक न होगा।

जवाहरलाल आपको विचार करना चाहिए।

राजेन्द्रप्रसाद · मैं तो वापू का भक्त और अनुगामी हूँ।

(हँसते हैं)

वल्लभभाई वापू, तो वाद मे मान ही जायेंगे। आप इस

समय पीछे मत हटिये ।

जवाहरलाल मेरा भी आग्रह है ।

राजेन्द्रप्रसाद (सोच मे पड जाते हैं ।)

वल्लभभाई देश की हालत देखिये । फिर काश्मीर का सवाल है । चारो तरफ बादल उठ रहे हैं ।

जवाहरलाल आपको थोडा दृढ रहने की आवश्यकता है ।

राजेन्द्रप्रसाद . यह मेरे लिए बडा मुश्किल काम है । बापू की इच्छा का विरोध मैंने कभी नही किया । यह पहला ही अवसर होगा ।

वल्लभभाई इससे देश का भला होगा ।

(राजेन्द्रप्रसाद विवश हो जाते हैं । कार्यसमिति मे नाम प्रस्तावित होकर पास हो जाता है । महासमिति भी उस पर अपनी स्वीकृति प्रदान कर देती है । राजेन्द्रप्रसाद कांग्रेस के नये अध्यक्ष बन जाते हैं । बापू बैठे बैठे देखते रहते हैं । राजेन्द्रप्रसाद के अनुरोध से बापू का महासमिति के सामने प्रवचन होता है ।)

बापू : अगर मुझे पूरी ईमानदारी से राष्ट्रपिता कहा जाता है तो वह सिर्फ इसी अर्थ मे सच है कि सन् '१५ मे मेरे दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद कांग्रेस का जो स्वरूप बना उसके बनाने मे मेरा बडा हाथ था । इसका मतलब यह है कि देश पर मेरा बडा असर था । मगर आज मैं ऐसे असर का दावा नही कर सकता । इससे मुझे चिंता नही है, कम से कम वह होनी भी नही चाहिए । सबको सिर्फ फर्ज अदा करना चाहिए, नतीजे को भगवान के हाथो मे छोड़ देना चाहिए ।

आज अंग्रेजी हुकूमत नहीं है पर पुराने अंग्रेज अमलदारों की तरह काम करने का ढंग चल रहा है, ऐसी आम शिकायत है। हम जिन बातों के लिए अंग्रेज सरकार की आलोचना करते रहे हैं उनमें कोई भी बात जिम्मेदार मन्त्रियों के शासन में नहीं होनी चाहिए। न्याय और शासन के अधिकारों को अलग अलग किया जाना जरूरी है। आर्डिनेन्सों का शासन खत्म हो। वजीरों को जनता जब चाहे तब हटा सके। उनके कामों की जांच करने का अधिकार अदालतों को हो। इन्साफ सस्ता, सरल और बेदाग बनाने के लिए कुछ उठा न रक्खा जाय। शासन को धारासभाओं पर हावी न होने दिया जाय। चीजों पर कन्ट्रोल रखना गुनाह हो। मुझे उम्मेद है आप लोग सरकार को घूसखोरी, पाखण्ड और काले बजार को बढ़ावा देनेवाले कन्ट्रोलों को समाप्त करने की सलाह देंगे। दफ्तरी माहिरों के सुझाव अक्सर गलत होते हैं, उन पर अधिक भरोसा नहीं करना चाहिए। जनता की आवाज की कद्र की जानी चाहिए। क्या लोगों को गलतियां करने और उनसे सबक लेना देना बुरा है, यदि वे गलतियां ही कर रहे हों ?

(इसके बाद सभा दूसरे समय के लिए उठ जाती है।)

परदा बदलता है

दृश्य दूसरा

बिडला भवन, बापू का निवास-स्थान

रात के साढ़े तीन बजे का समय

(बापू और उनके सब साथी स्त्री-पुरुष प्रात कालीन प्रार्थना के लिए उपस्थित हैं, और सम्मिलित स्वर से प्रार्थना गान करते हैं।)

प्रात स्मरामि हृदि सस्फुरदात्म तत्वम्
सत्-चित्-सुख परमहस-गति तुरीयम्।
यत् स्वप्न-जागर-सुषुप्तमवैति नित्यम्
तद् ब्रह्म निष्कलमहम् न च भूत-सघ।

प्रातर् भजामि मनसो वचसामगम्यम्
वाचो विभान्ति निखिला यदनुग्रहेण। *

---

* मैं सवेरे अपने हृदय मे स्फुरित होनेवाले आत्मतत्व का स्मरण करता हूँ। जो आत्मा सच्चिदानद है, जो परमहसो की अतिम गति है, जो चतुर्थ अवस्थारूप है, जो जागृति, स्वप्न और सुषुप्ति तीनो अवस्थाओ को हमेशा जानता है और जो शुद्धब्रह्म है, वही मैं हू— पच महाभूतो से बनी देह मै नहीं हूँ।

जो मन वाणी के लिए अगोचर है, जिसकी कृपा से चारो तरह की वाणी प्रकट होती है।

यन् 'नेति नेति' वचनैर् निगमा अवोचुम्
त देवदेव मजमच्युतमाहुरग्र्यम् ।

प्रातर् नमामि तमस परमर्क-वर्णम्
पूर्णं सनातन-पद पुरुषोत्तमाख्यम् ।
यस्मिन् इद जगदशेषमशेष मूर्तो
रज्ज्वा भुजगमिव प्रतिभासित वै । *

वैष्णव जन तो तेने कहिये, जे पीड परायी जाणे रे ।
पर दुखे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे ।
सकल लोक मां सहु ने वंदे, निंदा न करे केनी रे ।
वाच काछ मन निश्चल राखे, धन धन जननी तेनी रे ।
समदृष्टी ने तृष्णा त्यागी, पर-स्त्री जेने मात रे ।
जिह्वा थकी असत्य न बोले, पर-धन नव झाले हाथ रे ।
मोह माया व्यापे नहिं जेने, दृढ वैराग्य जेना मनमा रे ।

---

* वेद भी जिसका वर्णन 'वह यह नही, यह नहीं' कहकर ही कर सके हैं, उस ब्रह्म का सवेरे उठकर मैं भजन करता हूँ। ऋषियो ने उसे देवो का देव, अजन्मा, पतनरहित और सबका आदि कहा है।

मैं सवेरे उठकर उस सनातन पद को नमन करता हू, जो अन्धकार से परे है, सूर्य के समान है। पूर्ण पुरुषोत्तम नाम से पहचाना जाता है, और जिसके अनत स्वरूप के भीतर यह सारा जगत् उसी तरह दिखाई देता है जिस तरह रस्सी मे साप।

राम नाम शुं ताली लागी, सकल तीरथ तेना तनमा रे।
वणलोभी ने कपटरहित छे, काम क्रोध निवार्या रे।
भणे नरसैयों तेनुं दरसन करता, कुल एकोतर तार्यां रे।
रघुपति राघव राजाराम, पतीत पावन सीताराम।
ईश्वर अल्ला तेरे नाम, सबको सन्मति दे भगवान।

(प्रार्थना के उपरांत सब बापू को नमन करते हैं और आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।)

बापू . आज बहुत थोडे से पत्र लिखने हैं।

मनु : तो जल्दी घूमने चल सकेंगे।

बापू : घूमना तो समय पर ही होगा। तब तक दरिद्रनारायण के देवता चरखा भगवान की उपासना आनद से हो सकेगी। तुम लिखने का सामान ले आओ।

(मनु जाती है और लिखने की सामग्री लेकर आती है।)

मनु : मेरी डायरी मे कल आपके हस्ताक्षर नही हो पाये हैं।

बापू वह भी ले आओ। डायरी मे हस्ताक्षर कराना भूलना प्रमाद का लक्षण है, और प्रमाद कार्यकर्ता को मार डालनेवाला है।

(मनु डायरी लाकर बापू के आगे धरती है। बापू उसे पढते और सही करते हैं। इसके बाद कुछ बोलकर मनु को लिखाते हैं। आप चरखा कातते जाते हैं। साढे पाच बजे घूमने निकलते हैं, मनु और आभा बापू के साथ जाती हैं।)

सुशीला : (मीरा से) सुचेता जी आनेवाली है। शरणार्थी कैंपो मे जाना है।

मीरा : बापू कहे तो मैं भी चलूगी ।

सुशीला : स्वास्थ्य को थोडा और ठीक हो लेने दो । तुम्हे तो वहा काम करना है ।

मीरा : मैं अब बीमार नही हूँ । बापू की ऐहतिहात ने मुझे काम करने से रोक रक्खा है । तुमने तो परीक्षा की थी न ?

सुशीला : बापू के रोगी पर मेरी परीक्षा नही चल सकती । तुम्हे काम पर लौटने का प्रणाम-पत्र अपने फिजीशियन से ही लेना होगा ।

मीरा : बापू दूसरो के स्वास्थ्य के लिए आवश्यकता से अधिक सतर्क रहते है । अपने स्वास्थ्य की तो आजकल चिंता ही छोड दी है ।

सुशीला : वर्तमान घटनाओ ने उन्हे जीवन के प्रति उदासीन बना दिया है ।

मीरा . दिल्ली से वे सकुशल उबर जाँय तो बडी बात होगी । मैं तो रातदिन यही मनाती हूँ कि दिल्ली की परीक्षा के ये दिन किसी तरह निकल जाय । इसमे मेरा भी स्वार्थ है । बापू पशुलोक मे पधार कर उसे अपनी चरण-रज से पवित्र करे और बडी साध से बनाये ककरीट के टब मे स्नान कर मेरी मनोकामना को सफल बनाये । न जाने वह दिन कब देखने को मिलेगा ?

सुशीला : सारे जीवन भर जिस आदमी ने अपने आपको परीक्षाओ मे तपाया है, वह भी अनुभव करता है कि यह सबसे बड़ी परीक्षा है ।

मीरा : हर घडी यही लगा रहता है कि न जाने क्या हो।

(बापू, मनु और आभा का आना)

बापू . (मीरा से) तुम्हे हमारे साथ न घूम सकने का पछ-तावा नही होना चाहिए। मैं तुम्हारे स्वास्थ्य को छुईमुई नही समझ रहा हू। वह जितनी जल्दी हो पहले जैसा हो जाय, इसके लिए

मीरा अब तो आपको मुझे पूर्ण स्वास्थ्य का प्रमाणपत्र दे ही देना चाहिए। उसके बिना मेरा कोई उपयोग नही।

बापू . सुशीला कह रही होगी ? तुम्हारे उत्साह को देखकर मुझे तुम्हे पाबन्दियो से मुक्त करने मे कोई हर्ज नही मालूम पडती।

(इसी समय कुछ व्यक्ति मिलने के लिए आते हैं। वे सोनीपत मे व गुडगाँव के पास ईसाइयों के साथ हुए दुर्व्यवहार की शिकायत करते हैं। बापू उनकी बातें सुनते और उन्हे आश्वासन देकर विदा करते हैं। उनके जाते ही कुछ मुसलमान भाई आते हैं वे सिक्खों द्वारा नगर मे फैलाये जानेवाले आतक का जिक्र करते हैं। उन्हे भी बापू ढाढस देकर भेजते है। बाबा बचित्तरसिंघ तुरत बाद ही प्रवेश करते हैं।)

बचित्तरसिंघ आज गुरपर्व है।

बापू : है, किसी ने निमत्रण तो भेजा था।

बचित्तरसिंघ · तो आज आपको चलना है।

बापू . मुझे ? मैने सिक्ख भाइयो को बहुत कडुए घूँट पिलाये है। क्या वे मेरी बात सुनेगे ?

बचित्तरसिंघ : जरूर सुनेगे। हजारो सिक्ख स्त्री-पुरुष, जो

दुखी होकर आये हैं, आपकी बात सुनना चाहते हैं। आप वचन दीजिये कि चलेंगे।

बापू चलूंगा। मुझे क्या आपत्ति हो सकती है ?

बचित्तरसिंघ : मैं शेख़ अब्दुल्ला को लेने जा रहा हूं।

बापू : शेख़ अब्दुल्ला सिक्खो की सभा मे जायेंगे ? उन्हे मुसलमान होने के नाते सिक्ख लोग बरदाश्त कर लेंगे ?

बचित्तरसिंघ · उन्होने काश्मीर मे बहुत बडा काम किया है। काश्मीर के हिन्दू-सिक्ख और मुसलमानो को तो एक साथ जीना या मरना है। उन्हे तो सभा मे आना ही है।

(बाबा बचित्तरसिंघ का जाना)

सुशीला . तो आप गुरुद्वारे मे जायेंगे ?

बापू · जाऊंगा, इसमे अब क्या सदेह ?

मनु : और वहा क्या कहेंगे ?

बापू · सिक्खो की खुशामद नही करूंगा।

मनु · आप सच सच कहेंगे तो वह बहुत कडुआ होगा। उन्हे सहन हो जायगा ?

बापू : उन्हे अपनी दुर्बलताओ और बुराइयो को सुनने के लिए तैयार रहना चाहिए। उन्होने आज चांदनी चौक को ऐसा बना रखा है कि वहा एक मुसलमान दिखाई नही देता। वे मुस्लिम मोहल्लो मे शराब पीकर नगी तलवारें घुमाते और लोगो को घर खाली करने के लिए धमकाते हैं। उन्होने गरीबो को सताने और कमजोरो पर आतक जमाने मे कुछ उठा नही रक्खा है। अब वे जहा-तहा ईसाइयो को भी

सताने लगे है। आज उनके लज्जाजनक कामो से दिल्ली का सिर शर्म से झुक गया है। गुरु नानक की जयन्ती मनानेवाले सिक्ख नानक की बाते नही मानते। वे गुरुगोविन्दसिंह के जीवन से सीख नही लेते जिनके कई मुसलमान शिष्य थे और जो उनकी रक्षा करते थे। सिक्खो को सच्चे अर्थो मे सिक्ख बनना चाहिए।

मीरा (हँसती हुई) बापू, आपने तो यही भाषण दे डाला।

बापू पर तुम लोग बताओ, इस तरह की बातें न कहकर मैं वहा क्या कहू?

मनु · बापू, तो अब हम सब आपको बतायेंगी कि आप क्या कहेगे?

(सब खिलखिलाकर हँसती हैं। अपने पोपले मुँह से बापू भी योग देते हैं। बाबा बचित्तरसिंघ और शेख अब्दुल्ला साथ साथ आते हैं।)

बचित्तरसिंघ : (उच्च स्वर से) लीजिए, शेख साहब हाजिर हैं।

(शेख अब्दुल्ला बढकर बापू को अभिवादन करते हैं।)

बापू : आइये शेख साहब, आपने बेमिसाल काम किया है। काश्मीर के मुट्ठी भर हिन्दुओ और सिक्खो का मुँह देखकर आप काम करते हैं। उन लोगो को जो चीज पसन्द न हो उसे आप नही करते। जम्मू मे हुई शर्मनाक हरकत पर भी आपने दिमाग नही खोया। आपकी उदार दृष्टि का ही नतीजा है कि आज काश्मीर मे

सब साथ रहते है।

शेख अब्दुल्ला आपने तो मुझे आसमान पर उठा दिया। मैं तो आपके कदमो पर चलने की कोशिश भर करता हूँ।

(विनम्रता से झुकते हैं। बापू उनके ऊपर वरदहस्त रखते हैं। बाबा बचित्तरसिंघ इस दृश्य को गद्‌गद् होकर देखते रहते हैं।)

परदा बदलता है

दृश्य तीसरा

बिडला भवन, बापू का कमरा

दिसम्बर '४७ का आरभ, समय दोपहर दिन

(बापू अभी अभी थोडी देर आराम करके उठे हैं। इस बीच कितने ही लोग आये और दर्शन करके चले गये हैं। एक खद्दरधारी सज्जन कुरते पर नेहरूकट जाकट पहने आते और बापू को प्रणाम करके खडे हो जाते हैं। बापू का ध्यान अचानक उनकी ओर चला जाता है।)

वे : मुझे अमीचन्द कहते हैं।

बापू : कहिये अमीचन्द महाशय !

अमीचन्द : विश्व के एक महापुरुष के दर्शन करके मैं धन्य हुआ।

बापू : मैं तो महापुरुष नही। सबका विनम्र सेवक भर हू।

अमीचन्द : जिस महात्मा का यश दुनिया का ओर-छोर नही जानता, वह इतना सरल है कि कोई कल्पना नही कर सकता।

बापू . आपके पधारने का कोई विशेष प्रयोजन हो तो मैं जानना चाहता हू ?

अमीचन्द : मैं आपके वक्तव्य या प्रश्नो के उत्तर पढता हूँ तो उनमे 'अगर यह सही है तो' ऐसा प्राय पाता हूँ। आप किसी बात का तत्काल उत्तर देने का लोभ क्यो करते है ? क्यो नही यह मालूम कर लेते कि यह बात सही है या नही।

बापू : मैंने जब जब ऐसा किया है तब तब कुछ गँवाया नही है। जो काम उस समय मेरे हाथ मे था उसमे कुछ सहूलियत ही हुई। 'अगर' के साथ किसी आरोप की चर्चा करने मे सचाई को आँच नही पहुचती। और छानबीन करने के बाद वह गलत साबित हो तो उसको सुधारने के लिए जगह रह जाती है। आज हवा बिगडी हुई है। एक दूसरे पर इलजाम ही इलजाम लगाये जाते है। ऐसी हालत मे यह सोचना कि हम गलती कर ही नही सकते, मूर्खता होगी। हम ऐसा दावा कर सकें यह खुशकिस्मती आज कहा ? अगर मेहनत करके हम झगडे को फैलने से रोक सके और फिर उसे जडमूल से उखाड फेकें, तो बहुत है। अगर हम अपने दोष देखने और सुनने के लिए अपनी आखें और कान खुले रखे, तभी हम ऐसा कर सकेंगे। कुदरत ने हमे ऐसा बनाया है कि हम अपनी पीठ नही देख सकते। उसे तो दूसरे ही देख सकते है। इसलिए अक्लमदी यही है कि दूसरे

देख सकते है उससे हम फायदा उठाये ।

अमीचन्द : यह तो मानने जैसी बात है ।

बापू : काठियावाड और जूनागढ की चर्चा करते समय मैंने 'अगर' का प्रयोग न किया होता, तो अब जब उन खबरो के अतिरजित होने की बात स्पष्ट हो गई, मेरे लिए अपने को ठीक करने मे कितनी दिक्कत आती ? 'अगर' के प्रयोग ने मुझे बचा लिया है । वह वाणी के सयम का उपाय प्रदान करता है ।

अमीचन्द : शरणार्थी शिविरो से लगाकर जीवन के हर एक क्षेत्र मे यह जो भ्रष्टाचार फैल रहा है वह कैसे दूर हो, और उसे कौन दूर करे ?

बापू : हमको ही उसे दूर करना होगा । हमारे अन्दर के निस्वार्थ सेवाभावी लोगो से ही यह होगा । सत्ता का मोह त्यागकर रचनात्मक कामो मे लगने की प्रवृत्ति कम हो गई है । उसे बढाना होगा । राजनैतिक सत्ता का त्याग करके लोगो के मन को वश मे करना सीखना होगा । वही वास्तविक सत्ता होगी । वही देश के दुख दारिद्र, मनोमालिन्य और भ्रष्टाचार को दूर कर सकेगी ।

अमीचन्द · तो काग्रेस या सरकार इन कामो को क्यो नही उठाती ?

बापू . आज के काग्रेस-जनों मे रचनात्मक कामो के लिए उत्साह और दिलचस्पी नही है । हमे यह मान लेना चाहिए कि हमारे स्वप्नो की समाज-व्यवस्था आज की काग्रेस के द्वारा प्राप्त नही होगी । मैं जानता हूँ वे सब मेरे चरणो मे अब भी सिर झुकाते हैं पर मेरे

बताये मार्ग पर चलने का साहस उनमे नही है। आज गाधीवाद का नारा रह गया है जिसे काग्रेसी सत्ताधर शासन की शान प्रदर्शित करने के लिए लगाना आवश्यक समझते है। मै आज अपने को जिदा नही मानता पर यह अवश्य चाहता हूँ कि इतनी कुरबानी के बाद पाई हुई आजादी के लिए कोई खतरा उत्पन्न न हो। वह बनी रहेगी तो देश के उद्धार की आशा विलुप्त नही होगी।

अमीचन्द आप अपने हाथो से अपने स्वप्नो का भारत क्यो नही बना जाते ? आपकी बात जितनी लोग मानते है उतनी और किसकी मानेगे ?

बापू . मै अपने जीवन की आशा खो चुका हू। १२५ साल जीने का मेरा उत्साह भारत-विभाजन के साथ ही भग होगया। बाद की घटनाओ ने मुझे विवश कर दिया है। आज मै अपने भगवान से मौत का ही वरदान माँगता हूँ। उसने सदा मेरी इच्छा का मान रखा है। इसका भी रखेगा, ऐसी आशा कर सकता हू।

(बापू मौन हो जाते हैं और अमीचन्द को भी कुछ आगे पूछने का उत्साह नही रह जाता। वह थोडी देर उस मौन मूर्ति के आगे भावावेश मे खडा खडा देखता रहता, फिर धीरे धीरे चला जाता है।)

परदा बदलता है

दृश्य चौथा

बिड़ला भवन, बापू का कमरा

दिसम्बर १९४७, मध्याह्नोत्तरकाल

(कई बार प्रार्थना अस्वीकार कर देने के बाद आज बापू ने एक पत्रकार को भेंट करने की छूट दी है। पत्रकार समय पर आ पहुंचा है। कुछ कमजोरी अनुभव होने के कारण बापू ने, बिस्तर पर लेटे रहकर, उत्तर देने की स्वीकृति पत्रकार से ले ली है। उसके लिए बिना सकोच क्षमायाचना भी कर ली है।)

बापू : लिखित प्रश्नावली हो तो मुझे दे दे। मै समाधान करता चलूं।

पत्रकार : मै लिखकर तो कुछ लाया नही हू।

बापू : न सही।

पत्रकार : आप किस आधार पर समझते है कि दोनो ओर के उखडे हुए लोगो को फिर अपने अपने घरो मे आबाद किया जायगा ?

बापू : आधार यही है कि हिन्दुओ और सिक्खो को कभी यह नही कहा गया था कि पाकिस्तान बन जाने पर तुम्हारा सब कुछ छीन लिया जायगा, जला दिया जायगा। इसलिए दोनो सरकारो की जिम्मेदारी है कि वे अपने यहा के बहुमत के पागलपन भरे कामो का परिमार्जन करे। इसके सिवा कोई दूसरा रास्ता नही है। ऐसा न करने पर वे दुनिया मे अपना मुंह दिखाने लायक न रहेगे।

पत्रकार . पहल और ज्यादती कहा अधिक हुई है इसका विचार किये बिना क्या समस्या का हल सभव है ?

बापू जरूर, जो हो चुका उसे भुलाये बिना कुछ सभव नही है। काटे पर चढा कर अपराधो की तौल करना समझौते का मार्ग नही। विगत कामो के लिए उदारतापूर्वक क्षमादान, आगे के लिए सम्मानजनक शर्तों के साथ अल्पसख्यको की सुरक्षा का वचन। इतना हो जाय तो लोग आप ही लौटने लगेगे। कोई अपना घर-बार, बाप-दादो की जगह, छोडना नही चाहता। यदि ईश्वर ने मुझे उठा न लिया तो मैं सिक्ख भाइयो को एक बार फिर लायलपुर की भूमि पर खेती करते देखना चाहता हू।

पत्रकार क्या आपकी यह आशा दुराशा नही है ?

बापू सरकारे अपने दिये हुए वचन का सचाई से पालन करने को उद्यत हो जायें तो कोई दुराशा नही है।

पत्रकार 'इस सबध मे काग्रेस महासमिति का ठहराव एक ढोग के सिवा कुछ नही है।' यह कहना कहा तक ठीक है ?

बापू मै ऐसा नही मानता। दोनो देशो की जनता और सरकारें कोई प्रगति नही करेगी, इसकी सभावना पर विचार करना नकारात्मक स्थिति के आगे आत्मसमर्पण होगा।

पत्रकार भगाई हुई औरतो के उद्धार के लिए दोनो राज्यो की एक कान्फ्रेंस लाहौर मे हुई थी।

बापू . हाँ, यहा से कुछ बहनें उस कान्फ्रेंस मे शामिल होने गई थी। उसमे कुछ मुसलमान बहने भी आई थी। कहा जाता है कि

पाकिस्तान मे पचीस हजार हिन्दू और सिक्ख औरते उडाई गई और पूर्व पजाब मे बारह हजार मुसलमान औरतो को उडाया गया है। किसी भी जाति की एक भी औरत को उडाया जाना अधर्म की हद है।

पत्रकार : उस कान्फ्रेस मे क्या विचार हुआ ?

बापू : श्रीमती रामेश्वरी नेहरू और मृदुला बहन ने मुझे बताया है कि कान्फ्रेंस ने तय किया है कि औरतो को लोगो के घरो से निकाला जाय। इसके लिए कुछ बहने पुलिस और फौज के साथ पाकिस्तान व पूर्व पजाब जाय और बन्द की हुई बहनो को निकालने का काम करे। मेरी राय से यह काम हुकूमतो का है और उन्हें करना चाहिए। न तो धर्म-पलटने को और न निकाह को इस संबध मे कानूनी माना जाय। इस बात पर भी विश्वास न किया जाय कि औरतें अब लौटना नही चाहती हैं।

पत्रकार : ऐसी लौटी हुई औरतो को समाज मे सम्मान का दर्जा प्राप्त होगा, इसका उत्तरदायित्व कौन लेगा ?

बापू : उनके घर के लोगो को उदारता से उन्हे वापस रख लेना चाहिए। उनके सबध मे यह कहना कि वे समाज मे रहने लायक नही, घोर निर्दयता है।

पत्रकार : दोनो ओर लगभग चालीस हजार औरतो को उडानेवाले क्या सभी गुण्डे थे ?

बापू : मैं मानता हूँ कि दिमाग का सतुलन खोकर पागल बन जानेवाले शरीफ गुण्डो ने यह काम किया है। आज दोनो हुकूमतें

पगु हैं। उन्हे अपनी सारी ताकत लगाकर इस काम को हाथ मे लेना चाहिए। वे चाहे तो अपने अपने देश की सेवाभावी सस्थाओ की मदद ले सकती है, पर यह काम उन्ही को करना है और तुरन्त करना है।

पत्रकार : क्या सिंध मे हरिजनो को सताया जा रहा है ?

बापू : एक सिंधी डाक्टर ने कुछ दिन पहले हरिजनो की तकलीफो के बारे मे मुझे लिखा था कि यहा हरिजन बेहाल हो रहे है। अगर यहा केवल हरिजन रह जाय और दूसरे सब चले जाय, तो हरिजनो को या तो मरना है या गुलाम रहकर अत मे मुसलमान होना है। यहा की हुकूमत बहुत सी बाते कहती है मगर उसके मातहत लोग उन पर अमल नही करते।—अब सुना हे कि उन डाक्टर को भी पाकिस्तान की हुकूमत ने गिरफ्तार कर लिया है। हरिजनो के बहुत से दूसरे सेवको को भी पकडा जा चुका है। मैं पाकिस्तान की सरकार को सावधान करना चाहता हू कि इस हालत मे कार्यकर्ता वहाँ कैसे रह सकते है ?

पत्रकार : इसी सिलसिले मे क्या 'मुस्लिम-शाति-मिशन' की चर्चा कर लेना ठीक न होगा ?

बापू : मुस्लिम शातिदल ने दो बार पश्चिम पजाब का दौरा किया है। वह पहली बार एक महीना और दूसरी बार एक हफ्ता वहा घूमा। उसका कहना है कि पश्चिम पजाब की सरकार ने यह हिदायत जारी की है जो गैरमुस्लिम वापस आयेगे उनको उनकी मिल्कियत और जायदाद पर कब्जा दिया जायगा, उनकी पूरी हिफा-

जत की जायगी और उन्हे कारोवार की हर तरह की सहूलियत दी जायगी। फिर कोई लौटना न चाहे तो उन्हे अपनी जायदाद बदलने या फरोख्त करने का पूरा हक है।

पत्रकार · परन्तु लाहौर के सिविल एन्ड मिलिटरी गजट मे एक रिपोर्ट छपी है कि गैरमुस्लिम व्यापारी और दुकानदार, जो दगो के दिनो मे भाग गये थे, धीरे धीरे महीनो का वद पडा अपना कारोवार चलाने की आशा मे वापस आ रहे हैं। मगर उनकी दूकानें वगैरह वापस करने से पहले उनसे ऐसी नामुमकिन शर्तो पर दस्तखत कराये जाते है कि कई निराश होकर वापस लौट गये है।

वापू मैं समझता हूँ कि हमे शातिमिशन की वात को विश्वसनीय मानना चाहिए। वे लोग दोनो के भरोसे पर काम कर रहे हैं। उन्हे हम क्यो न मौका दें ? एक ओर कुछ बुरा होता है तो दूसरी ओर भी उसका असर पडता है। यदि किसी के प्रयत्न से कोई अच्छा काम होने लगे तो उसका असर भी दोनो देशो के वातावरण पर पडेगा।

पत्रकार : हिन्दुस्तान के दो टुकडे हो जाने पर भी आप अपने आपको एक हिन्दुस्तान का नागरिक कैसे कहते हैं ? आज तो जो एक हिस्से का है वह दूसरे का नही हो सकता।

वापू : कानून के पडित कुछ भी कहे, वे लोगो के मन पर राज नही कर सकते। जो आदमी मशीन नही वन गया है, उसे कानूनन हमारी क्या हस्ती है, इसकी चिंता ही क्या ?

पत्रकार : आज आपने इतना अधिक समय देकर मुझे कृतज्ञता

के बोझ मे लाद दिया है।

बापू गाली कृतज्ञता नही। हमारा मेहनताना आप शरणार्थियो के लिए सहायता देकर चुका देंगे, तो मैं अपना श्रम सार्थक समझूँगा।

(पत्रकार प्रसन्नतापूर्वक फड मे दान करता है और हँसता हुआ विदा लेकर जाता है।)

परदा बदलता है

दृश्य पाँचवाँ

बिडला भवन का अहाता प्रार्थना-सभा

दिसम्बर १९४७ के तीसरे सप्ताह का सायकाल

(प्रार्थना के उपरान्त बापू का प्रवचन होता है। सभा मे आज राजेन्द्रप्रसाद आदि कई लोग मौजूद हैं।)

बापू . हमारे कांग्रेस के अध्यक्ष राजेन्द्रबाबू ने एक कान्फ्रेंस की अध्यक्षता की थी। यह कान्फ्रेंस मीरा बहन ने बुलाई थी। उसमे मिश्रखाद बनाने के तरीको पर विचार किया गया। मीरा ने हरिद्वार के पास एक आश्रम बनाया हैं, पशुलोक। उन्हे मनुष्यो से प्रेम है वैसा ही पशुओ से। सर दातारसिंह भी इस कान्फ्रेंस मे शामिल थे। वे सब इस नतीजे पर पहुँचे कि कचरे, मल और गोबर के मिश्रण से कीमती खाद बनाई जा सकती है। उमसे करोड़ो रुपये बच सकते

हैं। पैदावार भी दूनी चौगुनी बढ सकती है।

राजेन्द्रप्रसाद : हमने कान्फ्रेंस मे बापू के अनुभवो का भी पूरा लाभ उठाया।

(हास्य)

बापू . गोबर, कचरे और मल मे सुगन्धित खाद का मिलना एक सुनहरी चीज है। वह एक ग्रामोद्योग है। चरखा भी एक ग्रामोद्योग है। उसमे करोडो आदमियो का श्रम लग सकता है। वह एक मध्यवर्ती सूर्य है। दूसरे ग्रामोद्योग उसके आसपास घूमनेवाले ग्रह हैं। सूर्य न चले तो ग्रह नही चल सकते।

एक भाई : पर हमने आजादी के बाद राष्ट्रध्वज पर से चरखे को हटा कर अशोकचक्र रख दिया है।

बापू ध्वज पर से उसे भले ही हटा दो पर जीवन मे उसे उतार लोगे तो देश की समृद्धि का अत नही होगा। हमारे घरो की चक्की का चक्का भी घूमता रहना चाहिए। वह बद हो गया तब से अच्छा आटा नसीब नही होता। श्रम और पूजी का बुनियादी सवाल हल करना है तो करोडो लोगो के लिए गृह उद्योग हाथ मे रखने हैं। हमारे पागलपन ने दिल्ली मे मुसलमान कारीगरो को शहर छोड जाने को मजबूर कर दिया है। उससे विषम स्थिति पैदा हो गई है। इसी कारण पानीपत मे कबलो का उद्योग ठप्प हो गया है। ऐसी ही समस्याए पाकिस्तान के सामने पैदा हुई हैं।

वही भाई : तो हमारा क्या कर्तव्य है ?

बापू : हरिजन सेवकसघ, ग्रामोद्योग सघ, गो-सेवा सघ,

तालीमी सघ सब गरीबो की सेवा के लिए है। पचायतराज हिमालय से नही उतरनेवाला है। जनता उसकी नीव है। नीव मजबूत हो तभी उस पर बडा मकान बन सकता है। इन पाँचो सघो का काम करके आपको यह नीव मजबूत करनी है। रचनात्मक कार्य ही जीवन को अनेक बुराइयो से बचा सकता है। जनता के पास जिसे पहुँचना है उसे इधर आना चाहिए।

वही भाई . रचनात्मक कार्य को सत्ता प्राप्ति की राजनीति से ऊपर रखने की लोगो मे बुद्धि कहाँ है ?

बापू ' रचनात्मक कार्यकर्ता के लिए सत्ता प्राप्ति की राजनीति मे पडना उसका सर्वनाश है। उसे तो उससे दूर रहना ही चाहिए। उसका त्याग व्यर्थ नही जाता है। उसे बिना मागे जो सत्ता मिलती है वह बहुत बडी और वास्तविक सत्ता होती है। इस सभा मे मेरे मत्री प्यारेलाल जी उपस्थित है। वे नोआखाली मे इस समय बडा काम कर रहे है। आप जानते है वहा काम करना कितना कठिन है। इन लोगो के रहने से वहाँ के हिन्दुओ को एक बडा सहारा है। इतने दिन मे वहा के मुसलमान भी समझ गये हैं कि ये भले लोग है और मेल कराने आये हैं। एक जगह मदिर को गिरा दिया गया था। बाद मे हिन्दुओ के वहा रहने की बात हुई तो कहा गया मदिर को ढाकर हिन्दुओ को रहने के लिए कहना कैसा ? मुसलमान समझ गये। फिर से मदिर बनाना तय हुआ पर कौन बनाये, तब प्यारेलाल जी ने मुसलमानो को बताया—गुनाह आपने किया है प्रायश्चित भी आप ही करें। उन्होने माना और मदिर बनवाया। हिन्दुओ से कहा, अब

इसमे आराम मे पूजा करो। मन्दिर मे देवता की प्राण-प्रतिष्ठा की गई और पूजा आरभ हुई।—कार्यकर्त्ता की सत्ता का प्रभाव यह है। अगर सब जगह ऐसा हो तो सारे हिन्दुस्तान की तस्वीर बदल जाय। हृदय-परिवर्तन का यही रूप देखने के लिए मै जीवित हूँ।

(बापू बोलना बद कर देते हैं और इसी समय मौन व्रत ले लेते हैं।)

परदा बदलता है

दृश्य छठा

बापू का निवास, बिड़ला भवन

दिसम्बर '४७ का चौथा सप्ताह

(कुछ सिक्ख भाई उलाहना लेकर आये थे कि गुरुग्रन्थ साहब बापू ने पढा नहीं है। गुरु गोविन्दसिंह के बारे मे वे विशेष समझते नहीं हैं फिर भी सिक्खो के कामों की आलोचना करते हैं। थोडी देर बातचीत के बाद उन्हें बापू ने अपनी वाणी से मुग्ध कर दिया। शिकायत उनके पास ही रह गई। वे बापू के प्रशसक बनकर गये तो बापू ने प्यारेलाल को बुलाया और बडे दिन के उपलक्ष्य मे ईसाइयों के लिए इस तरह बोलकर बधाई-सदेश लिखाया।)

बापू : बडे दिन के पवित्र मौके पर मैं सारे ईसाई भाइयो को बधाई देता हू और आशा करता हू कि वे अपने जीवन मे महात्मा

ईसा के उपदेशो को उतारेगे। मै नही चाहता कि कोई हिन्दू, मुसलमान या सिक्ख यह चाहे कि हिन्दुस्तान के थोडे से ईसाई बरबाद हो जाय या अपना धर्म बदल डाले। 'धर्मपरिवर्तन' शब्द मेरे कोश मे नही है। मै चाहता हू हर ईसाई अच्छा ईसाई बने। हर हिन्दू अच्छा हिन्दू बने। उसी तरह एक मुसलमान अच्छा मुसलमान और सिक्ख अच्छा सिक्ख बने। कोई बुरा हिन्दू मुसलमान बने तो वह अच्छा मुसलमान नही बन सकता। मैने सुना है कि अब ईसाई धर्म के लिए राज या बाहर से पैसो की मदद नही मिलनेवाली है अत देश के पचहत्तर फीसदी गिरजे बद हो जायेगे। ईसाई गरीब है। उनके पास पैसे नही हैं। मगर पैसे से धर्म नही चलता। ईसाइयो को खुश होना चाहिए कि पैसे की बला उनसे दूर हुई। भगवान तो हमारे पास ही है। उसे हम पहचाने। सबसे बडा गिरजाघर ऊपर आसमान और नीचे धरती माता है।

(लिख चुकने पर बापू सदेश पर हस्ताक्षर करते हैं।)

प्यारेलाल जम्मू की घटना पर हम क्या कहे ?

बापू अपना गुनाह हर एक को कबूल कर लेना चाहिए। जम्मू मे सिक्खो और हिन्दुओ ने काफी मुसलमानो को हलाक किया। काफी लडकिया उडाई। शेख अब्दुल्ला ने काफी प्रयत्न करके, समझा बुझाकर उन्हे रोका। इस सब की जिम्मेदारी महाराजा पर आती है। इससे इनकार नही किया जा सकता।

प्यारेलाल : पाकिस्तान के एक पत्र ने काश्मीर की लडाई को जिहाद कहा है। उसने खुल्लमखुल्ला लोगो को काश्मीर पर हमला

करने के लिए फौज मे भरती होने का आह्वान किया है।

बापू अब तो इसमे कोई शक नही रहा कि काश्मीर पर पाकिस्तान की चढाई है। हिन्दुस्तान की सेना वहा गई है पर चढाई करने के लिए नही। उसे तो महाराजा और शेख अब्दुल्ला ने वहाँ रक्षा के लिए बुलाया है। वैसे भी कोई यह नही मानता था कि अफरीदी कबायली बिना पाकिस्तान की सलाह के हमला करने आये हैं।

(गुरादित्ता आता है और बापू को प्रणाम करता है।)

गुरादित्ता इस तरह की शरारत से काम बहुत बिगडता है।

(एक मेगजीन बापू के आगे रखता है)

बापू : क्या बात है ?

गुरादित्ता हिन्द के मुसलमान जब ऐसी नादानी की बातें लिखते हैं तब लोगो का खून खौल उठता है। यह एक शेर है जिसका मतलब है कि 'आज तो सबकी जबान पर सोमनाथ है। जूनागढ का बदला लेने के लिए गजनी से किसी नए गजनवी को आना होगा।'

बापू · शर्म की बात है। लोगो मे विचार, वाणी और कर्म का मेल नही है। इस तरह छोटी छोटी बातो से वे कितना बडा नुकसान करते है।

गुरादित्ता · एक भाई अभी चरचा चला रहे थे कि सिन्ध और बहावलपुर मे हिन्दू और सिक्खो पर जैसी बीत रही है उसे देखते हुए पजाब मे या पाकिस्तान के दूसरे हिस्सो मे लोग जाकर क्योकर बस सकते है ?

बापू मैं तो बराबर कह रहा हू कि अभी वह वक्त नही आया है कि कोई हिन्दू और सिक्ख लौटकर पाकिस्तान जाय। जब वक्त आयेगा तब मैं कहूगा। अभी तो रोज ऐसे समाचार ही आ रहे हैं जिनमे वह दिन बहुत दूर समझ पडता है। फिर भी मैं तो इसी पर जमा हू कि एक दिन हिन्दुस्तान और पाकिस्तान मे फिर दिली समझौता होगा और यह कलक का धब्बा मिटकर रहेगा। यह हो सकता है कि मै उस सुनहले दिन को देखने के लिए जिन्दा न रहूँ।

(गुरादित्ता कुछ बातें बहुत धीरे धीरे सुनाकर बापू से विदा लेता है। जाते समय बड़ी श्रद्धा से उनके चरणों का स्पर्श करता है।)

प्यारेलाल : (चुपचाप उसे जाते हुए देखते रहते हैं।)

बापू : इस सिक्ख युवक मे आश्चर्यजनक परिवर्तन हुआ है। दिन रात अथक सेवा कर रहा है। हिन्दू मुसलमान सिक्ख सब इसे पहचान गये है। कुछ ही दिन पहले यह भयकर क्रोध मे जल रहा था। प्रार्थना-सभा मे बडी उद्दण्डता से पेश आता था। (हँसकर) तुम कहोगे यह बापू की करामात है पर मैं कहूँगा ईश्वर का प्रसाद है।

(प्यारेलाल हँस देते हैं। बापू भी हँसते हैं।)

परदा बदलता है

दृश्य सातवा

बिडला भवन, बापू का कमरा

जनवरी १९४८ के प्रथम सप्ताह का एक दिन

(बापू अभी अभी टहलकर आये हैं और गर्म पानी के साथ दो चम्मच शहद लेकर बैठे हैं। मीरा के नाम आधे लिखे हुए पत्र को ज्यों ही पूरा करने का उपक्रम करते हैं तभी गुरादित्ता आकर हाथ पैरो मे लगाकर अभिवादन करता है।)

बापू : काम कैसा चल रहा है ?

गुरादित्ता . स्थिति खराब है। लोग मुस्लिम-घरो मे जबरदस्ती कब्जा कर रहे है। पुलिस भीड को हटाने के लिए अश्रुगैस छोड रही है, फिर भी कुछ नही हो रहा।

बापू · मुसीबत है। कडाके की सर्दी मे खुले मे सोना बडा कठिन है।

गुरादित्ता . खेमे कहा तक काम दें ? ऊपर से पानी गिरता है तब उनमे बचाव नही हो पाता।

बापू : अगर शरणार्थी मुस्लिम घरो को अपना लक्ष्य न बनायें तो मैं उनके मकान के लिए शोर मचाने को समझ सकता हूँ। वे यहा आकर मुझे बिडला-भवन खाली करने को कहे, वह भी समझ सकता हूँ। यह खुली और सीधी बात होगी, हालाकि भले आदमियो को शोभा देने लायक नही होगी। आज मुसलमानो को जिस तरह

दबाया और उनके घरो से निकाला जा रहा है, वह बेईमानी और असभ्यता का काम है।

गुरादित्ता सरकार ने दूसरी जगह शरणार्थियो के लिए कुछ मकानो का प्रबंध भी किया है, लेकिन वे नही मानते।

बापू · क्या कहते हैं ?

गुरादित्ता उनकी यही जिद है कि मुसलमानो के घरो पर कब्जा करेगे।

बापू · (दुखित होकर) इससे जाहिर होता है कि वे अपनी जरूरत के कारण मुसलमानो के घरो पर कब्जा नही करते, बल्कि वे चाहते हैं कि दिल्ली से उनका सफाया कर दिया जाय।

गुरादित्ता . बिल्कुल यही बात है। हमारा दल काम कर रहा है पर उसकी अपील सुनी नही जाती। खारी बावला मे अभी उस दिन स्त्रियो और बच्चो को आगे करके शरणार्थी मुस्लिम घरो मे घुस गये और मकान-मालिको को घर खाली करने के लिए बाध्य करने लगे। बडा हल्लागुल्ला मचा। आखिर पुलिस ने अश्रुगैस से काम लेकर स्थिति को काबू किया।

बापू अगर लोग यही चाहते हो तो मुसलमानो को टेढे तरीके से भगाने के बजाय उनसे ऐसा साफ साफ कह देना ज्यादा अच्छा होगा। लेकिन हिन्दुस्तान की राजधानी मे यह काम करने का नतीजा उन्हे समझ लेना चाहिए।

गुरादित्ता : वे पागल हो गये हैं। अंजाम की वे चिंता नही करते सिर्फ बदले की बात सोचते हैं।

(कुछ हिन्दू-सिक्ख शरणार्थियों का आना)

एक शरणार्थी . हम हिन्दुओ और सिक्खो की ओर से आये है।

बापू : हा, बोलो।

शरणार्थी सिंध मे हिन्दू और सिक्ख आज नही रह सकते। कराची के गुरुद्वारे मे, उन लोगो ने ठहर पाने के लिए, शरण ली थी, उस पर सुनते है हमला हुआ है। हिन्दू और सिक्खो को बेरहमी से काट डाला गया है। वहा की हुकूमत कहती है कि वह लाचार है। वह लोगो को रोक नही सकती।

बापू जिस हुकूमतवाले ऐसा कहते है उन्हे हुकूमत छोड देनी चाहिए। वे लोगो की रक्षा नही कर सकते तो उन्हे राज करने का कोई हक नही है।

शरणार्थी इतना कहने से काम नही चल सकता।

बापू : इससे ज्यादा मैं क्या कर सकता हूँ ? हुकूमत मेरे हाथ मे नही है।

शरणार्थी आप हममे दिलचस्पी नही लेते।

बापू · तो मैं यहा किसलिए पडा हू ? मगर आज मेरी दीन दशा है। मेरी आज कौन सुनता है ? कभी मैं अहिंसक सेना का सेनापति था। आज मेरा जगल मे रोना समझो। मगर धर्मराज ने कहा था कि अकेले हो तो भी जो ठीक समझो वही करो। वही मैं कर रहा हू।

शरणार्थी · आप कुछ नही कर सकते ?

बापू : मैं कहूँ उसी तरह सब चले तो आज हिन्दुस्तान या पाकिस्तान मे जो हुआ या हो रहा है, वह नही हो सकता था ।

शरणार्थी : तो हम लोग, जो सब कुछ खोकर आये है, क्या रहने, खाने और पहनने की बात भी न करें ?

बापू : क्यो न करे । आपने गुनाह क्या किया है ? मैं तो कहता हू कि मुझे जो मिलता है वह हमारे भाइयो को न मिले, यह इन्साफ नही । लेकिन उनसे भी कहूँगा कि जो मिल जाय उस पर सतोष मानें और जो काम मिले उसे करे । घासफूस की झोपडी भी मिले तो उसमे आनद से रहे । अगर हम ऐसे चले, तो ऊँचे उठेगे । मजदूर लिखना पढ़ना नही कर सकता परन्तु लिखा पढा मजदूरी तो कर सकता है ।

शरणार्थी : जब तक यहा से मुसलमानो को नही निकालेगे तब तक पाकिस्तान से आये हिन्दू और सिक्खो के लिए रहने-बसने की ऐसी ही तगी बनी रहेगी । लाखो की तादाद मे नये मकान तो उनके लिए बन नही सकते ।

बापू : हमे दुनिया की नकल नही करनी है । मेरी जबान से ऐसी बात कभी नही निकलनेवाली है । हिन्दू-सिक्ख बडी सख्या मे उखडकर इधर आये है तो मुसलमान भी बडी सख्या मे इधर से गये हैं ।

(जवाहरलाल नेहरू का आना)

शरणार्थी : खुश किस्मती देखो, प्रधान मत्री जी भी यही आ गये ।

बापू : (जवाहरलाल को पास बिठाकर शरणार्थियों से)

उम्मीद है कुछ न कुछ जरूर हो जायगा। पूरा हो जायगा यह नही कह सकता। एक किस्म की लड़ाई जैसी हालत है। उसमे से रास्ता निकालना और सब लोगो को जगह जगह से हटाकर लाना बड़ा कठिन है। जितना हो सके उतना करेंगे। फिर भी कोई न बचाया जा सका या न लाया जा सका तो क्या किया जायगा ? सिन्ध, बहावलपुर, मीरपुर सब जगह का सवाल है।

जवाहरलाल : खाली एकतरफा सवाल होता तो जल्दी हल हो जाता, फिर वह चाहे जिस तरह होता। दिक्कत तो यह है कि बुरे कामो की होड इधर भी लगी है। लोग यह बात नही समझते कि अपना दामन साफ रक्खे तो सामनेवाले को रोक सकते हैं। काश्मीर को ही ले लो, अगर जम्मू-काड न होता तो हमलावरो को यह कहने का मौका नही मिलता कि हिन्दू शासन के नीचे मुस्लिम जनता का विनाश हो रहा है। हम मुसलमानो के उद्धार के लिए कार्रवाई कर रहे हैं।

बापू : (जवाहरलाल से) क्या रियासतो से आनेवालो को सरकारी नौकरी मे नही लिया जाता है ?

जवाहरलाल : मुझे पता नही है, लेकिन ऐसा नही होना चाहिए।

बापू : ये लोग कहते हैं कि होता है।

जवाहरलाल : मैं देखूंगा। शायद कुछ गैर-समझी हुई होगी।

(सब दोनो नेताओं को प्रणाम करके जाते हैं। गुरुदित्ता भी जाता है)

बापू : कराची में, अखबारों में जैसा आया है, उससे बहुत अधिक हुआ कहा जाता है।

जवाहरलाल : पाकिस्तान की हुकूमत इतना बेरुखा बरताव कर रही है कि शक होता है हर बुरे काम के लिए उसकी सीधी जिम्मेदारी है।

बापू . भगवान् उसे सन्मति दे। वह अपने दायित्व को समझे।

जवाहरलाल . (हँसकर) वह भगवान् की बात कहा सुनती है ? उसे तो सिर्फ लडाई के नगाडे और जिहाद के नारे ही सुन पडते हैं।

(दोनों बहुत गंभीरता से इसी तरह की बातों मे खो जाते हैं।)

परदा बदलता है

दृश्य आठवा

बिड़ला भवन, बापू का कमरा
१२ जनवरी '४८, रात्रि का दूसरा पहर

(बापू एकाकी बैठे, विचार-लीन। उनके चेहरे पर किसी गंभीर निर्णय की छाया। रात्रि की निस्तब्धता मे आकाश, दिशाऐं और वायु सभी इस दृश्य के मौन दर्शक। मनु और आभा थोड़ी

थोड़ी देर बाद दूर से ही बापू को आकर देख जाती। वे पास आकर आज उनसे कुछ कहने का साहस नहीं कर पा रही हैं।)

बापू : दिल्ली में पैर रखते ही वल्लभभाई ने खबर दी थी कि राजधानी झगड़े की आग में जल उठी है। उसी समय अचानक मेरे मुँह से निकला था, 'तो मुझे अब दिल्ली में ही करना या मरना होगा'। पंजाब कहीं रह गया। दिल्ली ही मेरे लिए सब कुछ हो गई। लेकिन मेरा वचन सच नहीं हुआ। मैं न कर पाया, न मर पाया। फौज और पुलिस के कारण आज दिल्ली शांत है। भीतर ज्वालामुखी उबल रहा है। डरे और सहमे हुए मुसलमान आकर मुझसे पूछते हैं कि अब क्या करें ? मैं लाचार जवाब नहीं दे पाता हूँ। पिछले कई दिन से मेरे भीतर संघर्ष चल रहा था। आज आखिरी निर्णय बिजली की तरह मेरे सामने चमक गया। कोई भी इन्सान, जो पवित्र है, अपनी जान से ज्यादा कीमती चीज कुरबान नहीं कर सकता। मैं प्रार्थना करता हूँ भगवान् से कि मुझमें उपवास करने लायक पवित्रता हो। दोनों कौमों के दिल मिलने का विश्वास हो जाने पर ही यह उपवास छूट सकता है। मनु, मनु, आभा !

(दोनों लड़कियाँ एक दूसरी के पीछे हड़बड़ाई कमरे में आती हैं।)

मनु : बापू !

आभा : बापू !

बापू : प्यारेलाल को भेजो बेटी, मेरा वक्तव्य लिखना है।

(मनु प्यारेलाल को बुलाकर लाती है। आभा बैठ कर बापू के पैरों पर हाथ फेरती है। मनु बापू का सिर सहलाने लगती है।)

प्यारेलाल : वक्तव्य ! (स्वर कप)

बापू : हा, दिल्ली के नागरिको के लिए, हिन्दू-सिक्ख-मुसल-मानो के लिए, दोनो सल्तनतो के लिए और सारी दुनिया के अवाम के लिए। कल प्रात.काल पहले भोजन के बाद मेरा उपवास शुरु होगा। नमक सोडा और खट्टे नीबू के साथ या इनके बिना पानी पीने की छूट रहेगी। उपवास अनिश्चित काल के लिए है। दोनो कौमो के दिल मिलने का विश्वास ही उसे छुडा सकेगा। दिल्ली की निश्छल शाति उसका दर्पण होगी। यह मेरी अन्तरात्मा की आवाज है और इसे रद नही किया जा सकता। मेरी प्रार्थना है कि इस बारे मे मुझसे दलील न की जाय और जिस निर्णय को बदला नही जा सकता, उसमे मेरा साथ दिया जाय। उपवास किसी पर दबाव नही है। मैं उपवास करता हू क्योकि मुझे करना ही चाहिए। मुझे उप-वास की, इसी विश्वास ने, प्रेरणा दी है कि हिन्दू, सिक्ख और इस्लाम धर्मों का नाश होते देखने की बनिस्बत मृत्यु मेरे लिए सुन्दर रिहाई होगी। लोग उपवास की खबर सुनकर मेरे पास दौडे न आवें। सब अपने आसपास का वातावरण सुधारने का प्रयत्न करें, तो बस है।

(इसके बाद शाति छा जाती है। कोई कुछ बोलता नहीं।)

परदा बदलता है

दृश्य नवां

बिड़ला भवन का अहाता . प्रार्थना-सभा

तेरह जनवरी १९४८ का सायकाल

(बापू की इच्छा से आज प्रार्थना मे गुरुदेव का बगला गीत गाया जाता है। गीत का भाव आज के वातावरण के बिल्कुल अनुरूप है। आज की प्रार्थना मे हिन्दू मुसलमान सिक्ख सभी हैं।)

प्रार्थना गीत

जदि तोर डाक शुने केओना आसे
तबे एकला चलो रे !
एकला चलो, एकला चलो,
एकला चलो रे !

जदि केओ कथा ना कय,
ओरे ओरे ओ अभागा,
केओ कथा ना कय,
जदि सबाई थाके मुख फिराये
सबाई करे भय;
तबे पराण खुले,
ओ तुइ मुख-फुटे तोर मनेर क्था
एकला चलो रे !

जदि सबाई फिरे जाय,

ओरे ओरे ओ अभागा,

सबाई फिरे जाय,

जदि गहन पथे जाबार काले

केओ फिरे ना चाय,

तबे पथेर-काटा,

ओ तुइ रक्त-माखा चरण तले

एकला दलो रे !

जदि आलो ना धरे,

ओरे ओरे ओ अभागा,

आलो ना धरे,

जदि झड बादले आंधार राते

दुआर देय धरे,

तबे वज्र नले,

आपन बुकेर पाँजर जालिये निये,

एकला जलो रे ! जदि०

बापू मेरा उपवास दरअसल आत्मशुद्धि के लिए है। सबको शुद्ध होना है। सब शुद्ध नही होते तो बेकार है। मुसलमानो को भी शुद्ध होना है। ऐसा नही कि हिन्दू सिक्ख ही शुद्ध हो जाये और मुसलमान नही। मुसलमान शुद्ध और सच्चे नही बनेगे तो मामला बिगडेगा। यहा के मुसलमान भी बेगुनाह नही है। सबको अपना

गुनाह कबूल करना चाहिए। इस उपवास की ज्यादा जिम्मेदारी मुसलमानो पर है। उन्हें देश के प्रति वफादार और हिन्दू सिक्खो के साथ एक-दिल होना चाहिए। यह सब मुह से कहना काफी नही। उन्हे अपने कामो से ऐसा साबित करना है। और हिन्दू सिक्ख अगर सच्चे नही है, उनमे इतनी बहादुरी नही है कि इतने थोडे से मुसलमानो को हिफाजत मे रख सके, तो भी यह उपवास नही टूटेगा। इसका मतलब होगा कि वे नही चाहते कि अधिक जीकर मै देश की और उनकी सेवा करू । तब तो मौत ही इस उपवास को छुडायेगी।

(सभा मे एकदम शाति छा जाती है। लोगों के हृदय भरे हुए होने से हल्लागुल्ला नहीं होता)

परदा बदलता है

दृश्य दसवा

बिडला भवन, बापू का कमरा

१८ जनवरी १९४८, प्रात काल

(कल तक बापू को बहुत बेचैनी थी। मतलिया आती थीं। आज उनका जी शान्त है। प्रात काल उन्होने धीरेधीरे मालिश कराई। उनके पास नेहरू और आजाद गमगीन बैठे हैं। दोनो की आंखें डबडबाई हुई हैं। देवदास, मनु, आभा, सुशीला, प्यारेलाल व

ब्रजकिशन सब मौजूद हैं। बापू नेहरू और आजाद की ओर देखते हैं और डूबी हुई आवाज मे कहते हैं।)

बापू ' मेरे मित्र काफी दुखी है। डॉक्टर चिन्तित हैं। मेरे गुरदे ठीक से काम नही करते। लेकिन मैंने तो यह सब खतरा उठा-कर उपवास आरभ किया है। इसमे ईश्वर ही मेरा हकीम है। मैंने उसी के हाथो मे अपने को सौंप दिया है। वह चाहेगा तो उपवास टूटेगा। वह सबके दिलो को साफ कर देगा। लोग समझेंगे कि उनका रास्ता गलत था। वे सोच समझ कर शैतान की तरफ से मुँह फेर लेंगे और ईश्वर की तरफ चल पडेंगे। परन्तु सवाल यह है क्या ऐसा होगा ? मेरे प्राण बचाने की खातिर ऐसा दिखाया न जाय। उस तरह उपवास छुडाना तो पाप होगा।

(राजेन्द्रप्रसाद का आना। उनके चेहरे पर सफलता के चिह्न हैं।)

राजेन्द्रप्रसाद . मै सुखद समाचार लेकर आया हू।

बापू . 'सुखद समाचार' मैं आज इन शब्दो मे बहल नही सकता। उपवास खुलवाने के लिए दो दिन की शाति और फिर वही जोर-जुल्म।

राजेन्द्रप्रसाद ' बापू, आप सदा मुझ पर विश्वास रखते हैं। आज भी उसी तरह विश्वास रख सकते है।

बापू : इस बार मे निश्चित प्रमाण चाहता हूँ। क्या दिल्ली मैं आज अमन है ?

राजेन्द्रप्रसाद : पूरी तरह अमन है।

बापू : मुसलमान जहा जी चाहे बेखटके घूम फिर सकते है ?

राजेन्द्रप्रसाद : आप आज्ञा दीजिये कि मैं दिल्ली के नागरिको के प्रतिनिधियो को यहा बुलाऊँ। सब वर्ग, पेशे, जाति और धर्म के नुमायन्दे मौजूद है यहा तक कि पुलिस के भी। वे सब आपके सामने शपथपूर्वक स्वीकार करेंगे। जिस प्रतिज्ञापत्र पर सबने हस्ताक्षर किये हैं, वह यह रहा।

(प्रतिज्ञा पत्र दिखाते हैं)

बापू : उन्हे बुला लो। उनके आ जाने पर ही प्रतिज्ञापत्र सुनूंगा और मुझे लगा कि उपवास तोडा जा सकता है तो बिना हिचक के मैं वैसा करूँगा।

(प्रतिनिधियों को बुलाया जाता है। वे आते हैं। लगभग एक सौ प्रतिनिधि। हिन्दू, सिक्ख, मुसलमान, ईसाई, यहूदी, हिन्दू-महासभाई, राष्ट्रीय स्वयसेवक सघवाले, पुलिस के मुख्याधिकारी आदि। सब बापू को वदना करते हैं। उसी समय पाकिस्तान के हाई कमिश्नर श्री जाहिद हुसैन भी आते हैं।)

राजेन्द्रप्रसाद : बापू, हम सबने अपनी सम्मिलित राय से यह प्रतिज्ञापत्र बनाया है और उस पर सही की है। इस प्रतिज्ञापत्र मे वचन है और उसे पूरा करने का कार्यक्रम भी।

बापू : सुनाओ।

राजेन्द्रप्रसाद : (पढ़ते हैं) 'हम वचनबद्ध है कि मुसलमानो के जान, माल व ईमान की रक्षा करेंगे और दिल्ली मे जो घटनाएँ हुई हैं, वे फिर नही होगी।

बापू : ठीक है।

राजेन्द्रप्रसाद : (आगे पढते है) 'मुसलमानो की छोडी हुई मस्जिदे, जिन पर हिन्दुओ और सिक्खो ने कब्जा कर लिया है, वापस लौटा दी जायगी।

बापू : ठीक है।

राजेन्द्रप्रसाद : (आगे पढते है) 'भागे हुए मुसलमान वापस आ सकते है और पहले की तरह अपना कारोबार चला सकते है।

बापू : ठीक है।

राजेन्द्रप्रसाद : (आगे पढते है) 'ये सब हम अपने निजी प्रयत्नो से करेगे, पुलिस या फौज की मदद से नही।'

बापू : ठीक है।

राजेन्द्रप्रसाद : अब हम सबकी प्रार्थना है कि आप उपवास समाप्त करे।

बापू : (सबको संबोधन करके) आपके शब्दो ने मुझ पर असर डाला है। परन्तु यदि आप लोग अपने को सिर्फ दिल्ली तक की साम्प्रदायिक शांति के लिए जिम्मेदार मानते हो तो आपके आश्वासन का कोई मूल्य नही, और मै तथा आप एक दिन अनुभव करेगे कि उपवास तोडकर मैंने भूल की। हिन्दू महासभा तथा राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के प्रतिनिधि यहा मौजूद है। यदि ये लोग अपने वचनो के प्रति ईमानदार है तो दिल्ली के अलावा अन्य स्थानो पर होनेवाले पागलपन से उदासीन नही रह सकते। दिल्ली भारत का हृदय है और आप दिल्ली के प्रवक्ता है। यदि आप सारे भारत को यह अनुभव

नहीं करा सकते कि हिन्दू, सिख और मुसलमान सब भाई भाई हैं तो भारत और पाकिस्तान दोनों के भविष्य की ग्रगुन घड़ी आनेवाली है।

(आवेग से बापू रो पड़ते हैं। आंसू उनके गालों पर बहने लगते हैं। दर्शकों की आखें भी गीली हो जाती हैं।)

बापू : (दुबारा बोलने का यत्न करते हैं पर शब्द बहुत धीरे धीरे निकलते हैं) आप लोग मुझे धोखा तो नहीं दे रहे ? आप सिर्फ मेरी जान बचाने की कोशिश तो नहीं कर रहे ?

मौलाना आजाद : नहीं बापू ! मुसलमानों की तरफ से मैं विश्वास दिलाता हूँ।

गणेशदत्त गोस्वामी : हिन्दू महासभा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ओर से मैं विश्वास दिलाता हूँ।

(बापू कुछ देर के लिए विचार-मग्न हो जाते हैं)

बापू : (आखें खोलकर) मैं आप पर विश्वास करता हूं और अपना उपवास तोड़ने को तैयार हूँ। ईश्वर की यही मरजी दिखाई देती है।

(सब धर्म-ग्रन्थों का पाठ आरंभ हो जाता है। सब प्रार्थना मे भाग लेते हैं। अन्त मे गणेशदत्त गोस्वामी वेद मंत्र बोलते हैं)

वेद मंत्र

असतो मा सद्गमय

तमसो मा ज्योतिर्गमय

मृत्योर्मा अमृतंगमय

(मौलाना आजाद नारंगी के रस का गिलास लाकर बापू के हाथ मे देते हैं। बापू धीरे धीरे रस पीते हैं। वातावरण एकदम हर्षमय हो उठता है।)

जवाहरलाल · (विनोदपूर्वक बापू से) देखिये, मैं भी उपवास कर रहा हू और अब मुझे समय मे पहले अपना उपवास तोडना पडेगा।

बापू : (हँसकर) तुम भारत के जवाहर जो हो।

(उनकी आखों में आसू भर आते हैं। सब दर्शक मुग्ध मन हर्ष के आसुओं से नहा जाते हैं।)

परदा बदलता है

दृश्य ग्यारहवाँ

महरौली की दरगाह, उर्स का मेला

२७ जनवरी १९४८, दिन का प्रथम पहर

(दरगाह शरीफ मे उर्स का मेला भरा है। लोगों का खयाल था इस साल मेला नही होगा। बापू के उपवास ने एक दम हवा बदल दी। मेला अच्छी तरह भरा। दरगाह मे लोगों ने तोड-फोड कर दी थी, वह भी यथाशक्य ठीक कर दी गई है। हिन्दू मुसलमान दोनों जातियों के लोग मेले मे आरहे हैं या नहीं यह देखने के लिए बापू भी अपने साथियो के साथ मेले मे पहुचते हैं। दरगाह के इमाम बापू को

सब जगह घुमाकर दिखाने के बाद उस जगह ले आते हैं जहां उनके दर्शन के लिए हुजूम इकट्ठा है।)

बापू : (मच पर चढ़कर सबको दर्शन देते हुए) दरगाह शरीफ के दर्शन किये। एक बड़े औलिया चिश्ती की कब्र पर यह बनाई गई है। बहुत पुरानी और पवित्र दरगाह है। हिन्दू और मुसलमान सदियो से यहा आते और मिन्नत लेते रहे हैं। अजमेर शरीफ के बाद इसी दरगाह का नबर आता है। यह बहुत पवित्र धर्म का स्थान है। जिन औलिया की याद मे यह दरगाह बनी है वे लोगो के आदर और मान के पात्र महात्मा थे। उनके लिए हिन्दू मुसलमान समान थे। ऊँचे खयाल के जो महापुरुष होते हैं वे अपना धर्म पालन करते हुए किसी धर्म के लिए बुरा भाव नही रखते। ऐसे ही ये औलिया हुए हैं। उनकी यादगार किसी एक जाति की कायम की हुई नही है। उसे जनता ने बनाया है। जनता को ही उसे सुरक्षित रखना है। भिन्न भिन्न धर्मों के जो भी पवित्र स्थान हैं उन सबको बिना भेदभाव के आदरपूर्वक सुरक्षित रखना हर एक का फर्ज है। आप सब लोग जो दूर दूर से यहा आये है इस विचार को अपने साथ ले जायें कि हिन्दुस्तान मे रहनेवाले हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई, पारसी सब भाई-भाई हैं। उनमे किसी तरह का लड़ाई-झगड़ा होना देश की बदकिस्मती है। यह काम आप करेंगे तो उन महापुरुष का ही मिशन पूरा करेंगे जो इस पवित्र स्थान पर अनत निद्रा मे सो रहे हैं।

(इतना कहकर बापू बैठ जाते हैं।)

इमाम साहब : (खड़े होकर) महात्मा गांधी, जो हम सबके

बापू हैं, यहा पधारे है । उन्हे अपने बीच पाकर हम अपने को खुश-किस्मत समझते है। जिस पागलपन के हम सब शिकार थे और यह लगता था कि ये घिरे हुए बादल कभी हटेगे ही नही, वह बापू के ऐतिहासिक उपवास ने देखते देखते उडाकर आसमान साफ कर दिया। वह पागलपन एक दिन मे हवा हो गया । महात्माओ का ऐसा ही प्रभाव होता है। हम सब युग-युग तक बापू के शुक्रगुजार रहेंगे ।

(सब 'महात्मा गाधी की जय' के नारे लगाते हैं । बापू इमाम साहब से विदा लेते हैं ।)

परदा बदलता है

दृश्य बारहवाँ

बिडला भवन का अहाता, प्रार्थना-सभा

३० जनवरी '४८, सायकाल

(नेहरू और पटेल की विचारधाराओं का अन्तर बापू को कई दिन से परेशान कर रहा है पर दोनों की निश्छल देशभक्ति पर उन्हें भरोसा है। नई सरकार को चलाने के लिए वे दोनों की आवश्यकता समझते हैं। इस नाजुक समय पर उनमे से किसी को अलग हो जाने की सलाह वे नहीं दे सकते । उन्हे विश्वास है कि नेहरू को बापू की इच्छा सदा ही मान्य है। वे साथ साथ रहकर काम करने के लिए कहेंगे तो नेहरू इनकार न करेंगे । अतः आज पटेल के आने पर वे

उनसे मंत्रणा मे लग जाते है। उनकी बातचीत देर तक चलती है। पाँच बजकर पाँच मिनट हो जाने पर वे प्राथना-सभा मे जाने के लिए बेचैन हो उठते हैं। वे जल्दी जल्दी सरदार पटेल को विदा करते और मनु बहन तथा आभा गाधी के कधों पर हाथ रखकर लबे लबे डग धरते हुए प्रार्थना-स्थल की ओर चल पडते है। बापू जब इस प्रकार आ रहे होते हैं तभी नाथूराम विनायक गोडसे भीड को चीर-कर आगे बढ़ता दिखाई देता है। बापू के पास पहुँचकर वह भी अन्य लोगों की तरह झुककर उनको प्रणाम करनेवाला है, ऐसा लगता है। मनु बहन उसे हटाना चाहती है पर वह उसके हाथ को झटक देता है। बापू गोडसे व अन्य लोगों के अभिवादन के उत्तर मे मुस्कराते हुए हाथ जोडते और आशीर्वाद देते हैं। गोडसे पिस्तौल का घोडा दबाता है और एक के बाद एक तीन गोलिया छूटती हैं। गोलिया बापू की छाती में लगती हैं। वे 'हे राम !' कहते हुए पृथ्वी पर गिर पड़ते हैं। उनकी जीवनलीला समाप्त हो जाती है। आभा चीखकर धरती पर गिरती और बापू का सिर लेकर अपनी गोद मे रख लेती है। प्रार्थना-सभा, सारी दिल्ली, सारे भारत और तमाम दुनिया में मातम छा जाता है। नेहरू, पटेल, आजाद, राजेन्द्रप्रसाद, देवदास सब रोते बिलखते दौड़े आते हैं और बापू के शव के पास बैठकर प्रार्थना करने लगते हैं। दिल्ली का जनसागर बिडला-भवन की ओर उमड़ पडता है। धीरे धीरे अधेरा सबको ढक लेता है। अखड शाति छा जाती है।' "फिर कुछ क्षणों के बाद हलका हलका प्रकाश सा फैलता दिखाई देता है। हृषीकेश के अपने आश्रम पशुलोक के बरामदे में

मीरा बहन बैठी दिखाई देती हैं। वे मानों पिस्तौल के धड़ाके से चौंक पड़ती और चीखकर बरामदे के बाहर निकल आती हैं। ऑल इंडिया रेडियो पर बापू का निधन-समाचार प्रसारित हो रहा है उसे सुनती और स्तब्ध-सी आकाश की ओर देखती खड़ी रहती हैं। उनके मुंह से केवल इतना निकलता है, 'हाय बापू आखिर यह हुआ!' एक बार फिर चारों ओर शांतिमय अन्धकार घिर आता है। केवल तारे आकाश में मौन साक्षी बने टिमटिमाते रहते हैं।)

धीरे धीरे पटाक्षेप